# अल्लाह के अतिरिक्त से प्रार्थना करना अवैध है
# पचास तर्कों के आलोक में


## लेखक :

शैख माजिद बिन सुलेमान अल रस्सी


जुमादल ऊला 1434 हिज्री

**الترجمة الهندية لكتاب:**

**خمسون دليلا على بطلان دعاء غير الله**

**لفضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله**

# किताब की व्याख्या

किताब : **अल्लाह के अतिरिक्त से प्रार्थना करना अवैध है**

**पचास तर्कों के आलोक में**


लेखक : शैख माजिद बिन सुलेमान अल रस्सी



प्रकाशन : 1442 हिज्री – 2021



ईमेल (अनुवादक) : abdulkareemmadani@gmail.com

मोबाइल (अनुवादक) : 00966569829781

contact : (binhifzurrahman@gmail.com)



الكتاب منشور في موقع صيد الفوائد واسلام هاوس:

https://islamhouse.com/hi/main

http://saaid.net/book/list.php?cat=92



**इस पुस्तक के संपूर्ण अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं।**

## शुरू उस अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालू और अधिक कृपालू है।

## भूमिका

संपूर्ण प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जो अकेला है, और दरूदो सलाम हो उस हस्ती पर जिस के पश्चात कोई संदेष्टा आने वाला नहीं,प्रशंसा और दरूद के बाद :

जिस उद्देश्य के लिये अल्लाह ताला ने इंसानों और जिन्नातों को पैदा किया वह यह है कि वह एक अल्लाह की उपासना (इबादत) करें और उस के साथ किसी को साझी न बनायें,अल्लाह ताला का कथन है :

अनुवाद (तर्जुमा) : मैं ने जिन्नातों और इंसानों को इस लिये पैदा किया है कि मेरी इबादत करें।{ सूरे अल ज़ारियात : 56}

उपासना में वे संपूर्ण बाहर और भीतर के शब्द और कर्म शामिल हैं जो अल्लाह को प्रिय हैं।

" तो नमाज़, ज़कात, रोज़ा, हज, सच बोलना, अमानत को लौटा देना, माता पिता की बात मानना, रिश्तों को जोड़ना, वादा निभाना, भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना, काफिरों इवं कपटाचारियों से जिहाद करना,पड़ोसी, अनाथ, मिस्कीन, मुसाफिर और मातहतों के संग उत्तम व्यवहार करना, पशुओं पर दया करना, दुआ, प्रार्थना ज़िक्रो अज़्कार, कुर्आन की तिलावत आदि कार्य करना यह सब उपासना कहलाते हैं।

इसी प्रकार अल्लाह और रसूल से प्रेम करना,अल्लाह से डरना और उस से तौबा और पश्चाताप करना,संपूर्ण कर्मों का केवल उस के लिये शुद्ध रखना,उस के न्याय पर धैर्य रखना,उस की कृपा पर शुक्र अदा करना,भाग और नियति पर संतुष्ट रहना,उस पर भरोसा करना, उस की दया की कामना करना, उस के अज़ाब से डरना,और इस प्रकार के दूसरे(दिली कर्म भी) अल्लाह की इबादत में शामिल हैं " [1]

इबादत के विरूद्ध यह है कि अल्लाह की इबादत में शिर्क किया जाये,वह इस प्रकार कि किसी को अल्लाह का साझी बनाये,और अल्लाह की तरह उस की इबादत करे,अल्लाह की तरह उस से डरे,और जिस प्रकार अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के लिये इबादत करता है उसी प्रकार उस की निकटता के लिये

---

([1]) फतावा इब्ने तैमिया (10/149–50) मामूली संक्षिप्त के साथ।

भी करे,उदाहरण के तौर पर उसे पुकारे,उस के लिये नमाज़ पढ़े,उस के नाम पर खून बहाये और उस के लिये मन्नत माने आदि।

इस छोटी किताब में जिस विषय पर बहस की गई है वह है : अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ मांगने और अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने के बातिल होने की अक़्ली और नक़्ली दलीलों का बयान।

इस विषय पर विस्तृत चर्चा करने से पहले जान लें कि दुआ एक महान उपासना है,जिसे अल्लाह ने अधिकतर आयतों में खास तौर पर बयान किया है,और नबी ﷺ ने अधिकतर सही हदीसों में इस के मक़ाम को बयान किया है,इस के बावजूद दुआ उन इबादतों में से है जिन में अधिकतर लोग अल्लाह और सृष्टि के बीच साझी बनाते हैं,अधिक अफसोस के साथ कहना पड़ता ह कि बहुत सारे मुसलमान आप को ऐसे मिलेंगे जो अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारते हैं चाहे वह पैगम्बर हों या नेक लोग,कुछ लोग यह पुकारते हैं : ऐ अल्लाह के नबी! मेरी सहायता कीजिये। या यह पुकार लगाते हैं : ऐ अब्दुल क़ादिर जीलानी**!** मैं तुझ से अपने गुनाहों की शिकायत करता हूं ,या यह कहते हैं : ऐ बदवी! (एक पीर का नाम है) मदद कर (ऐ ग़ौस! मेरी फर्याद सुन ले,या यह कि : ऐ मुईनुद्दीन चिश्ती! मुझ पर नज़्रे करम कर) या यह कि : मैं तुझ से रोज़ी में कमी या दुश्मन के ग़ालिब आने या अवलाद की कमी का शिकायत करता हूं , या यह कि : मैं तुझ से फलाने व्यक्ति की शिकायत करता हूं जिस ने मुझ पर जुल्म किया,या यह कि : मैं तेरे दर का ज़ायर हूं ,तेरा मेहमान हूं ,तेरा पड़ोसी हूं ,या यह कि : जो तेरी पनाह में आता है तू उसे अपनी पनाह देता है, या यह कि : तू वह सब से उत्तम पनाह की जगह है जिस की पनाह ली जाये, या यह कि : मुझे अवलाद दे, या जब कोई ठोकर खाये तो यह पुकारे : ऐ मुहम्मद की महिमा! ऐ नफीसा !(ऐ गौस! ऐ मेरे पीरो मुर्शिद! ऐ मेरे मुईनुद्दीन चिश्ती! ऐ ख्वाजा अजमेरी!) या यह कि : ऐ मेरे आक़ा फलाने शैख! और इस प्रकार की दूसरी वह बातें जिन में अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना, उस की ओर आकर्षित होना और उस से तअल्लुक़ रखना शामिल हो, कुछ लोग कागज़ पर (अपनी मुरादें) लिख कर उसे क़ब्रों पर लटका देते हैं या कोई रजिस्टर तय्यार करते हैं जिस में यह लिखते हैं कि उन्होंने फलाने ( पीर और बुज़ुर्ग) की पनाह तलब की,फिर उस रजिस्टर को लेकर किसी बुज़ुर्ग की क़ब्र पर जाते हैं ताकि वे उन की सहायता कर सकें! ऐसा ग़रीब व्यक्ति इस बात को नहीं जानता कि वह इस मुर्दा को पुकारने के कारण अपनी गर्दन से इस्लाम का तौक़ निकाल फेंकता है,हालांकि वह नमाज़ और रोज़े का पबंद ही क्यों न हो और अपने गुमान के एतबार से स्वयं को मुसलमान ही क्यों न समझता हो।

आने वाले पेजों में अल्लाह की तौफीक़ से इस बात की अक़ली और नक़ली दलीलें बयान की गई हैं कि अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करना ग़लत और आधारहीन कार्य है ताकि बुद्धिमान के लिये मददगार और जाहिल के लिये याद दिलाने वाली हो, अल्लाह से दुआ है कि हमें और संपूर्ण मुसलमानों को यह तौफीक़ प्रदान करे कि हम अपने संपूर्ण कार्यों को एक अल्लाह के लिये शुद्ध रखें,हमें और संपूर्ण मुसलमानों को गुमराही से बचाये। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। और अल्लाह की कृपा हो हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पर और आप के खानदान पर और आप के सहाबा पर और अधिकतर दरूदो सलाम नाज़िल हो।


लेखक : माजिद बिन सुलेमान अल रस्सी

दिन मंगलवार समय भोर,23 रबीउस्सानी 1434 हिज्री

मोबाइल : 00966505906761

सऊदिया अरबिया

ूेंपकण्दमज ६ इववा

उंरमकण्ंसतेंप ⁄ हउंपसण्बवउ

# विषय सूची


- भूमिका
- सिद्धांत
- संपूर्ण इबादतों में दुआ का स्थान
- अध्याय : एक अल्लाह को पुकारने का हुक्म और उस के अतिरिक्त हर किसी को पुकारने से मनाही
- अध्याय : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना ग़लत कार्य है,इस पचास तर्क :
- पहली दलील (तर्क) : यह कि अल्लाह ताला ने यह आदेश दिया है कि संपूण उपासनायें केवल एक अल्लाह के लिये शुद्ध रखे जायें,जैसे दुआ आदि, तो जिस ने इस प्रकार कोई भी उपासना अल्लाह के अतिरिक्त के लिये की,चाहे संयुक्त रूप से हो या मुस्तक़िल तौर पर,ता उस ने महान अल्लाह के साथ शिर्क किया।
- दूसरी दलील : कुर्आनों हदीस ने दुआ में इख्लास को क़ायम रखने की विशेष प्रकार से ज़ोर दिया है और इसे अल्लाह के अतिरिक्त के लियें अंजाम देने से रोका है।
- तीसरी दलील : अल्लाह,फरिश्ते और ज्ञानियों ने यह साक्षी दी है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।
- चौथी दलील : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना बड़ा शिर्क है,चाहे उस कस स्रोत और वसीला जो कुछ भी हो।
- पांचवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त की पूजा करना उस प्रकृति (फित्रत) से हटना है जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है,और वह है केवल एक अल्लाह की उपासना करना।
- छटवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त की पूजा करना बिल्कुल उन मुश्रिकों के अमल जैसा है जिन के बीच अल्लाह ने रसूल ﷺ को भेजा।
- सातवीं दलील : यदि अंबिया और नेक लोगों जैसे अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना ठीक होता तो अल्लाह इस का हुक्म अवश्य देता–अल्लाह इस स बरी और परे है– इस के अलावा नबी करीम ﷺ और आप के सहाबा ﷺ भी इस पर अमल पैरा होते।

• आठवीं दलील जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त की पूजा करता और उस से प्रार्थना करता है तो वह उस माबूद को प्रेम और सम्मान में अल्लाह के बराबर ठहराता है।

• नवीं दलील : अल्लाह ताला किसी ऐसे अमल को क़बूल नहीं करता है जिस में दिखावा हो क्योंकि महान और श्रेष्ठ अल्लाह को किसी साझी की आवश्यक्ता नहीं,इस लिये दुआ में शिर्क करना भी एक निरस्त अमल है,क्योंकि दानों का द्वार एक है,और वह है सृष्टि की निकटता प्राप्त करना।

• दस्वीं दलील : अल्लाह ने अपनी किताब में यह स्पष्ट कर दिया है कि एक अल्लाह के सिवा कोई और दुआ क़बूल नहीं करता,इस लिये इस पर ईमान लाना अनिवार्य है।

• ग्यारहवीं दलील : अल्लाह ने यह स्पष्ट किया है कि उस के अलावा किसी और को पुकारना गलत है,जो कि सत्य ढूंढने वालों के लिये का प्रयाप्त है।

• बारहवीं दलील : अल्लाह ताला ने अपने अतिरिक्त को पुकारने वाले पर यह हुक्म लगाया है कि वह अधिकतर गुमराह व्यक्ति है।

• तेरहवीं दलील : अल्लाह से दुआ का छोड़ देना अल्लाह के क्रोध का कारण है,यह इस हाल में जब कि दुआ करने वाला अल्लाह के अतिरिक्त को न पुकारता हो, इस से आप अनुमान लगा सकते हैं कि ( उस व्यक्ति से अल्लाह कितना अप्रसन्न होगा जो) जब भी दुआ करता है तो अल्लाह के अतिरिक्त से ही करता है?

• चौदहवीं दलील : अल्लाह ने उस व्यक्ति को नर्क की धमकी दी है जो अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारता है।

• पंदरहवीं दलील : जो लोग संदेष्टाओं और नेक लोगों को पुकारते हैं वह भी इस बात को मानते हैं कि एक अल्लाह ही हमारा पालनहार और पैदा करने वाला है जिस के हाथ में हर चीज़ है,इसे स्वीकारने से यह लाज़िम आता है कि वह उपासना में भी अल्लाह को एक जाने,जैसे अल्लाह को रब होने में एक मानते हैं,और दुआ एक महान इबादत है।

• सोलहवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त जिन माबूदों को पुकारा जाता है वह ज्ञान के एतबार से असमर्थ हैं।

• सत्रहवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त जिन माबूदों को पुकारा जाता है वह शक्तिहीन हैं।

• अट्ठरहवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त जिन माबूदों को पुकारा जाता है वह संपत्ति और बादशाही के एतबार से असमर्थ हैं।

• उन्नीसवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त जिन माबूदों को पुकारा जाता है वह पैदा करने के एतबार असमर्थ हैं।

• बीसवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त जिन माबूदों को पुकारा जाता है वह वह प्रबंध के एतबार से असमर्थ हैं।

• इक्कीसवीं दलील : यह माबूद जीविका देने में असमर्थ हैं।

• बाइस्वीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त या अल्लह के साथ जिन माबूदों की इबादत की जाती है वह हमेशा बाक़ी रहने वाले नहीं,बल्कि वह खतम हो कर ज़मीन में मिट्टी बन जायेंगे,यह इस बात की दलील है कि उन का उपासना गलत और निराधार कार्य है,क्योंकि यदि उन की इबादत सत्य होती ता वह हमेशा बाक़ी रहते!

• तेइस्वीं दलील : किताबो सुन्नत इस बात पर संकेत देते हैं कि मुर्दा इंसान का दुनिया से कदापि कोई संपर्क नहीं होता,बल्कि वह पूरी तरह से बेखबर होता है,चाहे उस की रूह इल्लीन में हो या सिज्जीन में,जिस व्यक्ति की यह हालत हो उस के बारे में भला क्यों कर यह उम्मीद की जा सकती है कि वह मुरादों और ज़रूरतों को पूरी करेगा?!

• चौबीसवीं दलील : जो लोग मुर्दों और निर्जीव वस्तुओं जैसे अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारते हैं,उन का इस अमल का अर्थ यह है कि वह मुर्दों के बारे में यह विश्वास रखते हैं कि वह ज़िंदों से उच्च स्थान पर हैं,क्योंकि आम तौर पर ऐसे लोगों को उन की ज़िंदगी में नहीं पुकारा करते लेकिन जब मर जाते हैं तो उन्हें पुकारने लगते हैं, जो कि शरीअत,बुद्धि और प्रकृति के मुखालिफ हैं जो इस बात की दलील है कि ज़िंदा लोग मुर्दों से उच्च स्थान रखते हैं।

• पचीसवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त जिन की इबादत की जाती है वह क़यामत के दिन अपनी इबादत करने वालों को अपमानित करेंगे और उन की इबादत से अपने आप को बरी ज़ाहिर करेंगे चाहे (दुनिया में वह) उन की इबादत से संतुष्ट रहे हों या न रहे हों।

• छब्बीसवीं दलील : कुर्आन में अल्लाह ने काफिरों के बारे में यह बताया है कि वह जहन्नम में यह स्वीकारेंगे कि अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना बेकार और ग़लत था।

• सत्ताइस्वीं दलील : क़ब्र वालों को पुकारने से यह आवश्यक (लाज़िम) होता है कि यह सुनने और जानने में अल्लाह के बराबर हैं( जो कि खुला हुवा शिर्क है)।

• अट्ठाइस्वीं दलील : सृष्टि आपस में एक दूसरे के बराबर नहीं तो भला वह अपने पैदा करने वाले के बराबर कैसे हो सकते हैं जो कि इज़्ज़त एवं गौरव का मालिक (अल्लाह) है।

• उन्तीस्वीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने से यह लाज़िम आता है कि दुआ के अलावा दूसरी इबादतों को भी उन के लिये अंजाम दिया जाये।

• तीसवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने से जो नतीजा सामने आता है,उस के चलते यह अमल हराम है,नतीजा यह है कि अल्लाह के सिवा उन पुकारे जाने

वालों के सिलसिले में रबूबियत का अक़ीदा रखा जाने लगता है,चाह मुस्तक़िल तौर पर हो या अल्लाह के साथ साझी के तौर पर।

- इकतीस्वीं दलील : अंबिया और हक़ के साथ उन की पैरवी करने वाले नेक लोग इस बात से प्रसन्न नहीं होते कि लोग उन के लिये किसी प्रकार की इबादत अंजाम दीं चाहे उन की ज़िदगी में हो या उन के मरने के बाद।

- बत्तीस्वीं दलील : अल्लाह के रसूल ﷺ लोगों को इस बात से मना करते थे कि वह आप की प्रशंसा में हद से बढ़ जाये तो भला उस व्यक्ति के विषय में (आप ﷺ की क्या राय हो सकती है) जो आप को या किसी और को दुआ में अल्लाह के साथ साझी ठहराते हैं?!।

- तैंतीस्वीं दलील : ये पैगम्बर,नेक लोग और फरिश्ते जिन से दुआ की जाती है वे स्वयं अल्लाह के बंदे हैं जो अच्छे कर्मों के ज़रिये अल्लाह की निकटता ढूंडते हैं जो स्वयं अल्लाह का बंदा हो वह इस बात का हक़ नहीं रखता कि उस की इबादत की जाये या लोग उस की निकटता प्राप्त करें।

• चौंतीस्वीं दलील : ये पैग़म्बर और नेक लोग जिन्हें पुकारा जाता है,वह स्वयं जीवित लोगों की दुआ के मुहताज हैं क्योंकि मरने के बाद इंसान का अमल कट जाता है।

• पैंतीसवीं दलील : मुर्दों को पुकारना इस लिये भी ग़लत है कि नबी ﷺ ने ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा की है जिस ने आप से कोई दुनियावी वस्तु नहीं मांगी,और ऐसे व्यक्ति को आप ने उस पर प्रतिष्ठा दी है जिस ने आप से कोई चीज़ तलब की,बल्कि आप ने ऐसे अधिकतर लोगों की बुराई भी की है जिस ने आप से किसी जायज़ और मुम्किन चीज़ को मांगा और उन्हें ये सिखाया कि लोगों के सामने हाथ न फैलाया करें,ताकि उन्हें इस की तर्बियत दें कि वह केवल एक अल्लाह से अपना रिश्ता जोड़ें,अब भला आप उस व्यक्ति के बारे में क्या कहेंगे जो नबी ﷺ या किसी और से ऐसी हाजतें मांगता है जिन्हें केवल अल्लाह ताला ही पूरी कर सकता है?

• छत्तीसवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना गलत है,इस की एक दलील यह भी है कि बंद जितना अल्लाह की तौहीद पर क़ायत रहता है और उस के सामने ज़िल्लत और मुहताजी ज़ाहिर करता है उतना ही अल्लाह ताला उसे इज़्ज़त और सम्मान प्रदान करता है और उस की कदरो मंज़िलत को बुलंद फर्माता है।?

• सैंतीसवीं दलील : पैग़म्बर अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने से दूर रहते थे चाहे उन के क़रीबी रिश्ते नाते वाले ही क्यों न हो,जो इस बात की दलील है कि यह गलत अमल है।

• अड़तीसवीं दलील : कृपा और भलाई का यह हक़ बनता है कि उस का शुक्र अदा किया जाये और अल्लाह का शुक्र अदा करने का अर्थ यही है कि केवल उसी की इबादत की जाये।

• उन्चासवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना गलत और कुफरिया अमल है,इस की एक दलील यह भी है कि जब अरब के कुछ क़बीलों ने नबी ﷺ की वफात के बाद ज़कात देने से इन्कार किया तो अबू बक्र ؓ ने उन से मुर्तदो की तरह जंग की,यदि आप ؓ उन लोगों को देखते तो क्या कहते जो इबादत की रूह और उस की असलियत अर्थात दुआ को अल्लाह के अतिरिक्त के लिये अंजाम देते हैं?

• चालीसवीं दलील : मुर्दा को पुकारना और उस से अभिलाषा करना,पैग़म्बरों की क़ब्रों को मस्जिद बनाने से अधिक खतरनाक है,जब कि नबी ﷺ से प्रमाणित है बल्कि अधिकतर हदीसों में यह आया है कि आप ﷺ ने उन लोगों पर लानत भेजी है जो पैग़म्बरों की क़ब्रों को मस्जिद बनाते हैं अर्थात क़ब्रों के पास नमाज पढ़ते और अल्लाह ताला से दुआ मांगते हैं,जब उस व्यक्ति पर लानत भेजी गई है जो क़ब्रों को मस्ज्द बनाात और वहां पर अल्लाह ताला की इबादत करता और उसी से दुआ करता है तो ऐसा व्यक्ति अधिकतर लानत का हक़दार होगा जो क़ब्रों का इरादा इस लिये करता है ताकि वहां पर अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारे, अल्लाह के अतिरिक्त के यसमीप विनम्रता का प्रदर्शन करे, और अल्लाह के अतिरिक्त के समामने श्रद्धा और समर्पण से पेश आये,यह भी अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने के ग़लत होने की एक दलील है।

• इक्तालीसवीं दलील : यह बात सही नहीं है कि बंदे का एक से अधिक आक़ा हो जो उस का मालिक क्योंकि इस प्रकार अनके आक़ाओं के अहकाम की पैरवी उस पर कठिन होगी,तो यह बात बदरजे अवला सही नहीं कि बंदे का एक से अधिक माबूद हो जिस की वह इबादत करे।

• बयालीसवीं दलील : इंसान इस बात को पसंद नहीं करता है कि गुलामों की संपत्ति में कोई उस का साझी हो,तो वह अल्लाह के लिये क्यों कर यह पसंद करता है कि उस के शुद्ध हक़ में उस का कोई बंदा उस का साझी हो जब कि इबादत उस अल्लाह का हक है जो अकेला है और जिस का कोई साझी नहीं।

• तैंतालीसवीं दलील : दिलों के अंदर क्षमता उस समय पैदा हो सकती है जब संपूर्ण उपासनाओं खास कर दुआ को केवल अल्लाह के लिये शुद्ध रखा जाये,जब बंदा अल्लाह के अतिरिक्त से अपना रिश्ता जोड़ ले और शरई हद से बढ़ कर उस से प्रेम करने लगे तो यह उस के लिये हानि का कारण होता है।

• चव्वालीसवीं दलील : ऐसा करने वाले को अपने अमल पर न तो भरोसा होता है और न वह इस से संतुष्ट रहता है और न ही उस स्थिर रहता है,इस लिये आप देखेंगे कि वह अनेक माबूदों के बीच घूमते रहते हैं,कभी इस मुर्दे के पास तो कभी उस मुर्दे के पास।

• पैंतालीसवीं दलील : इबादत करने वाला अल्लाह के अतिरिक्त जिस की इबादत करता है उस से उस का प्रेम तात्कालिक होता है जो कि जल्द ही समाप्त हो जाता है,इस प्रकार कि वह दूसरे माबूदों की ओर चला जाता है या उन माबूदों ( की क़ब्रें) नष्ट और तबाह हो जाती हैं,लेकिन एक अल्लाह की इबादत करने वाला हमेशा अल्लाह की से प्रेम करता है।

• छियालीसवीं दलील : वर्षा करना और अज़ाब दूर करना जैसे बड़ बड़े काम केवल एक अल्लाह को पुकारने से ही प्राप्त होते हैं।

• सैंतालीसवीं दलील : जो लोग क़ब्र में दफन मुर्दों को पुकारते हैं उन की दुआयें बहुत कम क़बूल होती हैं,आम तौर पर उन की दुआयें क़बूल नहीं होती हैं।

• अड़तालीसवीं दलील : क़ब्र प्रस्त लोग क़ब्रों पर जा कर दुआ और प्रार्थना और निकटता के लिये जो कार्य करते हैं उन पर कुछ काफिरों को भी आश्चर्य होता है और वह उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

• उंचासवीं दलील : क़ब्रों और मज़ारों के सम्मान से उम्मते इस्लामिया पर ऐसे दुष्प्रभाव हुये हैं जिन का संबध ज़मीन की आबाद कारी जैसे महत्व पूर्ण मामलात से है।

• पचासवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने वालों की दलील या तो हदीस से संबंधित संदेह हैं जैसे कमज़ोर और मन घड़त हदीसें,या बुद्वि और ज्ञान से संबंधित संदेह हैं,या इंसान के बनाये हुये तजरबात हैं,या कहानियां और सपने हैं,जब कि इन

दलीलों पर न तो दीन की शाखाओं में भरोसा किया जा सकता है और न दीन के सिद्धांतों में।

- इक्यावनवीं दलील : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने वाला अपने आप को उस खुशी से दूर रखता है जो अल्लाह से संबध जोड़ने,उस के दरबार में स्वयं को समर्पण करने,बिना वास्ता उस से दुआ करने पर अल्लाह ज़ाहिर करता है,वह अल्लाह की उस खुशी से मुंह फेर कर अपनी ही जैसी सृष्टि के सामने घुटने टेकता है।
- लेख के परिणाम

# सिद्धांत : दुआ इबादत है

## संपूर्ण इबादतों के बीच दुआ का स्थान

दुआ एक महान उपासना है, अल्लाह ने अधिकतर आयतों में इसे विशेषता के साथ बयान किया है,और नबी ﷺ ने भी अधिकतर सही हदीसों में इस के मक़ाम को बयान किया है,उन्हीं हदीसों में से सलमान फारसी ﷺ की यह हदीस है, वह नबी ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया : " अल्लाह ताला अधिक लज्जा वाला और दयालू है,उसे इस बात से लज्जा अती है कि जब कोई व्यक्ति उस के सामने हाथ फैलाये तो वह उस के दोनों हाथों को खाली और नाकाम वापिस कर दे "[2]।

रसूल ﷺ का कथन है : " दुआ के अतिरिक्त कोई चीज़ तक़्दीर को नहीं टाल सकती है "[3]।

और रसूल ﷺ ने फरमाया : " अल्लाह के समीप दुआ से अधिक प्रिय और सम्माननीय कोई चीज़ (उपासना) नहीं है " [4]।

नबी ﷺ ने दुआ की महानता इस प्रकार बयान की है कि : " दुआ ही इबादत है ",फिर आप ने यह आयत तिलावत की :

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾{سورة غافر : 60}

[5]

---

([2]) इसे तिर्मिज़ी (3556) ने रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही कहा है।

([3]) इस हदीस को तिर्मिज़ी (2139) ने सलमान फारसी ﷺ से रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने हसन कहा है,देखें : अल सहीहा (154)।

([4]) इस हदीस को तिर्मिज़ी (3370) ने अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने हसन कहा है।

([5])इस हदीस को अबू दावूद (1479) और तिर्मिज़ी (2969) आदि ने नोमान बिन बशीर ﷺ से रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही कहा है।

तर्जुमा : तुम्हारे रब का कथन है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा यक़ी मानो कि जो लोग मेरी उपासना से घमंड करते हैं वह जल्द ही अपमानित हो कर नर्क में पहुंच जायेंगे।

इबादत को दुआ में महसूर करने (घिरा होने) का अर्थ यह नहीं कि (इबादत) पूरे तौर पर (दुआ में ही) महसूर है, अर्थात दुआ के अन्दर हर प्रकार की उपासनायें शामिल हैं, ऐसा कदापि नहीं है बल्कि हदीस का उद्देश्य है दुआ की महानता और बलंदी से आगाह करना और इस से खबरदार करना कि दुआ इबादत की रूह,उस का शुद्व अंग और महान स्तंभ है। जैसे आप की यह हदीस है कि : (हज अरफात में ठहरने का नाम है) [6]।

और आप का यह कथन है कि : (दीन खैर ख्वाही का नाम है) [7]।

कुछ लोगों ने दुआ के इबादत होने में शक पैदा कर दिया है ताकि इस प्रकार अल्लाह के अतिरिक्त के लिये उसे अंजाम देने की राह बराबर कर सकें,जब कि यह दावा निरस्त है,क्योंकि अल्लाह ने दुआ को इबादत कहा है,अल्लाह का कथन है : (हे मुहम्मद उन से) कह दो कि मुझे इस बात से रोका गया है कि जिन को तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो उन की पूजा करो (और मैं उन की क्यों कर पूजा करूं) जब कि मेरे पास मेरे रब (की ओर) से खुली दलीलें आ चुकी हैं।

और अल्लाह का कथन है :

तर्जुमा : तुम्हारे रब का कथन है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा यक़ीन मानो जो लोग मेरी इबादत से घमंड करते हैं वह जल्द ही अपमानित हो कर नर्क में पहुंच जायेंगे।

अर्थात वह ज़लील और अपमानित हो कर (नर्क में डाले जायेंग),इन दोनों आयतों में अल्लाह ने दुआ को इबादत कहा है जो कि दुआ की महानता की दलील है।

और अल्लाह ने दुआ को दीन भी कहा है जैसा कि अल्लाह के इस कथन में आया है :

---

([6]) इसे नसाई (3016) आदि ने अब्दुर्रहमान बिन यामर ﷺ से रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही कहा है।

([7]) इसे मुस्लिम (55) ने तमीम दारी ﷺ से रिवायत किया है।

तर्जुमा : फिर जब यह नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं और केवल उसी की इबादत करते हैं लेकिन जब वह उन को बचा कर समुद्र के बाहर पहुंचा देता है तो झट शिर्क करने लग जाते हैं।

अल्लाह पाक ने दीन को दुआ के बदल के तौर पर प्रयोग किया है,उसे अलिफ और लाम के साथ मारफा प्रयोग किया है जो कि मुतय्यन होने का अर्थ देता है,यह इस बात की दलील है कि दुआ दीन है,और जो चीज़ दीन हो वह इबादत है।

और अल्लाह ताला ने अपनी दुआ का आदेश दिया है और हर वह चीज़ जिसे करने का अल्लाह आदेश देता है वह या तो वाजिब इबादत होती है या मुस्तहब इबादत,जैसा जि ऊपर आयत में आया है :

तर्जुमा : तुम्हारे रब का कथन है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा यक़ीन मानो जो लोग मेरी इबादत से घमंड करते हैं वह जल्द ही अपमानित हो कर नर्क में पहुंच जायेंगे।

और अल्लाह ताला ने फरमाया : अपने रब से नम्रता से और चुपके चुपके दुआयें मांगा करो।

इसी प्रकार नबी ﷺ ने भी अल्लाह को पुकारने और उस से दुआ करने का आदेश दिया है जैसा कि आप ने फरमाया : " रहा रुकू तो इस में तुम अपने रब की बड़ाई बयान किया करो और रहा सज्दा तो उस में तुम दुआ करो क्योंकि यह तुम्हारी दुआ की क़बूलियत के अधिक क़रीब है " [8]।

शैख अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अबा बतीन रहिमहुल्लाह अलैह [9] फरमाते हैं : "हर वह कार्य जिस का अल्लाह ने आदेश दिया है चाहे वह वाजिब हो या

---

([8]) सही मुस्लिम (479)

([9])आप शैख अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अबा बतीन हैं,आप की पैदाइश 1194 हिज्री में रौज़ा सुदेर में हुई,शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के कुछ छात्रों से आप ने पढ़ा,क़ाज़ी और मुफ्ती के उहदे पर रह कर कार्य किया,फिर आप का शुमार नज्द के बड़े उलमा में होने लगा,यहां तक कि " मुफ्ती अल दियार अल नजदिय्या " के लक़ब से नवाज़े गये,आप को फिक़्ह में महारत थी,विदेश में भी आप ने पाठ पढ़ाया है,आप के छात्र अधिकतर हैं,इन में नूनियह इब्नुल क़य्यिम की व्याख्या करने वाले अहमद बिन इब्राहीम बिन ईसा(1329 हिज्री),मश्हूर इतिहासकार लेखक उसमान बिन अब्दुल्लाह बिन बिश्र(1290 हिज्री) ज़िक्र के क़ाबिल हैं जिन्हों ने इसलामी अक़ीदा की रक्षा में अनेक किताबें लिखीं,जिन में "अल इन्तिसार लिहिज़्बिल्लाह अल मुवह्हिदीन वर्रद्द अलल मुजादिल अनिल मुश्रिकीन" " अर्रद्द अलल बुर्दा " " तासीस अल तक़्दीस फी कश्फ तलबीस दावूद बिन जर जीस " सरे फिहरिस्त हैं आप के कुछ रिसाले और कुछ रद्द में लिखी जाने वाली किताबें हैं जिन में से कुछ आप की किताब " अद्दुरर

मुस्तहब,वह कार्य संपूर्ण उलमा के समीप इबादत है,तो जो व्यक्ति यह कहे कि बंदे की अपने रब से दुआ करना उस की इबादत नहीं है तो वह गुमराह बल्कि काफिर है " [10]।

---

अस्सनिय्या फिल अजविबतिन नज्दिय्या " में मौजूद हैं और कुछ मज्मूआ अर्रसाइल वल मसाइल अल नज्दिय्या " में मौजूद हैं,आप की मौत शक़्रा के अंदर 1282 हिज्री में हुई,अल्लाह आप के ऊपर अधिक दया करे। तल्खीस और इज़ाफा : मुक़द्दमा किताब" "तासीस अल तक़्दीस फी कश्फ तलबीस दावूद बिन जरजीस "। यह किताब डाक्टर अब्दुस्सलाम बिन बरजिस आले अब्दुल करीम की लिखी हुई है,आप की जीवनी के बारे में अधिक जानकारी के लिये देखें : अल शैख अल अल्लामा अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अबा बतीन मुफ्ती अल दियार अल नज्दिय्या " लेखक : डाक्टर अली बिन मुहम्मद अल अजलान,प्रकाशक : दार अल सुमैई– रियाज़।

([10])तासीस अल तक़्दीस फी कश्फ तलबीस दावूद बिन जरजीस : 127

## अध्याय : केवल एक अल्लाह के पुकारने का हुक्म और उस के अतिरिक्त हर एक को पुकारने की मनाही।

कुर्आनो हदीस में केवल एक अल्लाह को पुकारने का हुक्म और उस के अतिरिक्त हर किसी को पुकारने की मनाही है,उदाहरण के तौर पर अल्लाह ताला का यह कथन :

तर्जुमा : अपने रब से नम्रता से और चुपके चुपके दुआयें मांगा करो। (सूरतुल आराफ : 55)

और यह कथन :

तर्जुमा : अल्लाह ताला से उस की कृपा मांगो। (सूरतुन्निसा : 32)

शैख अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद बिन क़ासिम रहिमहुल्लाह [11] फरमाते हैं : केवल एक अल्लाह को पुकारने का आदेश लगभग तीन सौ स्थान पर अनेक प्रकार से आया है,कभी आदेश के साथ जैसा कि फरमाने इलाही है :

तर्जुमा : मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा। (सूरे ग़ाफिर : 60)

और यह कथन :

---

([11])शैख अब्दुर्रहमान का शुमार नज्द के मश्हूर उलमा में होता है,आप की पैदाइश 1319 हिज्री में हुई,आप ने नज्द के अधिकतर उलमा से पढ़ा है,शैख की अलग पहचान यह है कि आप ने मराजे और मसादिर जैसे इल्मी वरसा की खिदमत की, उन की तह़क़ीक़ की और उन्हें लोगों के सामने पेश किया,उन खिदमात में सब से बड़ी खिदमत फतावा इब्ने तैमिया है,जिसे आप ने फहरिस्त के अलावा (35)जिल्दों में जमा किया,जो बादशा सऊद बिन अब्दुल अज़ीज़ रहिमहुल्लाह के खर्च पर 1381 हिज्री में छपी,और आप ने नज्द के उलमा के फतावे भी जमा किया,बारहवीं सदी के शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से लेकार अपने ज़माने क उलमा तक ( सभों के फतावे जमा कर दिये),यह किताब"अद्दुरर अस्सनिय्या फिल फतावा अन्नज्दिय्या" के नाम से मश्हूर है,और 16 जिल्दों में है,यह शाह अब्दुल अज़ीज आले सऊद के खर्च पर 1356 हिज्री छपी,और शैख ने सऊदी अरब के मुफ्ती शैख मुहम्मद बिन इब्राहीम आले शैख रहिमहुल्लाह के फतावे भी 13 जिल्दों मे जमा कर दिये,जो शाह फैसल बिन अब्दुल अज़ीज रहिमहुल्लाह के हुक्म से 1390 हिज्री में छपी।

अक़ीदा,उसूले तफ्सीर,फिक़्ह,हदीस और नह्व में शैख की अधिकतर किताबें और शर्हें हैं,अल्लाह ने उन किताबों से अधिक लोगों का लाभ पहुंचाया और मुसलमानों ने उन से लाभ उठाया,अल्लाह उन पर दया करे और उन्हें अतिउत्तम बदला दे।

शैख अब्दुर्रहमान रहिमहुल्लाह की वफात 1392 हिज्री में हुई।

तर्जुमा : उस के लिये दीन को खालिस करते हुये उस को पुकारो।(सूरतुल आराफ : 29)

कभी अल्लाह ने मनाही के साथ उसे बयान किया जैसा कि इस आयत में :

तर्जुमा : अल्लाह ताला के साथ किसी और को न पुकारो। (सूरतुल जिन्न : 18)

कभी धमकी के साथ जैसा कि इस कथन में :

तर्जुमा : अल्लाह के साथ किसी और माबूद को न पुकार कि तू भी सज़ा पाने वालों में से हो जाये।(सूरे अल शुअरा : 213)

कभी अल्लाह ने यह साबित किया कि वही इबादत के लायक़ है जैसा कि फर्मान है :

तर्जुमा : अल्लाह ताला के साथ किसी और माबूद को न पुकारना,अल्लाह के अति कोई और पूज्य नहीं। (सूरतुल क़सस : 88)

कभी खिताब में पुकारने वाले की नकीर की जैसा कि फरमाया :

तर्जुमा : अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की पूजा मत करना जो तुझ को न कोई लाभ पहुंचा सके और न कोई हानि,यदि तू ने ऐसा किया तो तू ज़ालिमों में से हो जायेगा। (सूरे यूनुस : 106)

किसी जगह अल्लाह ने खबर देने और खबर तलब करने का अंदाज़ अपनाया।

तर्जुमा : आप कह दीजिये! भला देखो तो जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो मुझे भी तो दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन का कौन सा टुकड़ा बनाया है या आकाशों में उन का कौन सा भाग है? (सूरतुल अहक़ाफ : 4)

कभी मनाही के अर्थ में हुक्म का अंदाज़ अपनाया :

तर्जुमा : कह दीजिये! कि अल्लाह के सिवा जिन जिन का तुम्हें गुमान है सब को पुकार लो,उन में से किसी को आसमानों और ज़मीनों में से एक कण की शक्ति नहीं है। (सूरे सबा : 22)

कहीं यह बयान किया कि दुआ इबादत है और उसे अल्लाह के अतिरिक्त के लिये अंजाम देना शिर्क है :

तर्जुमा : उस से बढ़ कर गुमराह और कौन होगा? जो अल्लाह के अतिरिक्त ऐसों को पुकारता है जो क़यामत तक उस की दुआ क़बूल न कर सकें बल्कि

उन के पुकारने से अंजान हों और जब लोगों को इकट्ठा किया जायेगा तो यह उन के दुशमन हो जायेंगे और उन की पूजा से साफ इंकार कर जायेंगे। (सूरतुल अहक़ाफ : 5)

और यह कि :

तर्जुमा : मैं तुम्हें भी और जिन जिन को तुम अल्लाह ताला के सिवा पुकारते हो उन्हें भी सब को छोड़ रहा हूं,केवल अपने रब को पुकारता रहूंगा ,मुझे यक़ीन है कि मैं अपने रब से दुआ मांग कर वंचित न रहूंगा। जब इब्राहीम عليه السلام उन सब को और अल्लाह के सिवा उन के सब माबूदों को छोड़ चुके तो हम ने उन्हें इस्हाक़ और याकूब अलैहिमस्सलाम दिया,और दोनों को नबी बना दिया। (सूरे मर्यम : 48–49)

हदीस में आया है : दुआ ही इबादत है [12], इस हदीस को तिर्मिज़ी आदि ने सही कहा है,इस हदीस में (मुब्तदा और खबर के बीच)फस्ल की ज़मीर प्रयोग की गई है,और खबर को मारफा प्रयोग किया गया है ताकि हस्र का अर्थ दे,और यह दलालत करे कि दुआ के बिना इबादत है ही नहीं,और हर इबादत का अधिकतर भाग दुआ ही होता है [13],और आप ﷺ ने इस बात से भी मना फर्माया कि अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाया जाये,यहां तक कि अपने नबी ﷺ के तअल्लुक़ से फर्माया :

तर्जुमा : आप कह दीजिये कि मैं तो केवल अपने रब ही को पुकारता हूं और उस के साथ किसी को साझी नहीं करता (सूरे जिन्न : 20)

और अल्लाह ने यह भी खबर दी है कि वह अपने साथ साझी बनाये जाने को क्षमा नहीं करता [14]।

लेखक : केवल एक अल्लाह को पुकारना अनिवार्य है,उस की दलील इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा की यह हदीस भी है कि नबी ﷺ ने फर्माया : "जब

---

([12]) इस हदीस का संदर्भ ( हवाला) पहले आ चुका है।

([13]) आप ने सही फर्माया क्योंकि कोई भी उपासना दुआ से खाली नहीं,जैसे नमाज़,हज,ज़िक्रो अज़्कार और जिहाद,यह वह इबादतें हैं जिन में अल्लाह को पुकारना निर्धारित है,यह अलग बात है कि दुआ स्वयं एक स्थाई इबादत है।

([14])अस्सैफुल मस्लूल अला आबिदिर्रसूल : 131–132 संक्षिप्त के साथ।

मांगना हो तो अल्लाह से मांगो और जब मदद तलब करनी हो तो अल्लाह से तलब करो " [15]।

यदि अल्लाह के अति से मांगना सही होता तो नबी ﷺ यह रहनुमाई फर्माते कि : " मुझ से मांगो,या यह कहते कि : मुझ से हायता मांगो,और जब आप ने ऐसी नहीं कहा –जब कि यह सिखाने का मौक़ा था तो यह इस बात की दलील है कि अल्लाह के अतिरिक्त से मांगना जायज़ नहीं है।

अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूल ﷺ ने फर्माया : " हमारा रब हर रात निचले आसमान पर उतरता है,उस समय जब रात का अंतिम तिहाई भाग शेष रह जाता है और फर्माता है : कौन है जो मुझ से दुआ करता है कि मैं उस की दुआ क़बूल करूं,कौन है जो मुझ से मांगता है कि मैं उस दूं,कौन है जो मुझ से क्षमा मांगता है कि मैं उसे क्षमा कर दूं " [16]।

अल्लाह के अतिरिक्त की सरीह मनाही अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ की हदीस में आई है,वह नबी ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने फर्माया : " जो व्यक्ति इस हालत में मर जाये कि वह अल्लाह के अतिरिक्त औरों को भी उस का साझी मानता रहा हो ता वह नर्क में जायेगा " [17]।

अबू हुरैरा ﷺ रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फर्माया : " क़यामत के दिन जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी,उस की दो आंखें होंगी जो देखेंगी,दो कान होंगे जो सुनेंगे और एक ज़ुबान होगी जो बोलेगी,वह कहेगी : मुझे तीन लोगों पर लगाया गया है : हर सर्कश ज़ालिम पर,हर उस व्यक्ति पर जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पुकारता हो,और प्रतिमा बनाने वालों पर " [18]।

शैख अब्दुर्रहमान बिन सादी रहिमहुल्लाह [19] अल्लाह के फर्मान :

---

([15]) इसे तिर्मिज़ी (2516) और अहमद (1/303) ने रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही कहा है।

([16])इस हदीस को बुखारी (145) और मुस्लिम (1772) आदि ने रिवायत किया है।

([17])इसे बुखारी (4497) ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ से रिवायत किया है।

([18])इसे तिर्मिज़ी (2574) ने रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही कहा है।

([19])आप शैख,अल्लामा,मुफस्सिर और फक़ीह अब्दुर्रहमान बिन नासिर सादी हैं,आप का शुमार नज्द के बड़े उलमा में होता है,क़सीम शहर के उनेज़ा में आप का घर था,आप की पैदाइश 1307 हिज्री में हुई और वफात 1376 हिज्री में हुई,अधिकतर छात्र ने आप से पढ़ा और मुसलमानों के उलमा बन कर

﴿يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ﴾

की तफ्सीर में लिखते हैं : " अर्थात अल्लाह अपनी ज़ात के ज़रिये संपूर्ण सृष्टि से बे नियाज़ है,वह बड़ा ही सखी और बे पनाह उदार है,संपूर्ण सृष्टि उस की मुहताज है, सब के सब अपनी संपूर्ण आवश्यक्तायें उसी से तलब करते हैं चाहे ज़बाने हाल से करें या मक़ाल से,वह एक क्षण बल्कि उस से भी कम समय के लिये अल्लाह से बेनियाज़ नहीं हो सकते,वह अल्लाह ताला(हर रोज़ एक शान में है)किसी फक़ीर को अमीर करता है और किसी टूटे दिल वाले को तसल्ली पहुंचाता है,एक क़ौम को देता है तो दूसरी को नहीं,किसी को मौत देता है तो किसी को जीवन,किसी को नीचे करता है तो किसी को ऊंचा,एक कार्य उसे दूसरे कार्य से ग़ाफिल नहीं करता,और न मसाइल का ढेर उस पर संदिग्ध होता है, गिड़गिड़ाने वालों का गिड़गिड़ाना और मांगने वालों की लंबी मांग उसे तंग नहीं करतीं,पाक है वह दाता जिस की नवाज़िशों से धर्ती और आकाश भरे पड़े हैं,जिस की दया से हर पल और हर क्षण संपूर्ण सृष्टि लाभ उठा रही हैं, बुलंद एवं ऊंचा है वह जिसे गुनहगारों की नाफर्मानी और उस से और उस की उदारता से बेखबर फक़ीरों की बेनियाज़ी देने से नहीं रोकती " [20]।

---

निकले,जैसे शैख अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन अक़ील,शैख अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान अल बस्साम और शैख मुहम्मद बिन सालेह बिन उसैमीन आदि,अल्लाह इन में से मरे हुये लोगों पर दया करे और ज़िदों की रक्षा करे।

([20])

## अध्याय : अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ के बातिल होने की पचास दलीलें [21]

संपूर्ण इबादतों में दुआ का स्थान बड़ा है फिर भी अधिकतर लोग अल्लाह और मख्लूक़ के बीच साझी बनाते हैं,अल्लाह ने अपने अतिरिक्त से दुआ करने को कुर्आने करीम में दो जगहों पर बातिल क़रार दिया है, पहली जगह सूरे हज में अल्लाह का यह कथन :

तर्जुमा : यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है और जिस चीज़ को (काफिर) अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वह बातिल है। (सूरे हज : 62)

दूसरी जगह सूरे लुक़्मान में अल्लाह का यह कथन : यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है और जिस चीज़ को (काफिर) अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वह बातिल है। (सूरे लुक़मान : 30)

इसी प्रकार नबी ﷺ ने उस व्यक्ति की तारीफ की है जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करने को बातिल कहा,आप ने फर्माया : शायरों के कलाम में सब से सत्य कलाम लबीद [22] का है जो इस प्रकार है :

ألا كل شيء ما خلا الله باطل[23]

तर्जुमा : अल्लाह के अतिरिक्त सब चीज़ बातिल और खतम होने वाली है।

---

([21])अल्लाह की आसानी पैदा करने के कारण दुआ के आदाब और क़बूलियत के कारणों पर एक स्थाई किताब मैं ने लिखी है जिस का जिस का नाम है :" अल तब्सिरा फी बयान अन्न तहर्री इजाबति दुआ दुआइल्लाहि इन्दल क़बूर " (क़ब्रों पर अल्लाह से दुआ करना बिदअत और नाजायज़ है) यह किताब इंटरनेट पर मौजूद है,अल्लाह इसे छपने में आसानी पैदा करे।

([22])आप लबीद बिन रबीआ अल आमिरी हैं,बुखारी और इब्ने अबी खैयसमा ने इन्हें सहाबा में शुमार किया है,आप ने कूफा में अपना घर बनाया आप की वफात खिलाफते उस्मान ﷺ के बीच हुई,आप ने 150 साल या इस से अधिक उम्र पाई,आप ही का यह शेर है :

ولقد سئمت من الحياة وطولها  وسؤال هذا الناس: كيف لبيد

तर्जुमा :

मैं लंबे जीवन से तंग आ चुका हूं जब कि लोग पूछते हैं कि लबीद! आप का क्या हाल है। फत्हुल बारी से इख्तिसार के साथ।

([23])इसे बुखारी (3741) और मुस्लिम (2256) ने अबू हुरेरा ﷺ से रिवायत किया है ,शेर का दूसरा मिस्रा इस प्रकार है :

وكل نعيم لامحالة زائل

अर्थात हर नेमत और कृपा को खतम होना है।

**पहली दलील : अल्लाह ने यह आदेश दिया है कि संपूर्ण उपासनायें एक अल्लाह के लिये हों जिस का कोई साझी नहीं,जैसे दुआ आदि,तो जिस ने इस प्रकार की कोई इबादत अल्लाह के अतिरिक्त के लिये अंजाम दी चाहे वह संयुक्त रूप से हो या स्थाई रूप से,तो उस ने महान अल्लाह के साथ शिर्क किया।**

इस की दलील अल्लाह का यह फर्मान है :

तर्जुमा : मैं ने जिन्नों और इंसानों को केवल अपनी उपासना के लिये ही पैदा किया है। ( सूरे अल ज़ारियात : 56)

और अल्लाह ताला ने फर्माया :

तर्जुमा : जो पैग़म्बर हम ने तुम से पहले भेजे उन की ओर यही वह्य भेजी कि मेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं,तू मेरी ही इबादत कर। ( सूरे अल अंबिया : 25)

अल्लाह ने इस बात से मना किया कि उस के साथ इबादत में किसी को साझी बनाया जाये,फर्माया :

तर्जुमा : हे मुहम्मद तुम्हारी ओर और उन पैग़म्बरों की ओर जो तुम से पहले थे,यही वह्य भेजी गई है कि यदि तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जायेंगे और तुम नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाओगे। बल्कि अल्लाह ही की उपासना करो और शुक्र अदा करने वालों में से रहो। ( सूरतुज़्ज़ुमर : 65–66)

अल्लाह ने हमारे सामने यह स्पष्ट कर दिया कि शिर्क सब से बड़ा पाप है,और यदि बंदा शिर्क की हालत में मर जाता है तो अल्लाह उसे क्षमा नहीं करेगा, अल्लाह का कथन है :

तर्जुमा : निःसंदेह अल्लाह ताला अपने साथ शिर्क किये जाने को क्षमा नहीं करता और उस के सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देता है। ( सूरे अल निसा : 116)

दूसरी दलील : कुर्आनो सुन्नत में इस बात की खास तौर पर ताकीद की गई है कि दुआ को (अल्लाह के लिये) खालिस रखा जाये और इसे अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करने से रोका गया है,जैसे अल्लाह का यह कथन :

तर्जुमा : अपने रब से विनम्रता के साथ और चुपके चुपके दुआयें मांगो।( सूरतुल आराफ : 55)

और अल्लाह का फर्मान है :

तर्जुमा : भला कौन परेशान हाल की फर्याद को क़बूल करता है जब वह उस से दुआ करता है और (कौन उस की) तक्लीफ दूर करता है और तुम्हें ज़मीन का खलीफा बनाता है। ( सूरे अल अन्नम्ल : 62)

और अल्लाह ने फर्माया :

तर्जुमा : जब तुम से मेरे बंदे मेरे बारे में पूछें तो मैं तो तुम्हारे पास हूं,जब कोई पुकारने वाला पुकारता है तो मैं उस की दुआ क़बूल करता हूं। (सूरे अल बक़रा : 186)

और अल्लाह फर्माता है :

तर्जुमा : अल्लाह से उस का फज़्लो करम मांगते रहो।(सूरे अल निसा : 32)

(बाब केवल एक अल्लाह को पुकारने का हुक्म और उस के अतिरिक्त हर किसी को पुकारने की मनाही) में इस मस्ले की तह्क़ीक़ गुज़र चुकी है कि केवल एक अल्लाह से दुआ करने का ज़िक्र कुर्आन के अंदर अनेक अंदाज़े बयान में लगभग तीन सौ स्थानों पर आया है। [24]

**तीसरी दलील : फरिश्ते और ज्ञानियों ने यह साक्षी दी कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं।** अल्लाह ताला ने फर्माया :

तर्जुमा : अल्लाह इस बात की गवाही देता है कि उस के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं और फरिश्ते अथवा ज्ञानी गण जो न्याय पर क़ायम हैं (गवाही देते हैं कि ) उस ग़ालिब हिक्मत वाले के अतिरिक्त कोई इबादत के लायक़ नहीं। (सूरे आले इमरान : 18)

इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं,यह सब से अधिक महान की ओर से सब से महान चीज़ की गवाही है, संपूर्ण संसार के पालनहार की गवाही में कभी भी कोई कमी नहीं आ सकती,इस लिये इस आयत के बाद (यह बात स्पष्ट हो गई)कि पहले और बाद की क़ौमों में से

---

([24])अधिक देखें : शिन्क़ीती रहिमहुल्लाह ने अपनी किताब " अल अज़्वा के अंदर सुरे हुज्रात की आयत नम्बर 2 की तफ्सीर में केवल एक अल्लाह को पुकारने क अनिवार्य होने के विषय में जो बहस की है,और आप रहिमहुल्लाह ने लिखा है कि : दूसरा मस्ला जो महत्वपूर्ण मसायल में से है....

जिस ने भी अल्लाह के अतिरिक्त की उपासना की वह उपासना इन तीन गवाहियों की बिना पर निरस्त और बे बुन्याद है।

**तीसरी दलील : अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करना बड़ा शिर्क है चाहे उस का वसीला और ज़रिअः कुछ भी हो। दीने इस्लाम और संपूर्ण दीनों में यह बात मशहूर है कि शिर्क ह़राम है,बल्कि शिर्क पूरे तौर पर इस्लाम से निकाल देता है,**अल्लाह ने अपने नबी ﷺ से कहा :

तर्जुमा : हे मुहम्मद! तुम्हारी ओर और उन ( पैगंबरों) की ओर जो तुम से पहले हो चुके हैं यही वह्य भेजी गई है कि अगर तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारे आमाल अकारत हो जायेंगे और तुम नुक़्सान उठाने वालों में से हो जाओगे। (सूरे अल जुमर : 65)

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह [25] लिखते हैं : " यह (शिर्क) एकेश्वरवादियों के दीन को न जानने का नतीजा है,क्योंकि एकेश्वरवादियों और अल्लाह के बीच इबादत,दुआ और मदद मांगने में कोई वास्ता नहीं होता,बल्कि वह बिना वास्ता के अपने रब से दुआ करते हैं और उस की उपासना करते हैं,और हर नमाज़ी बिना किसी वास्ता के अपने रब की इबादत करता है "। [26]

इस मस्ले में उम्मत के संपूर्ण ज्ञानियों का इज्मा है,चाहे वह मशहूर चारो इमाम हों या दूसरे ज्ञानी लोग,सब का इस बात पर इज्मा है कि अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना बड़ा शिर्क है जो दीन से निकाल देता है,और मुसलमानों का इज्मा

---

([25]) आप इमाम,अल्लामा,ज्ञान के समुद्र,फक़ीह,सत्य में शैखुल इस्लाम अबुल अब्बास तक़ीउद्दीनी अहमद बिन अब्दुल हलीम हर्रानी फिर दिमश्क़ी हैं,आप का लक़ब इब्ने तैमिया है,जब इस्लाम पूरी तरह अजनबी हो गया तो आप ने दीने इस्लाम की तज्दीद की,और जब दुनिया इल्मे कलाम की बिदअतों,सूफियों की खुराफात,क़ब्रप्रस्तों के शिर्क और फल्सफियों और रवाफिज़ के इल्हाद से तारीक हो गई तो आप ने किताबो सुन्नत के तरीक़े पर सही इस्लाम की तरफ नये सिरे से दावत दी,हक़ का एलान किया,बातिल प्रस्तों से मुनाज़रा किया,इस मार्ग में जेल भी जाना पड़ा,अल्लाह ताला ने आप के ज्ञान को क़बूलियत दी,आप के लेख राइज हुये,आप के बाद जो भी उलमा आये सब ने आप की किताबों पर भरोसा किया,आप के छात्रों में से कुछ इस्लाम के इमाम बन कर उभरे,जैसे इब्नुल क़य्यिम,इब्ने कसीर,ज़हबी और इब्ने अब्दुल हादी आदि,आप की वफात 728 हिज्री में हुई,कुछ तहक़ीक़ करने वाले ने आप की जीवनी पर आधारित लेख को एक उत्तम पुस्तक में जमा कर दिया है जिसे " अल जामे लिसीरते शैख अल इस्लमा इब्ने तैमिया खिलाल सबअते कुरून" का नाम दिया,यह काम शैख बक्र अबु यज़ीद रहिमहुल्लाह की देख रेख में हुवा है,जिसे दारे आलम अल फवाइद– मक्का ने छापा है,अधिक जानकारी के लिये इस किताब को देखा जा सकता है।

([26])अल इस्तेग़ासा फिर्रद्दे अलल बिक्री : 2/477–478,संक्षिप्त के साथ।

एक शर्ई दलील है,जैसा कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फर्माया : अल्लाह ताला मेरी उम्मत को गुमराही पर इकट्ठा नहीं करेगा,अल्लाह का हाथ जमाअत के साथ है [27]।

बहुत से ज्ञानियों ने इस बात पर इज्मा नक़्ल किया है कि अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना बड़ा शिर्क है जो दीने इस्लाम से निकाल देता है,उन उलमा में शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया भी हैं आप फरमाते हैं : " मुर्दा और ग़ायब व्यक्ति को पुकारना चाहे वह नबी हो या कोई और इस्लाम के इमामों के इज्मा अनुसार मुन्कर और हराम है,न तो अल्लाह ने इस का हुक्म दिया है और न ही रसूल ने,न किसी सहाबी ने और न सही ढंग से उन की पैरवी करने वाले ताबई ने और न इस्लाम के इमामों में से किसी ने इस अमल को सही कहा है,यह वह चीज़ है जो दीने इस्लाम में जानी पहचानी सी है " [28]।

आप आगे फरमाते हैं : " मुसलमानों के किसी भी इमाम ने यह नहीं कहा है कि किसी भी मखलूक़ से उन चीज़ों में मदद मांगना सही है जिन में अल्लाह ताला से मदद मांगी जाती है,न किसी नबी से, न किसी फरिश्ते से ,न किसी नेक व्यक्ति से, और न ही किसी और से,बल्कि दीने इस्लाम में यह आम बात है और इसे सब जानते हैं कि ऐसा करना कदापि जायज़ नहीं है " [29]।

आप आगे लिखते हैं : " जो फरिश्तों और नबियों को वास्ता बना कर उन से दुआ करता है,उन पर भरोसा करता है, उन से लाभ प्राप्त करने और हानि के टालने का सवाल करता है,उदाहरण के तौर पर गुनाह की माफी,दिलों की हिदायत ,मुसीबतों और ग़रीबी को दूर करने का सवाल करता है तो वह मुसलमानों के इज्मा अनुसार काफिर है " [30]।

---

([27]) इसे तिर्मिज़ी (2167) ने इब्ने उमर से रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही कहा है,और हाकिम ने भी अल मुस्तदरक (1/115–116) में इसे सही कहा है,और इस हदीस को रिवायत करने के बाद इस क़ायदे पर अहले सुन्नत का इज्मा नक़्ल किया है और ( कहा है कि) यह इस्लाम के कायदों में से है।

([28]) अल इस्तेग़ासा फिर्रद्दे अलल बिक्री : 331

([29]) मज्मू अल फतावा : 1/103, और देखें : अल फतावा अल कुब्रा : 4/506,इख्तियारात शैखुल इस्लाम,बाब हुक्मुल मुर्तद,दार अल क़लम बैरूत।

([30]) मज्मू अल फतावा : 1/124

इस इज्मा को उन से शैख सुलेमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब [31] जो कि हंबली उलमा में से हैं,ने अपनी किताब " तैसीरुल अज़ीजुल हमीद " में नक़ल किया है,फिर आगे लिखते हैं :

" इस इज्मा को अधिक तहक़ीक करने वालों ने भी आप से नक़ल किया है जैसे इब्ने मुफलिह ने " अल फुरू " [32] में और " अल इंसाफ " के लेखक [33] ने," अल ग़ाया " [34] के लेखक ने और अल " इक़नाअ " के लेखक [35] और उस की व्याख्या करने वाले ने [36] और इस के अतिरिक्त अनेक उलमा ने और

---

([31])आप अल्लामा,फक़ीह,उसूली,इमामे दावत शखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के पोते हैं,आप की पैदाइश 1200 हिज्री में हुई,आप ने दरइय्या के अंदर बड़े बड़ उलमा के बीच इल्मी माहौला में पले बढ़े,आप की अधिकतर किताबें हैं आप की मश्हूर लेख में " तैसीरुल अज़ीज़िल हमीद ", जो कि आप के दादा शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की किताब " अत्तौहीद " की एक अच्छी व्याख्या है,इस किताब से तीन शताबदियों से अब तक उलमा और छात्र लाभ उठा रहे हैं,तौहीद उबूदियत के अध्याय में यह किताब अधिकतर महत्व पूर्ण है,आप के बाद उलमा का इसी किताब पर भरोसा रहा है।

फिक़्ह में किताब " अल मुक़्ने " पर भी आप का तीन मोटी जिल्दों में एक हाशिया है,इस के अलावा भी आप की अधिक लिखी किताबें हैं,आप की वफात 1234 हिज्री में 33 साल की आयु में हुई।

आप की अधिक जीवनी जानने के लिये देखें शैख अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लतीफ बिन अब्दुल्लाह आले शैख की : " मशाहीर उलमाये नज्द",और आप की जीवनी आप की किताब " तैसीरुल अज़ीज़िल हमीद फी शर्ह किताब अत्तौहीद " के मुकदमे में भी है जिसे किताब की तहक़ीक करने वाले उसामा बिन अताया अल उतैबी ने लिखा है।

([32]) ( 6 ⁄ 158 ) दारुल कुतुब अल इल्मिया – बैरूत,1418 हिज्री।

([33]) अर्थाता मर्दावी, (10 ⁄ 327) तहक़ीक़ मुहम्मद हामिद अल फिक़ी,दार इहयाइत्तुरास अल अरबी– बैरूत।

([34]) अर्थात " ग़ायतुल मुन्तही फिल जम्अे बैनल इक़्नाइ वल मुन्तही" मरई अल करमी (2 ⁄ 498) तहक़ीक़ : यासिर इब्राहीम अल मज़्रूई,राइद यूसुफ अर्रूमी, प्रकाशक : दारे गरास– कायत।

([35])(4 ⁄ 285) शर्फुद्दीन,मूसा बिन अहमद अल हिजावी अल मक्दसी,तहक़ीक़ डाक्टर : अब्दुल्लाह अत्तुर्की,दारे हज्र – मिस्र।

([36])अर्थात शैख मन्सूी बिन यूनुस अल बहूती ने अपनी किताब : " कश्फुल क़िना फी शर्हिल इक़्ना " (6 ⁄ 168) प्रकाशक : दार अल फिक्र बैरूत,1402

इसे " अल क़वाते " [37] के लेखक ने भी अपनी किताब में अल फुरू के लेखक से नक़ल किया है "।

शैख सुलेमान अधिक लिखते हैं : " यह बिल्कुल सही इज्मा है जो दीन में जाना पहचाना है, चारों मस्लकों के इमामों और दूसरे उलमा ने मुर्तद के हुक्म के बयान में यह स्पष्ट किया है कि जो अल्लाह के साथ शिर्क करता है वह काफिर है,अर्थात जो अल्लाह के साथ किसी और के लिये किसी प्रकार की इबादत अंजाम दे (तो वह मुश्रिक है)। किताबो सुन्नत और इज्मा से यह साबित है कि अल्लाह से दुआ करना उस की इबादत है,इस लिये इसे अल्लाह के अतिरिक्त के लिये अंजाम देना शिर्क होगा।

शैख सुलेमान की बात खतम हुई [38]।

जिन उलमा ने इस बात पर इज्मा नक़ल किया है कि अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना दीने इस्लाम से निकाल देने वाला शिर्क है उन में शैख अब्दुल्लतीफ बिन अब्दुर्रहमान बिन हसन [39] भी शामिल हैं,आप ने लिखा है कि मुसलमानों

---

([37])अर्थात अहमद बिन अली बिन हज्र अल हैसमी अश्शफई,इन की किताब का नाम : " अल एलाम बिक़वातिइल इस्लाम " है, इस के विषय में आगे आयेगा।

([38]) तैसीरुल अज़ीज़िल हमीद फी शर्ह किताब अत्तौहीद ,बाब मिनश्शिर्क अयं यसतग़ीस बिगैरिल्लाह अव यदऊ गैरहू 427।

([39])आप शैख अब्दुल्लतीफ बिन शैख अब्दुर्रहमान बिन हसन बिन शैख मुहम्मद अब्दुल वहाब हैं,आप की पैदाइश 1225 हिज्री में इल्म और उलमा के शहर दर्ईय्या में हुई,आप ने अधिकतर उलमा से पढ़ा उन में आप के पिता शैख अब्दुर्रहमान बिन हसन,आप के चचा अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब और अपने समय में जज़ायर मुल्क के मुफ्ती शैख मुहम्मद बिन महमूद अल जज़ाइरी आदि पेश पेश हैं।

जब आप ने ज्ञान सीख लिया तो अधिकतर छात्रों ने आप से ज्ञान सीखा,उन में से सब से अधिक मश्हूर शैख अदीब और अपनी नज़्मो नस्र से दीने इलाही की रक्षा करने वाले सुलेमान बिन सहमान हैं।

आप ने अधिकतर किताबें और रसाइल लिखीं,आप की सब से मश्हूर किताब " मिस्बाहुज़्ज़लाम अला मन कज़ब अलश शैख अल इमाम " और " मिन्हाज अल तासीस फी कश्फ शुब्हात दाऊद बिन जर्जीस " हैं।

आप के रसाइल का आप के छात्र शैख सुलेमान ने " मज्मू अर्रसाइल वल मसाइल अन्नज्दिय्या " की तीसरी जिल्द में जमा कर दिया है, जब कि कुछ रिसाले इस किताब की दूसरी जिल्दों में फैले हुये हैं,इसी प्रकार कुछ रसाइल " अद्दुरर अस्सनिय्या मिनल अजविब अल नज्दिय्या " में भी शामिल हैं।

आप की वफात 1293 हिज्री में हुई।

का इस बात पर इज्मा है कि बड़ा शिर्क करने वाला काफिर है जो दलील क़ायम होने और मोतबर (ज़रियों से दीन का ज्ञान) पहुंचने के बाद अल्लाह की आयतों और रसूलों या दीन के किसी आदेश को नकारे,उदाहरण के तौर पर वह व्यक्ति जो अल्लाह के साथ नेक और बुज़ुर्गों की इबादत करे,उन्हें पुकारे,और अल्लाह अपने बंदों से इबादत और माबूद होने का जो हक़ रखता है उस में अल्लाह के साथ बुज़ुर्गों को साझी बनाये ( तो वह मुश्रिक है)।

आप ने बयान किया है कि मुसलमानों के बीच इस बात पर इज्मा है कि चारों मस्लकों ( के उलमा अपनी किताबों में ) इस मस्ले के विषय में एक बड़ा अध्याय क़ायम करते हैं जिस में उस का हुक्म बयान करते हैं,इर्तिदाद के आवश्यक्ताओं और तक़ाजों पर प्रकाश डालते हैं,शिर्क को वाज़ेह करते हैं,और यह कि इब्ने हजर [40] ने इस मस्ले पर पूरी किताब लिखी है,जिसे " अल एलाम बिक़वातिइल इस्लाम " नाम दिया है " [41]। [42]

शैख अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम लिखते हैं : " कुफ्र और इर्तिदाद की कोई क़िस्म हमारे ज्ञान में ऐसी नहीं जिस के बारे में इस प्रकार दलाइल हों जिस तरह अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करने के बारे मे मूजूद हैं जैसे उस से मना करना,उसे अंजाम देने से खबरदार करना, ऐसा करने वाले को काफिर क़रार देना और उसे हमेशा हमेश के लिये जहन्नम की धमकी देना,अब भला किताबो सुन्नत को नाफिज़ करने और उम्मत की इज्मा की पैरवी करने से कौन सी चीज़ रोक रही है, इस मस्ले पर अलग से किताबें लिखी गई हैं,अधिकतर ज्ञान वालों ने इस पर इज्मा नक़ल किया है,और कहा है कि यह दीने इस्लाम की मश्हूर तालीमात में से हैं "[43]।

---

ऊपर दी गई जानकारी संक्षिप्त में आप की किता " मिस्बाहुज़्ज़लाम " के मुक़दमें में लिखी आप की जीवनी से ली गई हैं जो कि शैख डाक्टर अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह अज़्ज़ेर की लिखी हुई है।

([40]) अर्थात अहमद बिन मुहम्मद बिन अली बिन हजर अल हैसमी अश्शफई।

([41]) यह किताब स्थाई तौर भी छपी है और डाक्टर मुहम्मद अल खमीस की तह़क़ीक़ के साथ " अल जामे फी अल्फाज़िल कुफ्र " के मज्मूआ में भी शामिल है,प्रकाशक : दारे ईलाफ,कोयत।

([42])अद्दुरर अल सनिय्या : 1: 467–468।

([43])अस्सैफुल मस्लूल अला आदिर्रसूल : 24

## अध्याय :

लाभ प्राप्त करने लिये यहां चारों मस्लकों के कुछ उलमा के कथन बयान किये जा रहे हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना और उन से दुआ मांगना बड़ा शिर्क है।

### हनफी उलमा के कथन :

शैख मुहम्मद बिन आबिद सिंदी हनफी [44] अपनी किताब " तवाइअुल अनवार शर्ह तनवीरुल अबसार मअद्दुर्रुल मुखतार " में लिखते हैं :

(कोई बंदा) यह न कहे कि : ( ऐ क़ब्र वाले ऐ फलाने! { हे ख्वाजा अजमेरी! ऐ मेरे पीरो मुर्शिद! ऐ मुईनुद्दीन चिश्ती!}मेरी आवश्यक्ता पूरी करदे) या :(इस ज़रूरत को अल्लाह से तलब कर दे ) या (अल्लाह के निकट मेरी सिफारिश कर दे ) बल्कि यह कहे कि : ( ऐ अल्लाह! जिस के फैसले में कोई उस का साझी नहीं मेरी इस ज़रूरत को पूरी कर दे)।

शैख सुनअुल्लाह बिन सुनअुल्लाह हल्बी हनफी [45] लिखते हैं : " इस समय मुसलमानों के बीच ऐसी जमाअतें ज़ाहिर हो रही हैं जिन का दावा है कि अवलिया को ज़िंदगी में और मरने के बाद तसर्रुफ की शक्ति रहती है,उन से परेशानियों और दुखों में सहायता मांगी जा सकती है,उन के ज़रिये परेशानियों

---

([44]) आप शैख,मुहद्दिस मुहम्मद आबिद बिन अली सिंदी फिर अंसारी हैं,आप की पैदाइश सिंद में हुई फिर आप ने अपने दादा के साथ में यमन गये और वहां से मदीना आये और यहां मरते दम तक रसूल ﷺ से क़रीब रहे,आप के तअल्लुक़ से शौकानी लिखते हैं : ( उन्हें इल्मे तिब में महारत थी,आप नह्व,सर्फ,फिक़्हे हनफी और उसूले फिक़्ह में अधिक जानकारी रखते थे,साथ साथ दूसरे उलूम की जानकारी भी रखते थे, और आप जल्द समझ जाते थे और आप की राय ठीक और सही होती थी),ज़िरकली लिखते हैं : ( आप एक हनफी फक़ीह और फन्ने हदीस के ज्ञानी थे),फिक़्ह और हदीस में आप की अधिकतर किताबें हैं,आप की वफात 1257 हिज्री में हुई,आप की अधिक जीवनी के लिये देखें " अल बद्र अत्ताले " लेखक : शौकानी,और " हदियतुल आरफीन फी अस्माइल मुवल्लिफीन व आसार अल मुसन्निफीन " (2/370) लेखक : इस्माईल बिन मुहम्मद अमीन अल बाबानी अल अल बगदादी।

([45]) आप सुन्उल्लाह बिन सुन्उल्लाह हलबी,मक्की,हनफी हैं,आप वाइज़,फक़ीह,मुहद्दिस और अदीब थे,हदीस में आप की एक लेख नज़्म में है,और नेक लोगों के सिलसिले में हद से बढ़ जाने का गलत ठहराने के विषय में भी इन की एक किताब है " सैफुल्लाह अला मन कज़ब अवलियाअल्लाह " आप की वफात 1120 हिज्री में हुई देखें : " मोजमुल मोअल्लिफीन " (1/483) " हदियतुल आरिफीन"(1/428)।

से छुटकरा प्राप्त की जा सकती है,इस लिये यह उन की क़ब्रों पर आकर उन से फर्याद करते हैं और दलील यह देते हैं कि यह उन की करामतें हैं!

इस बात में इफ़ातो तफ्रीत (कमी व ज़्यादती ) पाई जाती है बल्कि यह अनन्त विनाश और अनन्त अज़ाब की हामिल हैं,क्योंकि इस में हक़ीक़ी शिर्क की बू मुसद्दक़ा किताबे अज़ीज़ की खिलाफवर्ज़ी,इमामों के अक़ीदों और उम्मत के इज्मा की मुखालफत पाई जाती है,कुर्आन में आया है :

﴿وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّى وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا﴾ (सूरे निसा : 115)

तर्जुमा : जो व्यक्ति सीधा मार्ग जानने के बाद पैगंबर की मुखालफत करे और मोमिनों के मार्ग के अतिरिक्त मार्ग पर चले तो जिस ओर वह चलता है हम उसे उसी ओर चलने देंगे और (क़यामत के दिन ) नर्क में डाल देंगे और वह बुरी जगह है [46]।

बाद के हनफी उलमा में से अधिक इसी को मानते हैं जैसे इमाम अहमद सरहंदी [47],इमाम अहमद रूमी[48],शैख सुब्हान बख्श हिंदी,मुहम्मद बिन अली

---

([46])" सैफुल्लाह अला मन कज़ब अवलियाअल्लाह संक्षिप्त में 15–16"

([47]) आप की जीवनी के लिये देखें " नुज्हतुल खातिर वबहजतुल मसामे वन्नवाज़िर " (5/43–45) अब्दुल हय बिन फखरुद्दीन हुसेनी,प्रकाशक दारुल मआरिफ अल उसमानिया,हैदराबाद।

([48]) आप अहमद बिन मुहम्मद हनफी हैं जो रूमी से जाने जाते थे,खिलाफते उस्मानिया के उलमा में आप का शुमार होता है,आप ने अधिक किताबें लिखी हैं,शरई ज्ञान में आप को रूचि थी,आप की वफात 1443 हिज्री में हुई,आप की किताबों में " हाशिया अला तफ्सीरे अबिस्सऊद " " मजालिसुल अब्रार व मसालिकुल अख्यार फी शर्ह मिअति हदीस मिनल मसाबीह आदि जिक्र किये जाने के क़ाबिल हैं आप की अधिक जीवनी जानने के लिये देखें : " हदियतुल आरिफीन " : 1/157,प्रकाशक : दारुल कुतुब अल इल्मिय्या 1443 हिज्री और मोजमुल मुअल्लिफीन : 2/252

अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने की मनाही से मुतअल्लिक़ इन्हों ने अपनी किताब "मजालिसुल अब्रार व मसालिकुल अख्यार" सत्तरहवीं और सन्तान्वीं मज्लिस के तहत अच्छी बात लिखी है।

थानवी[49], मुहम्मद इसमाईल देहलवी[50],शैख मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अलूसी [51]आदि [52]।

शैख डाक्टर शमशुद्दीन अफग़ानी ने एक बड़ी किताब लिखी है जिस में उन्हों ने क़ब्र प्रस्तों के अक़ीदों को कंडम करने के लिये हनफी उलमा के कथनों को इकट्ठा कर दिया है,यह बात मशहूर है कि क़ब्र प्रस्तों के यहां सब से अधिक जिस चीज़ पर अमल है वह यही है कि वह उन क़ब्रों पर जा कर दुआ करते हैं जिन की वह ताज़ीम ( सम्मान) करते हैं और उन (दफन बुज़ुर्गों ) से मुतअल्लिक़ ग़लत अक़ीदा रखते हैं,इस पुस्तक को लेखक ने " जुहूदु उलमाइल हनफिय्या फी इब्तालि अक़ाइदिल क़बूरिय्या " नाम रखा है,यह पुस्तक तीन जिल्दों में है,इसे उन्होंने पी एच डी की डिगरी प्राप्त करने के लिये लिखा था,इस में उन्हों ने यह इशारा किया है कि क़ब्र प्रस्ती की शुरूआत,उस का

---

([49]) आप हिंदुस्तानी स्कालर हैं,"कश्शफ इस्तिलाहातिल फुनून" आप की लिखी किताब है,आप की जीवनी के लिये देखें :"नुज्हतुल खवातिर": 6/278 " हदियतुल आरिफीन"(2/326) ज़िरिक्ली की अल आलाम,अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने की मनाही से मुतअल्लिक़ उन का कलाम उन की अपनी लेख "कश्शफ इस्तिलाहातिल फुनून" : 4/146–153 में लिखा हुवा है ।

([50])मुहम्मद बिन इस्माईल बिन अब्दुल ग़नी,आप मुहद्दिस थे,आप की लिखी हुई किताबों में " इन्जाहुल हाजा फी शर्ह इब्ने माजा " शामिल है,आप की जीवनी के लिये देखें : " नुज्हतुल खातिर " और " मोजमुल मुवल्लिफीन " : 3 /133,अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने के विषय में उन का कथन उन की किताब " तक़वियतुल ईमान में मौजूद है " ।

([51]) आप महमूद शुक्री बिन अब्दुल्लाह बिन शहाबुद्दीन आलूसी हुसेनी हैं,आप की कुनियत अबुल मआली है,आप तारीख के जानकारर,अदीब और अलिमे दीन थे,इराक़ में आप ने समाज सुधार का कार्य किया,अनेक लेख के ज़रिये बिदअतियों पर हमला किया,जिस के कारण उन के दुश्मन अधिक हो गये,आप ने 52 किताबें लिखी हैं,आप की वफात 1342 हिज्री में बगदाद के अंदर हुई।

अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने की बुराई के विषय में आप की बातें आप की तफ्सीर " रूहुल मआनी फी तफ्सीरि कुर्आनिल अज़ीम वस्सबइल मसानी " में सूरतुल हज की आयत 73 की तफ्सीर में लिखा हुवा है।

([52])अल्लाह के अतिरिक्त को पुक ारने की बुराई के विषय में उन उलमा के तफ्सीली कथनों के लिये : "अल मज्मूउल मुफीद फी नक़्ज़ल क़बूरियति व नुस्रतित्तौहीद " लेखक : डाक्टर मुहम्मद अल खमीस पेज : 412– 418, प्रकाशक : दारे अतलस रियाज़, मैं ने संक्षिप्त के तौर पर इन उलमा के कथनों का केवल हवाला बयान किया है।

परवान चढ़ना और क़ब्र प्रस्तों को मुश्रिक और बुत प्रस्त प्रमाणित करने के लिये ठहराने में हनफी उलमा ने क्या कोशिशें की हैं [53]।

इस के बाद आप ने शिर्क की मनाही और उन तीस ज़रियों से इसे गलत ठहराने से मुतअल्लिक़ हनफी उलामा के थनों का बयान किया है जिन को दलील बना कर क़ब्र प्रस्त लोग अपनी दूकान चमकाते हैं [54]।

फिर लेखक ने नेक बुजुर्गों के तअल्लुक़ से उन क़ब्र प्रस्तों का हद से बढ़ जाना और उस को कंडम करने से मुतअल्लिक़ हनफी उलमा की कोशिशों की मिसालें बयान की हैं,सब से पहले नबी ﷺ की ज़ात से संबंधित उन के हद से बढ़ जाने को बयान किया है और इस दावा का जायज़ा लिया है कि आप को गैब़ का ज्ञान था और आप को संसार में अपना आदेश चलाने का अधिकार था और आप मदद की गुहार लगाने वालों की पुकार सुनते हैं,फिर आप ने उन सब दावों को बे बुन्यिाद बताया,उस के बाद नबी ﷺ के अतिरिक्त कई बुजुर्गों की शान में हद से बढ़ जाने का उदाहरण दिया जैसे अब्दुल क़ादिर जीलानी,रिफाई,बदवी आदि जैसे वह बुजुर्ग जिन की विलायत का दावा किया जाता है [55]।

रही बात अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने के हराम होने से संबंधित शाफई उलमा के कथनों की तो इब्ने हजर शाफई [56] अरबईन नववीय्या की शर्ह में एक बात लिखते हैं जिस का अर्थ है जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ की वह काफिर है [57]।

---

([53]) देखें उपर बयान की गई किताब : 353–561

([54]) देखें : पेज : 563–682

([55]) देखें : पेज : 683–897

([56]) आप अहद बिन मुहम्मद बिन अली बिन हजर अल हैसमी अश्शफई हैं जो मिस्र के फक़ीह थे,आप का शुमार बीस्वीं शताब्दी के उलमा में होता है,आप की अधिकतर किताबें हैं,आप की जीवनी के लिये देखें : अल आलाम लिज़्जिर्कली : 1/234

([57])शौकानी ने इस कथन को उन के हवाले से " अद्दुर्र अल नज़ीद फी इख्लासि कल्मितित्तौहीद " : 121,प्रकाशक : दार इब्ने खुज़ेमा,रियाज़,में नक़ल किया है,और उन से इस शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने अपनी किताब " मुफीदुल मुस्तफीद फी कुफ्रे तारिकित्तौहीद " : 305, प्रकाशक : जामया इमाम मुहम्मद बिन सऊद अल इस्लामिया–रियाज़ में नक़ल किया है।

शैख अहमद अली मिक़रेज़ी मिस्री शाफई [58] लिखते हैं :

सारी क़ौमों का शिर्क दो प्रकार का था : उलूहियत में शिर्क और रबूबियत में शिर्क,अधिकतर उलूहियत और इबादत के शिर्क में मुश्रिकीन मुबतला थे,जिस का अर्थ है बुतों,फरिश्तों,जिन्नों,पीरो मुर्शिद,नेक एवं बुज़ुर्ग की इबादत करना चाहे वह जिंदा हों या मुर्दा,वह कहते हैं कि :(हम इन को इस लिये पूजते हैं कि वे हम को अल्ला के निकट कर दें) उस के पास हमारी सिफारिश करें,अल्लाह से उन की निकटता और (उस के समीप उन के) सम्मान के बदले हमें भी अल्लाह की निकटता और सम्मान प्राप्त हो जाये,जैसा कि संसार में होता है कि जो लोग बादशाह के निकट रहने वालों,उन के रिश्ते नाते वालों की सेवा करते हैं,उन्हें बादशाह की ओर से सम्मान और निकटता प्राप्त हो जाती है।

संपूर्ण आसमानी किताबें शुरू से ले कर अंत तक इसे निरस्त करती हैं,और इस के मानने वालों को सरज़निश करती हैं और यह स्पष्ट करती हैं कि ऐसा करने वाले अल्लाह के दुश्मन हैं।

शुरू से ले कर अंत तक संपूर्ण संदेष्टा इस बात पर मुत्तफिक़ रहे हैं।

" अल्लाह ने जिन लोगों को हलाक किया उन की हलाकत का कारण यही शिर्क था " [59]।

रही बात अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करने के हराम होने से मुतअल्लिक़ हंबली उलमा के कथनों की तो पिछले पेजों में हम ने जहां इस बात पर उलमा का इज्मा नक़ल किया है कि अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना बड़ा शिर्क है वहीं शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया का कथन भी नक़ल किया है,इस मस्ले में उन की अधिक बातें निम्न लिखित प्रकार हैं :

---

([58])शैख अहमद मिस्र के उलमा में से हैं, आप ने हदीस और फिक़्ह का ज्ञान लिया,तारीख लिखने पर पूरी तवज्जोह दी,ज़िर्कली ने उन्हें मुल्के मिस्र के तारीख लिखने वाले का लक़ब दिया है,आप के लेख 200 से अधिक हैं,दिमश्क़ में क़ाज़ी का ओहदा दिया गया लेकिन उन्हों ने क़बूल करने से मना कर दिया,आप की वफात 845 हिज्री में हुई,आप की जीवनी के लिये देखें : ( इम्बाउल गमर),(अल बद्र अत्ताले) लेखक : शौकानी, (अज़्ज़ोउल्लाम) लेखक : सखावी, (अलआलाम) लेखक : ज़िर्कली : 1/177, ( मोजम अल मुअल्लिफीन) : 1/204।

([59])तज्रीद अत्तौहीद अल मुफीद : 52–53,तहक़ीक़ : अली बिन मुहम्मद अल इमरान,प्रकाशक : दारे आलम अल फवाईद–मक्का।

" हर वह व्यक्ति जो किसी जीवित अथवा नेक आदमी के बारे में हद से बढ़ जाता है उस के लिये किसी प्रकार की उलूहियत को प्रमाणित करता है,जैसे यह कहता है कि हर वह जीविका जो फलाने से न मिले वह मुझे नहीं चाहिये,या जब कोई जानवर ज़बह करे तो यह कहे :(मेरे आक़ा के नाम से )या उस के सामने सज्दा करे चाहे उस के लिये करे या किसी और के लिये,या अल्लाह ताला को छोड़ कर उस से दुआ करे,जैसे यह कहे कि : (ऐ मेरे फलाने आक़ा! मुझे माफ कर दें,या मुझ पर दया कर, या मेरी सहायता करे, या मुझे जीविका दे,या मुझे पनाह दे,या मैं ने तुझ पर भरोसा किया,या तू ही मेरे लिये काफी है,या मैं तेरी ही कफालत में हूं ),या इस प्रकार के दूसरे अक़्वालो अफआल जो कि रुबीबियत की ऐसी विशेषतायें हैं जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिये लायक़ नहीं,यह सब शिर्क और गुमराही हैं,ऐसा करने वाले से तोबा करवाई जायेगी,अगर तोबा किया तो ठीक है वरना उसे क़त्ल कर दिया जायेगा,क्योंकि अल्लाह ने रसूलों को जिस काम के लिये भेजा और जिस कारण किताबें उतारीं वह यह है कि हम केवल एक अल्लाह की पूजा करें जिस का कोई साझी नहीं, और हम अल्लाह के साथ किसी और को पूज्य न बनायें "[60] ।

आप अधिक लिखते हैं : " जो व्यक्ति यह विश्वास रखे कि कोई मुर्दा आदमी चाहे वह नफीसा हो या { ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती हो या शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी हो,या ग़ौस हो} या कोई और व्यक्ति डरे हुये इंसान को पनाह देता,क़ैदी को रिहा करता है जो की आवश्यक्ता की चीज़ है,तो ऐसा व्यक्ति गुमराह और मुश्रिक है,क्योंकि अल्लाह ताला ही केवल पनाह देता है उसे पनाह नहीं दी जाती,अल्लाह से अपनी ज़रूरतें तलब करने का मार्ग यह है कि सच्चे दिल से इख्लास के साथ उस से दुआ की जाये,जैसा कि अल्लाह ताला फर्माता है :

जब तुम से मेरे बंदे मेरे बारे में पूछें तो मैं तो क़रीब हूं,जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उस की दुआ को क़बूल करता हूं।

तर्जुमा : "(ऐ पैगम्बर!) जब तुम से मेरे बंदे मेरे बारे में पूछें तो मैं तो पास में हूं जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उस की दुआ क़बूल करता हूं ) सूरतुल बक़रा : 186 [61] ।"

---

([60]) " अर्रिसाला अस्सनिय्या ",यह किताब " अल वसिय्यतुल कुब्रा " के नाम से भी जानी जाती है। यह किताब " मज्मू अल फतावा " : 3 / 363 – 430 में पूरे तौर पर मौजूद है,ऊपर की लाइनें उसी के पेज 395 से नक़ल की गई हैं।

([61]) मज्मू अल फतावा : 27 / 490

" इब्नुल क़य्यिम [62] मदारिजुस्सालिकीन " के अंदर शिर्क की क़िस्मों के विषय में लिखते हुये कहते हैं : " शिर्क की एक क़िस्म है : मुर्दों से ज़रूरत तलब करना,उन से सहायता मांगना और उन की ओर जाने का (उन से सहायता आदि मांगने के लिये) इरादा करना,यही पूरे संसार में शिर्क का मूल कारण है,क्योंकि मरे हुये का अमल समाप्त हो जाता है,वह अपने लिये भी लाभ और हानि की शक्ति नहीं रखता है,तो दूसरे को कैसे लाभ पहुंचा सकता है जो उस से मदद की गुहार लगाता और सहायता का सवाली होता है,या उस से दुआ करता है कि अल्लाह के समीप उस की सिफारिश कर दे,यह सिफारिश करने वाले और जिस के लिये सिफारिश की जा रही है दानों से नानादानी का नतीजा है,क्योंकि अल्लाह के समीप उस की इजाज़त के बिना वह सिफारिश कर ही नहीं सकता,और अल्लाह ने उस व्यक्ति से मदद करने और उस के सामने हाथ फैलाने को अपनी इजाज़त (से देने) का ज़रिया नहीं बनाया,बल्कि पूर्ण रूप से तौहीद से (सिफारिश की) इजाज़त मिलती है,पता चला कि यह मुश्रिक ऐसा काम करता है जो (सिफारिश करने वाले को) अल्लाह की इजाज़त से महरूम कर देता है,वह उस व्यक्ति की तरह है जो किसी ज़रूरत के लिये ऐसी चीज़ से सहायता मांगता है जो उस के प्राप्ति में रुकावट बने,और यही हाल संपूर्ण मुश्रिकों का है।

मरा हुवा व्यक्ति उस का मुहताज होता है जो उस के लिये दुआ करे,उस के लिये दया और माफी का सवाली हो,जैसा की नबी ﷺ ने हमें हुक्म दिया है कि

---

([62]) आप मुहम्मद बिन अबू बक्र बिन साद अज़्ज़रई फिर अद्दिमश्क़ी हैं,आप इब्नुल क़य्यिम अल जौज़िय्या के नाम से जाने जाते हैं,आप का शुमार आठवीं शताब्दी के उलमा में होता है,आप ने अपने शैख इब्ने तैमिया को लाज़िम पकड़ा यहां तक कि 728 में शैख वफात पा गये,आप शैख के बड़े शागिर्दों में से थे,उन के बाद आप ने दावत और इल्मी जिहाद का झंड़ा ऊंचा किया यहां तक कि 751 में आप की वफात हो गई,आप अधिक ज्ञान वाले थे,आप की हुज्जत मज़बूत थी,आप मसाइल निकालने में महारत रखते थे,आप की किताबें अधिकतर हैं,और आप की किताबें संपूर्ण लोग क़बूल करते हैं,बल्कि आप के बाद आने वाले लोंगों ने इन्हीं किताबों पर भरोसा किया,आप ने इस्लामी अक़ीदा की अधिक सहायता की,नज़्म और नस्र हर प्रकार से बिदअतियों का रद किया,खास कर फलसफियों,क़ब्र प्रस्तों,तावील करने वालों और सूफियों पर रद किया,अल्लाह आप पर अधिक कृपा करे,आप और आप के शैख ने नये सिरे से दीन को प्रकाशित किया,आप ने अपने जीवन को उम्मत के संवारने में लगाया।

आप की जीवनी के लिये देखें : इब्ने इमाद की "शज़रातुज़्ज़हब", इब्ने रजब की " ज़ेल तबक़ात अल हनाबिला " और आप की जीवनी पर सब से जामे किताब शैख बकर बिन अब्दुल्लाह अबू ज़ैद की है जिस का नाम " इब्नुल क़य्यिम अल जो ज़िय्या हयातुहू व आसारुहू " है।

जब हम मुसलमानों के क़ब्रस्तान में जायें तो उन क लिये दया और क्षमा की दुआ करें, मुश्रिकीन इस का उलटा करते हैं,वे मरे हुये लोगों की ज़्यारत उन की इबादत करने,उन से सहायता मांगने के लिये करते हैं,उन की क़ब्रों के साथ उन बुतों जैसा करते हैं जिन की पूजा की जाती है,उन क़ब्रों के पास जाने को हज का नाम देते हैं,वहां बैठक करते हैं,और मुजावरी करते हैं,इस प्रकार वह सत्य पूज्य के साथ शिर्क और उस के दीन को बदलने (का जुर्म) तो करते ही हैं,साथ ही एकेश्वरवादियों से दुश्मनी रखते और उन पर मुर्दों की शान में गुस्ताखी का इल्ज़ाम लगाते हैं,**जब कि वह स्वयं शिर्क कर के अल्लाह की शान में गुस्ताखी करते हैं**,और अल्लाह के इन एकेश्वरवादियों की शान में भी उन की बुराई कर के और उन से दुश्मनी रख कर (गुस्ताखी करते हैं)जो अल्लाह के साथ किसी को साझी नहीं बनाते बल्कि मुश्रिकों की बुराई बयान करते हैं,क्योंकि वह इस गुमान में रहते हैं कि (यह अवलिया) उन के इस शिर्क वाले काम से प्रसन्न हैं,उन्हों ने ही इस का आदेश दिया है,और वह इस कारण उन से दोस्ती रखते हैं,यही वह लोग हैं जो हर जगह और हर ज़माने में रसूलों और तौहीद के दुश्मन रहे हैं,उन के पैरूकारों की तादाद अधिकतर है! अल्लाह के खलील इब्राहीम عليه السلام को देखिये वह दुआ करते हैं :

तर्जुमा : (मुझे और मेरी अवलाद को इस बात से कि बुतों की पूजा करने लगें बचाये रख ऐ पालने वाले! इन्हों ने अधिकतर को गुमराह किया है) (सूरे इब्राहीम :35–36)।

बड़े शिर्क के इस जाल से वही व्यक्ति बच सकता है जो खालिस तौहीदे इलाही पर बाक़ी रहता है,अल्लाह के लिये मुश्रिकों से दुश्मनी रखता है,उन से नाराज़गी मोल ले कर अल्लाह की निकटता प्राप्त करता है,केवल एक अल्लाह को अपना वली,माबूद और आक़ा मानता है,अल्लाह ही के लिये अपनी मुहब्बत, डर, उम्मीद, नम्रता,अल्लाह पर भरोसा,उस से मदद मांगना,इल्तिजा और उस की चाहत को खालिस रखता है,उस के आदेश का पालन करता है,उस की प्रसन्नता चाहता है,जब मांगता है तो केवल अल्लाह से और सहायता चाहता है तो केवल अल्लाह से,जब कोई अमल करता है तो अल्लाह के लिये अर्थात वह अल्लाह के लिये अल्लाह की तौफीक़ से और अल्लाह की मदद के सहारे (अपना जीवन व्यतीत करता है) [63]।

---

([63]) " मदारिजुस्सालिकीन " मन्ज़िलतुत्तौबा : 605

आप रहिमहुल्लाह ने क़ब्र वालों के सम्मान से खबरदार करने से संबंधित अपनी उत्तम पुस्तक (इग़ासतुल्लहफान मिन मसाइदिश्शैतान) में बड़ी लंबी बात की है,जिस में क़ब्र वालों के सम्मान और उन की शान को हद से बढ़ाने की तारीखी बुन्यिादों को लिखा है,और उस के मज़ाहिर और इलाज के बारे में भी बयान किया है,अल्लाह उन पर अधिक कृपा करे।[64]

इमाम अबुल वफा अली बिन अक़ील हंबली [65] लिखते हैं :(निःसंदेह जो क़ब्रों का सम्मान करता है मुर्दों से सहायता की गुहार लगाता है और यह कहता है कि ऐ मेरे आक़ा व मौला अब्दुल क़ादिर! (मेरा यह काम कर दें ) वह उन अमलों के कारण काफिर है,और जिस ने किसी मुर्दे को पुकारा और मदद के लिये दुआ की वह भी काफिर है)[66]।

आप अधिक कहते हैं : (जब जाहिलों और तुच्छ लोगों को शरई वाजिबात कठिन लगने लगें तो वह शरीअत की तालीमात से मुंह फेर कर बनावटी तालीमात का सम्मान करने लगे जिन को उन्हों ने अपने लिये गढ़ा था,इस प्रकार यह तालीमात उन के लिये सरल हो गईं क्योंकि उन (पर अमल करने के लिये)किसी दूसरे की मातहती की आवश्यक्ता न थी,ऐसे लोग मेरे समीप अपने उन अमलों के कारण काफिर हैं,उदाहरण के तौर पर वे क़ब्रों का सम्मान करते हैं और शरीअत के मना करने के बाद भी क़ब्रों की ताज़ीम वाला कार्य करते हैं जैसे क़ब्रों पर चिराग जलाना,उन्हें चूमना,उन पर इमारत बनाना,मुर्दों से सहायता की गुहार लगाना,उन के नाम पे खत लिखना : (हे मेरे मौला! मेरे

---

([64])मैं ने एक मक़ाला लिखा है जिस का उन्वान है : "तलाइबुश्शैतान बिउकूलिल क़बूरिय्यीन" (अर्थात क़ब्र प्रस्तों की बुद्वि से शैतान का खिलवाड़),इस में बहस किये गये मस्ले के विषय में इब्ने क़य्यिम के कथनों को जमा किया गया है,इसे तर्तीब दे कर इस की फहरिस्त बनाई गई है,यह मक़ाला इन्टरनेट पर लेखक के पेज पर मौजूद है,अल्लाह ताला इसे लाभदायक बनाये।

([65])आप इमाम,अल्लामा,ज्ञान के समुद्र,हंबलियों के शैख,और अनेक किताबों के लेखक हैं,आप की पैदाइश 431 हिज्री में हुई,आप की लिखी हुई किताबों में " अल फुनून " भी है जो 400 जिल्दों में है,आप को इल्मे कलाम से दिलचस्पी थी,इस लिये कुछ सिफतों की तावील करने लगे फिर उन्हों ने स्वयं अपनी तोबा की साक्षी दी,उस के बाद सिफात की तावील करने वालों के रद में किताब लिखी,अपनी किताब " अल फुनून " में उन्हों ने उन अहले कलाम सूफिया की बुराई बयान की है जो इस्लामी शरीअत से निकल चुके हैं,उन का यह कथन इब्ने तैमिया ने अपनी किताब " दरओ तआरुज़ अल अक़्ल वन्नक़्ल " 8/61–68 में नक़ल किया है।

([66])इन से इस कथन को शैख सुल्तान मासूमी ने अपनी किताब "हुक्मुल्लाह अलवाहिद अस्समद" : 44 में नक़ल किया है,प्रकाशक दार अल आस्मा– रियाज़।

साथ ऐसा और वैसा कर दे)क़ब्र की मिट्टी को तबर्रुक के तौर पर लेना,क़ब्रों पर खुशबू छिड़कना और लात एवं उज़्ज़ा के पुजारियों की पैरवी करते हुये पेड़ पर(कपड़ों के चीथड़े लटकाना [67] ।)

शैख अब्दुल्लाह अबा बतीन [68] फर्माते हैं : मैं ने क़ाज़ी अबू याला [69] के मज्मूआ फतावा में देखा है कि उन से उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो (हे मुहम्मद और हे अली ) की पुकार लगाता है तो आप ने फर्माया : यह जायज़ नहीं है क्योंकि यह दोनों ही मर चुके हैं [70] ।

रही बात अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ मांगने के हराम होने के विषय में मालिकी उलमा के कथनों की तो इमाम मुहम्मद बिन अहमद कुर्तुबी मालिकी अपनी तफ्सीर अल जामे लि अहकामिल कुर्आन के अंदर फर्माने इलाही :

﴿إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ﴾ سورة فاطر :14

की तफ्सीर में लिखते हैं : अल्लाह के फर्मान :

﴿إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ﴾

---

([67]) इस कथन को इन से इब्नुल क़य्यिम ने अपनी किताब " इग़ासतुल लहफान मिन मसाइदिश्शैतान " :352–353 में नक़ल किया है और उन से शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने अपनी किताब : "मुफीदुल मुस्तफीद फी हुक्म तारिकित्तौहीद" :301–302 में इस कथन को बयान किया है,प्रकाशक जामअतुल इमाम मुहम्मद बिन उऊद अल इस्लामिया रियाद।

([68]) आप के बारे पहले बताया जा चुका है।

([69]) आप हंबलियों के शैख,मुफ्ती,क़ाज़ी मुहम्मद बिन अल हुसेन बिन मुहम्मद बगदादी,हंबली इब्नुल फर्रा हैं,अपने ज़माने में इराक़ के आलिम थे,आप की किताबों में " इब्तालु त्तावीलात फी अख्बारिस्सफात " " और अर्रद्द अलल जहमिया " आदि महत्व पूर्ण हैं,आप की वफात 458 हिज्री में हुई,अल्लाह आप पर अधिक कृपा और दया करे।

"सियर आलाम अन्नुबला 18/89 " से संक्षिप्त के साथ,आप की जीवनी "तारीखे इस्लाम " और आप के पुत्र मुहम्मद बिन अबू याला अल फर्रा की किताब "तब्क़ातुल हनाबिला " में भी मौजूद है।

([70]) " तासीसुस्तक़्दीस फी कश्फे तल्बीस दाऊद बिन जर्जीस " 148

का अर्थ यह है कि यदि तुम कठिनाइयों और परेशानियों में उन से मदद की गुहार लगाओगे तो वह तुम्हारी पुकार को नहीं सुनेंगे,क्योंकि वह जमादात की (की तरह) हैं जो न तो देख सकते हैं और न ही सुन सकते हैं और इस लिये भी कि हर सुनने वाला बोल नहीं सकता।

क़तादा कहते हैं कि (आयत का) अर्थ यह है कि अगर वह सुन भी लें तो तुम्हें लाभ नहीं पहुंचा सकते।

एक अर्थ यह भी बताया गया है कि यदि हम उन्हें बुद्वि और जीवन दे दें और वे तुम्हारी पुकार सुन लें तो वह तुम से अधिक अल्लाह के फर्मांबर्दार साबित होंगे और इस कुफ्रिया (अमल पर ) तुम्हारी (तलब) पूरी नहीं करेंगे।

﴿ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ﴾

अर्थात यह इन्कार कर बैठेंगे कि तुम ने उन की इबादत की और तुम से अपने आप को बरी करेंगे।

यह भी सही है कि इस से मुराद बुद्वि रखने वाले पूज्य हों जैसे फरिश्ते,जिन्नात,पैग़म्बर औ शयातीन,अर्थात यह इस बात से इन्कार करेंगे कि तुम्हरा अमल सत्य है और उन्हों ने तुम को आदेश दिया कि तुम उन की पूजा करो जैसा कि अल्लाह ताला ने ईसा के विषय में हमें बताया है :

(ईसा कहेंगे) मेरे लिये मुनासिब नहीं था कि मैं ऐसी बात कहता जिस का मुझे कुछ हक़ नहीं। सुरतुल माइदा : 116

यह भी सत्य है कि इस में अनेक बुत भी शामिल हों,जिस का अर्थ यह होगा कि अल्लाह उन के अंदर जान डाल देगा ताकि वह यह बता सकें कि वे इबादत के हक़दार नहीं।

﴿وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ﴾

वह अल्लाह अज़ीज़ और बरतर है जो (हर चीज़ से बाखबर है ) अर्थात अल्लाह से अधिक कोई भी अल्लाह की मख्लूक़ को नहीं जानता,इस लिये मख्लूक़ के बारे में उस की तरह तुम्हें कोई खबर नहीं दे सकता। बात पूरी हुई

अल्लामा अब्दुल हमीद बिन बादीस जज़ाइरी [71] जो कि बाद के मालिकी उलमा में से हैं –अल्लाह के फर्मान :

﴿وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ﴾ سورة الفرقان : 68

की तफ्सीर में लिखते हैं :

तौहीदे इलाही की अधिक स्पष्टता।

जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारा उस ने उस की इबादत की।

कुर्आने करीम ने (अनेक स्थान पर) इबादत को दुआ कहा है क्योंकि दुआ इबादत है,इस लिये इबादत को उस की एक क़िस्म (दुआ ) कहा गया है,इस एक क़िस्म को पूरी इबादत का नाम दे देदिया गया है,क्योंकि दुआ इबादत का मग़्ज और उस का निचोड़ है,इबादत गुज़ार इंसान माबूद के सम्म्सन और उस

---

([71]) आप शैख और दाई अर्थात दावत देने वाले अब्दुल हमीद बिन मुस्तफा बिन मक्की बिन बादीस हैं,आप का शुमार चौदहवी सदी के शुरू के जज़ाइरी दाई में होता है,आप जज़ायर और तोनुस के अनेक शैखों से ज्ञान प्राप्त किया,फिर तालीम,दावत,और बिदअत का मुक़ाबला करने में लग गये,खास कर सूफियों पर रद किया,यहां तक कि सुफिया ने आप को जान से मार डालने का पलान किया परन्तु अल्लाह ने आप को बचा लिया,आप ने जरीदतुश्शहाब जारी किया,और कुछ दीनी परचों में आप की हरकत चर्चित थी,अधिकतर दाइयों ने आप से लाभ उठाया,जैसे मुबारकअल मेली,फुज़ेल अलवर तीलानी,मुहम्मद सईद अज़्ज़ाहिरी,अहमद हमानी,मुहम्मद अस्सालेह बिन अतीक़ और मुहम्मद अस्सालेह रमज़ान।

आप के लेख को जमा करके किताबों की शक्ल में छापा गया,उन किताबों में "मबादी अल उसूल", "अल अक़ाइद अल इस्लामिया",

"अत्तफ्सीर अव मजालिसुत्तज़्कीर " "रिजालुस्सलफ व निसाउहु" और " जवाब अन सवाल अन सूये मक़ाल " इस अंतिम मक़ाले में आप ने इब्ने अलीवा अत्तुरकी पर रद किया है,अंतिम तीन उन्वान पर शैख के लेख 6 जिल्दों में जमा किये गये हैं,जिन को जज़ायर की वज़ारत बराये दीनी उमूर ने छापा है।

इब्ने बादीस ने अपना जीवन,समय और कोशिश को फ्रांसी कब्ज़ा से जज़ायर को आज़ाद करने में लगा दिया,अपनी ज़िदगी ज्ञान और दावत के मार्ग में व्यतीत कर दी,यहां तक कि अरब के पश्चिम में आप का शुमार दावत के इमामों में होने लगा,11 रबीउस्सानी 1358 हिज्री को आप वफात पागये,अल्लाह आप पर कृपा और दया करे।

जीवनी का हवाला : "उसूलुद्दावा अस्सलफिय्या इन्दल अल्लामा अब्दुल हमीद बिन बादीस" लेखक लेखक : शैख मुहम्मद हाज ईसा अल जज़ाइरी।

की शक्ति के सामने अपनी तुच्छता और विनम्रता को प्रकट करता है,उस की मालदारी और बेनियाज़ी के सामने अपनी फक़ीरी को ज़ाहिर करता है,उस की शक्ति के सामने अपनी बेबसी और उस के सामने उस की इज़्जत और अपनी नम्रता को दर्शाता है,इन सब चीज़ों का इज़्हार अपनी जुबान से दुआ,पुकार और हाजत तलबी के ज़रिआ करता है,दुआ ही वह चीज़ है जो उन सब चीज़ों पर दलालत करती है,इसी लिये वह इबादत का मग्ज़ कहलाती है,सुन्नते पाक में इस से आगाह किया गया है,नोमान बिन बशीर फर्माते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फर्माया : "दुआ ही इबादत है"। फिर आप ने यह आयत तिलावत की :

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ سورة غافر :60

तर्जुमा : तुम्हारे रब ने कहा है कि तुम मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी (दुआ ) क़बूल करूंगा।

इस हदीस को अहमद,तिर्मिज़ी और अबूदावूद,नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

पता चला कि अक़्ली और नक़्ली दोनों ही दलीलों का इस पर इत्तिफाक़ है कि दुआ इबादत है,तो जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ की उस ने उस की इबादत की,अगर वह अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करने को इबादत का नाम न देता हो तो उस के नाम देने या न देने से सत्यता नहीं बदलती,क्योंकि एतबार तो शरीअत के उस नाम का ही होगा जिस का ज़िक्र उपर की दोनों हदीसों में आया है न कि उस नाम का जिस से वह दुआ को मौसूम करे।

तंबीह और रहनुमाई :

लोगों की दुआओं में अधिकतर हम सुनते हैं : (हे पालनहार और पीरो मुर्शिद ) (हे मेरे पालनहार और मेरे रब के अवलिया ) यह अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना है,ऐ मुस्लिम व्यक्ति तुम इस से खबरदार रहो,केवल एक अल्लाह से दुआ करो जो तुम्हारा पालनहार और पैदा करने वाला है,शिर्क का बुरा और नास हो। खतम हुवा [72]

([72]) मजालिसुत्तज़्कीर मिन कलामिल हकीमिल खबीर : 299–300,यह किताब जज़ायर से छपी है।

अल्लामा मुबारक अलमीली अल मालिकी अल जज़ाइरी [73] वह भी बाद के मालिकी उलमा में से हैं,अपनी किताब (रिसाला अल शिर्क व मज़ाहिरुहु) में फर्माते हैं :

अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने का हुक्म

अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना  खुला हुवा शिर्क और घिनाउना कुफ्र है,इस की दो क़िस्में हैं :

**पहली क़िस्म :**

अल्लाह के साथ अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना,जैसे यह कहना : ( ऐ मेरे रब और ऐ मेरे पीर,ऐ मेरे रब और ऐ मेरे दाता,ऐ अल्लाह और उस के लोग,ऐ अल्लाह और ऐ मेरे आक़ा अब्दुल क़ादिर),मैं ने अधिक लोगों से सुना है कि वह लोगों को अधिकतर यह कहते हुये सुनते हैं कि ऐ मेरे रब! ऐ मेरे आक़ा युसुफ! मुझे क्षमा कर दें।

इसे शिर्क कहना स्पष्ट है क्योंकि दुआ करने वाला अल्लाह के साथ अल्लाह के अतिरिक्त को भी वाव (हरफे अत्फ) ला कर या उसे न ला कर शामिल करता है जिस से यह लाज़िम आता है कि इस के बाद जो नाम आता है वह उस से पहले वाले के साथ हुक्म में शामिल रहता है, और जो हुक्म यहां संयुक्त है वह है इबादते दुआ।

**दूसरी क़िस्म :**

अल्लाह को छोड़ कर अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना जैसे यह कहना : { ऐ मुईनुद्दीन चिश्ती! मेरी मदद कर,ऐ ग़ौस! मेरी फर्याद सुन ले} खत्म हुवा [74]

---

([73]) आप शैख मुबारक बिन मुहम्मद इब्राहीम अलमेली हैं,आप ने बचपन से ही बड़े उलमा से ज्ञान प्राप्त किया,उन में शैख अब्दुल हमीद बादीस भी शामिल हैं,फिर आप 1931 हिज्री में जज़ायरी मुस्लिम उलाा कमेटी के महत्वपूर्ण मिम्बर बने,सहाफत में आप का अहम रोल था,फ्रांसी क़ब्ज़ा के दौरान आप को अधिक कठिनाइयों से गुज़रना पड़ा फिर भी आप ने दावत के काम को नहीं छोड़ा,आप की अधिकतर किताबें हैं,उन में सब से अधिक मश्हूर "अश्शिर्क व मज़ाहिरुहु" है,आप की वफात 1945 ईसवी में हुई।

जीवनी ली गई है : "अश्शिर्क व मज़ाहिरुहु" की तहक़ीक़ के मुक़दमे से,तहक़ीक़ : शैख अबू अब्दुर्रहमान महमूद जज़ायरी,प्रकाशक : दारुर्राया– रियाज़।

([74]) रिसाला अश्शिर्क व मज़ाहिरुहु : 281–282 संक्षिप्त में तहक़ीक़ : शैख अबू अब्दुर्रहमान महमूद जज़ायरी,संशोध : बकर अबू ज़ैद,प्रकाशक : दारुर्राया– रियाज़।

आप अधिक कहते हैं : अगरचे मुसलमानों की किताब (क़ुर्आन में) अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करने की अधिक बुराई बयान की गई है और नबी ﷺ ने इस से खबरदार किया है,फिर भी उन के बीच यह बुराई अधिक आम है,यहां तक कि जाहिल गंवार और उन के आस पास रहने वाले लोग एक अल्लाह को पुकारने पर अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करने को तर्जीह देते हैं,(वे अपने इस अमल पर) दलील देते हुये अपनी कहानियों का हवाला देते हैं,जिन का इहाता करना थकावट का कारण और असंभव है।[(75)]

अल्लामा तक़ीउद्दीन हिलाली मालिकी [(76)] यह भी बाद के मालिकी उलमा में से हैं,अपनी किताब " अल हदियतुल हादिया इलत्ताईफा अत्तीजानिय्या " में लिखते हैं : " ऐ तौफीक़ पाने वाले क़ारी! आप के सामने यह स्पष्ट हो चुका है कि मदद तलब करना दुआ है,और दुआ इबादत का गूदा है,जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त से सहायता मांगता है वह शिर्क करता और अल्लाह के साथ अल्लाह के अतिरिक्त की इबादत करता है,जो व्यक्ति यह गुमान करता है कि वह या उस के अतिरिक्त कोई और मख्लूक़ इस बात की शक्ति रखता है कि उस से मदद तलब करने वालों की मदद कर सके,मजबूर की पुकार सुन सके,दुख दूर कर सके,लोगों को ज़मीन पर खलीफा बना सके,तो उस ने कुर्आनो सुन्नत की रू से अल्लाह के साथ दूसरे को पूज्य बनाया,सुरे अन्नमल की इन आयतों में विचार करें :

---

([75])"रिसाला अश्शिर्क व मज़ाहिरुहु : 286

([76]) आप अल्लाहमा,मुहम्मद,जुबान के मश्हूर ज्ञानी,बड़े कवी,मराकशी मुसाफिर,सलफी आलिम,डाक्टर मुहम्मद तक़ी हैं,जो मुहम्मद तक़ीउद्दीन हिलाली से मश्हूर हैं,आप ने अधिक शैखों से ज्ञान प्राप्त किया है,उन में आप के मिस्री उस्ताद शैख अब्दुज़्ज़ाहिर अबुस्समह और शैख रशीद शामिल हैं,आप एक साल तक मिस्र में रहे और सलफी अक़ीदे की दावत देते रहे,और शिर्क और नास्तिकता का मुक़ाबला करते रहे,फिर आप ने हिंदुस्तान का सफर किया जहां शैख अब्दुर्रहमान बिन अब्दुर्रहीम मुबारकपूरी साहबे " जामे तिर्मिज़ी शर्ह तुहफतुल अहवज़ी " से हदीस का ज्ञान प्राप्त किया, इराक़ के उलमा से ज्ञान प्राप्त किया,फिर इल्मी और दावती कामों में धीरे धीरे आगे बढ़ते रहे यहां तक कि आप ने जामिया इस्लामिया मदीना के अन्दर 1974 हिज्री तक पढ़ाते रहे फिर आप अपने मुल्क मराकश लौट गये और वहां 25 शव्वाल 1407 हिज्री अपनी ज़िदगी की अंतिम सास तक तौहीदो सुन्नत की दावत देते रहे।

अक़ीदा और फिक़्ह के विषय में 20 से अधिक आप की किताबें हैं,उन में " अल क़ाज़ी अल आदिल फि हुकमिल बिनाये अलल क़बूर " और " अल इल्म अल मासूर वल इल्म अल मश्हूर वल्लिवा अल मन्शूर फी बिदइल क़बूर " भी शामिल हैं,अल्लाह आप पर कृपा और दया करे।

तर्जुमा : उन पर एक (खास प्रकार) की बारिश बरसाई,उन धमकाये गये लोगों पर बुरी वर्षा हुई। तू कह दे कि संपूर्ण प्रशंसा अल्लाह ही के लिये है और उस के बुर्जुग बंदों पर सलाम है। क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिन्हें यह लोग साझी बनाते है। भला बताओ तो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया?किस ने आसमान से बारिश बरसाई? फिर उस से हरे भरे खुश्नुमा बगीचे उगा दिये?उन बाग़ों के पेड़ तुम कदापि नहीं उगा सकते,क्या अल्लाह के साथ और कोई भी माबूद है? बल्कि यह हट जाते हैं (सीधे मार्ग से)। क्या वह जिस ने ज़मीन को ठिकाना बनाया और उस के बीच नहरें जारी कीं और उस के लिये पहाड़ बनाये और दो समुद्रों के बीच रोक बनादी क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद भी है? बल्कि उन में से अधिक कुछ जानते ही नहीं। बेबस की पुकार को जब कि वह पुकारे कौन क़बूल कर के कष्ट को दूर कर देता है? और तुम्हें ज़मीन का खलीफा बनाता है,क्या अल्लाह ताला के साथ और माबूद है? तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो। क्या वह जो तुम्हें खुश्की और तरी की अंधेरों में मार्ग दिखाता है और जो अपनी कृपा से पहले ही खुशखबरियां देने वाली हवायें चलाता है,क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद भी है? जिन्हें यह साझी मानते हैं इन सब से अल्लाह अधिक ऊपर है। क्या वह जो मखलूक़ को पहली बार पैदा करता है फिर उसे लौटायेगा और जो तुम्हें आसमानो ज़मीन से रोज़ियां दे रहा है,क्या अल्लाह के साथ कोई और कोई माबूद है?कह दीजिये कि यदि सच्चे हो तो अपनी दलील लाओ।

अल्लाह ताला ने इन आयतों में ऐसी बातों को बयान किया है जो उस के साथ खास हैं और उन पर उस के अतिरिक्त किसी को शक्ति नहीं,उन में बेकसो मजबूर की पुकार सुनना,मुसीबत और परेशानी को दूर करना,ओहदा और मन्सब देना,खुश्की और तरी की अंधेरों में मार्ग दर्शन करना और (वर्षा से पहले) हवा भेजना भी शामिल हैं,तो जो व्यक्ति इन में से किसी चीज़ को किसी मखलूक़ की ओर मंसूब करता है (और यह विश्वास रखता है )कि वही ज़ात स्व्यं इसे अंजाम देने वाली है तो ऐसा करने वाला अल्लाह के साथ शिर्क करता है और उस के साथ किसी और की पूजा करता है।
जान लीजिये कि सब मुसलमानों पर यह अनिवार्य है कि वह रुबीबियत,उलूहियत और अस्मा व सिफात में अल्लाह को एक जानें,यह तौहीद की तीन क़िस्में हैं,जिस ने इन का या इन में से किसी एक का इन्कार किया वह काफिर है [77]।

---

([77]) अल हिदायतुल हादिया इलत्ताइफा अत्तिजानिया : 61

अल्लामा,शैख और मुफस्सिर मुहम्मद अमीन बिन मुहम्मद मुख्तार शिन्क़ीती [78] वह भी बाद के मालिकी उलमा में से हैं,फर्माने इलाही :

﴿ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ﴾ سورة المؤمنون : 117

की तफ्सीर में लिखते हैं : सब से बड़ा काफिर वह है जो अल्लाह के साथ ऐसे माबूद को पुकारता है जिस ( को पुकारने की) कोई दलील उस के पास नहीं,ऐसे व्यक्ति के बारे में कामयाबी की मनाही इस बात पर दलील है कि वह हलाक होगा और जहन्नम में जायेगा,अल्लाह ने अधिक आयतों में अपने साथ किसी और को पुकारने से मना किया है,जैसे अल्लाह का यह कथन :

तर्जुमा : अल्लाह के साथ किसी और को उपासक न बनाओ। मैं उस की ओर से तुम को सत्य मार्ग बताने वाला हुं।

और यह फर्मान :

तर्जुमा : अल्लाह के साथ किसी और को (माबूद समझ कर) न पुकारना,उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ फना होने वाली है। उसी का हुक्म है और उसी की ओर तुम लौट कर जाओगे।

और अल्लाह का फर्मान है :

तर्जुमा : अल्लाह के साथ कोई और उपासक न बनाना कि मलामतें सुन कर और बेसहारा हो कर बैठे रह जाओगे।

इस प्रकार की आयतें अधिकतर हैं। खत्म हुवा

आप सुरे हुज्रात की दूसरी आयत की तफ्सीर में लिखते हैं :

" वह हुक़ूक़ जो अल्लाह ताला के लिये खास हैं और जो उस की रुबूबियत की विशेषताओं में से हैं,उन में यह भी है कि बंदे को जब दुख और परेशानी का सामना हो जिन को अल्लाह के सिवा कोई और दूर नहीं कर सकता तो उसे अपने से जुड़ना चाहिये,क्योंकि मजबूर और असहाय इंसान को जब मुसीबतों

---

([78]) आप शैख,अल्लामा,उसूले (फिक़्ह व तफ्सीर के माहिर),मुफस्सिरे कुर्आन,मुहम्मद अमीन बिन मुख्तार शिन्क़ीती हैं,आप का शुमार चौदहवीं सदी के बड़े उलमा में होता था,आप अधिक ज्ञान,बुद्वि,स्मरण शक्ति के मालिक थे,लग भग आप की 20 किताबें हैं,अधिकतर किताबें तफ्सीर,फिक़्ह और अक़ीदा में हैं,अधिक मशहूर किताब " अज्वाउल बयान फी ईज़ाहिल कुर्आने बिल कुर्आन " और " मुज़क्किरा उसूलुल फिक़्ह अला रौजतिन्नाज़िर " हैं,आप की सब किताबें इल्मी इंसाइक्लोपीडिया की शक्ल में ए जगह कर दी गई हैं,जो " आसार अल शैख मुहम्मद अल अमीन अश्शिन्क़ीती " के उन्वान से छपी हैं,आप की वफात 1393 हिज्री में हुई,यह जानकारी " अल अज़्वा " के मुक़दमे से ली गइ है,प्रकाशक : दारे आल अलफवाइद – मक्का।

का सामना हो और आफतें उसे घेर लें तो उस के लिये यह जायज़ नहीं कि अल्लाह के सिवा किसी और से तअल्लुक़ जोड़े और उस से मांगा करे। क्योंकि यह रुबीबियत की सिफतों और विशेषताओं में से है,इस लिये इस हक़ को अल्लाह के लिये अंजाम देना और उसे उस के लिये खालिस करना सत्य में अल्लाह व रसूल की पैरवी और उस की प्रसन्नता तलाश करना है,और नबी ﷺ के सम्मान का भी यही तक़ाज़ा है क्योंकि आप के सब से बड़ी शक्ल यही है कि तौहीद और इबादत को केवल एक अल्लाह शक्तिमान व ताक़त वाले के लिये खास रखने में आप की पैरवी की जाये।

शक्तिमान और महान अल्लाह ने अपनी किताब के अंदर अधिकतर आयतों में यह स्पस्ट किया है कि आफत और दुख की घड़ी में बेकस व मजबूर बंदे का केवल एक अल्लाह की ओर आकर्षित होना अल्लाह की रुबीबियत की विशेषतआओं में से है " [79] खत्म हुवा।

इस प्रकार चारों मस्लकों के उलमा के कथन संपन्न हुये।

अधिकतर मुहक़्ककक़ीन उलमा जो किसी खास मस्लक की ओर निस्बत नहीं रखते,और ऐसे उलमा जो चारों मस्लकों में से किसी की ओर मंसूब नहीं हैं उन्हों ने भी अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने के हराम होने के विषय में अधिक स्पष्ट बातें लिखी हैं,जैसे इमाम मुहम्मद बिन अली शौकानी [80] अपनी किताब " अद्दुर्र अल नज़ीद फी इख्लासि कलिमतित्तौहीद " में लिखते हैं :

" जान लें कि सब से बड़ी मुसीबत और सब से बढ़ कर आफत वह है जो मैं ने बयान नहीं किया है अर्थात वसीला और योग्य व्यक्ति से सिफारिश तलब करना, और इस से मुराद वह चीज़ है जिस का अक़ीदा अधिकतर आम लोग और कुछ खास लोग क़ब्र में दफन किये हुये लोगों और मश्हूर जीवित बुज़ुर्गों के बारे में रखने लगे हैं कि वह ऐसी चीज़ों पर शक्ति रखते हैं जिन पर

---

([79]) देखें : आप की तफ्सीर : "अज़्वाउल बयान "।

([80]) आप शैख,फक़ीह और उसूले "फिक़्ह वतफ्सीर के माहिर " मुहम्मद बिन अली बिन मुहम्मद शौकानी,यमनी हैं,आप ने आप ने अनेक फन में अनेक उलमा से ज्ञान प्राप्त किया,अधिक किताबें लिखीं,उन में "इर्शादुल फुहूल इला तहक़ीक़िह हक मिन इल्मिल उसूल" भी है,आप का मज्मूआ फतावा भी " अल फत्हुर्रब्बानी फी फतावा अश्शौकानी " के उन्वान से छप चुका है,तफ्सीर में आप की किताब "फत्हुल क़दीर " है पैदा करने वाले और सृष्टि के एक होने के रद में आपने किताब " अस्सवारिम अलहद्दाद अल क़ातिआ लिअलाइक़ मक़ालाति अर्बाबिल इत्तिहाद " लिखी,इस के अलावा आप की अधिकतर किताबें हैं जिन की गिंती 114 तक पहुंचती है,आप की व फात 1250 में हुई,आप की जीवनी के लिये आप की स्वयं की लिखी हुई किताब "अल बद्रुत्ताले" देखें,और ज़िरिक्ली की अल आलाम देखें : 6 / 298।

अल्लाह ताला के सिवा कोई और शक्ति नहीं रखता,और वह ऐसे काम भी कर सकते हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं कर सकता, यहां तक कि उन की जुबान से भी वह बातें निकल गईं जो उन के दिलों में छिपी थीं,इस लिये यह उन बुज़ुर्गों को कभी तो अल्लाह के साथ पुकारते हैं और कभी केवल उन्हीं से दुआ करते हैं,उन के नामों की दुहाई देते हैं,उन का इस प्रकार सम्मान करते हैं जिस प्रकार लाभ और हानि के मालिक अल्लाह का सम्मान करते हैं,और जितनी नम्रता नमाज़ और दुआ में करते हैं उस से अधिक नम्रता इन के सामने करते हैं,यदि यह शिर्क नहीं है तो हमें नहीं पता कि शिर्क किसे कहते हैं,यदि यह कुफ्र नहीं है तो संसार में कोई और कुफ्र नहीं है" खत्म हुआ [81]

मैं इस अध्याय को जनाब इमाम शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ [82] के इस उत्तम और जामे कथन से पूर्ण करता हूं,आप कहते हैं " इस में कोई संदेह नहीं कि दुआ इबादत की एक महत्व और जामे क़िस्म है,इस लिये

---

([81]) पेज : 222–223,तहक़ीक़ मुहम्मद अली अल हल्बी,दारुल फत्ह–अश्शारिक़ा।

([82]) आप शैख इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ हैं,अपने समय के शैखुल इस्लाम थे,आप ने अपने ज्ञान,फिक़्ह,मस्जिदों (की तामीर ) और इल्मी प्रोजेक्ट से दुनिया को भर दिया,आप से अधिक छात्रों ने ज्ञान लिया और डिगरी ली,आप के बाद सऊदी अरब में जो भी उलमा,छात्र और क़ाज़ी आये उन में से अधिकतर ने आप के (ज्ञानऔर फिक़्ह से) लाभ उठाया,आप जामिया इस्लामिया मदीना मुनव्वरा के उदघाटन के समय उस के उपाध्यक्ष नियुक्त हुये,फिर एक साल बाद उस के अध्यक्ष नियुक्त हुये,यह विश्वविधालय शुरू से ले कर अब तक एक इल्मी दुर्ग की हैसियत से है जिस से पूरी दुनिया से आने वाले छात्र लाभ उठा रहे हैं,उन छात्रों में कुछ ऐसे भी हैं जो अपने मुल्कों में उलमा की लाइन में गिने जाते हैं,आप का फतावा का मज्मूआ 30 जिल्दों में है,आप की अधिकतर किताबें और रिसाले हैं,आप लोगों के लिये अधिक सिफारिश करने,उन की आवश्यक्ताओं को पूरा करने और हर एक के साथ भलाई करने के कारण जाते थे,बल्कि काफिर हुकूमतों के लीडरों तक आप के उपदेश पहुंचते थे,आप के इल्मी,दावती और तर्बियती निशानियों के विषयम में बात करें तो बात लम्बी हो जायेगी।

आप की जीवनी पर अधिक लिखा गया है उन में डाक्टर मुहम्मद अश्शुवयअर की किताब " अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ आलिम फक़दत्हुल उम्मा " और आप की लाइब्रेरी के इंचार्ज शैख मुहम्मद बिन मूसा अल मूसा कि किताब " जवानिब मिन सीरतिल इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ " महत्वपूर्ण हैं।

आप की वफात 1420 हिज्री के शुरू में 90 साल की उम्र में हुई,आप की मौत से पूरी दुनिया हिल गई,सब मुस्लिम घरानों में दुख का बादल छा गया,आप की नमाज़े जनाज़ा में राजकुमारों, वज़ीरों, उलमा, क़ाज़ियों,छात्रों आदि और आम लोग अधिक मात्रा में मौजूद थे,मस्जिदे हराम में आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई,आप की नमाज़े जनाज़ा में दस लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया,अधिक दिनों तक पेपरों में आप के बारे में लिखा जाता रहा,रही बात शेरी और गैर शेरी मरसिया की तो इतने अधिक हैं जिन्हें बयान नहीं किया जा सकता।

इस को एक अल्लाह के लिये खालिस रखना अनिवार्य है,जैसा कि अल्लाह ताला का फर्मान है :
तर्जुमा : तो अल्लाह की इबादत को खालिस कर के उसी को पुकारो अगरचे काफिर बुरा ही मानें। सूरे ग़ाफिर : 14
और अल्लाह ताला ने फर्माया :
तर्जुमा : मस्जिदें केवल अल्लाह ही के लिये खास हैं तो अल्लाह ताला के साथ किसी और को न पुकारो। सूरे जिन्न : 18
इस में पैग़म्बरों और उन के अतिरिक्त संपूर्ण मख्लूक़ शामिल हैं,क्योंकि "अहद" नकरा है जो नफी के सियाक़ में आया है,इस लिये अल्लाह पाक के सिवा हर एक को शामिल है,अल्लाह ताला फर्माता है :
तर्जुमा : अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की इबादत मत करना जो तुझे न कोई लाभ पहुंचा सके और न को हानि। सूरे यूनुस : 106
ये खिताब नबी ﷺ से है, और यह बात मालूम है कि अल्लाह पाक ने आप को शिर्क से महफूज़ रखा था,इस लिये आयत से मुराद दूसरों को इस से खबरदार करना है,इस के बाद अल्लाह ग़ालिब व बर्तर फर्माता है :
तर्जुमा : फिर अगर तू ने ऐसा किया तो निःसंदेह तू उस समय ज़ालिमों में से होगा। सूरे यूनुस : 106
यदि अवलादे आदम के सरदार अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारते तो ज़ालिमों में हो जाते तो भला दूसरों का क्या हाल होगा? जब जुल्म बोला जाता है तो इस से बड़ा शिर्क मुराद होता है,जैसा कि अल्लाह पाक का फर्मान है :
तर्जुमा : और काफिर लोग ही ज़ालिम हैं। सूरे बक़रा : 254
और फर्माया :
तर्जुमा : बेशक शिर्क निःसंदेह बहुत बड़ा जुल्म है। सूरे लुक़्मान : 13
यह और दूसरी आयतों से मालूम हुवा कि मुर्दों पेड़ों,पत्थरों और बुतों आदि जैसे गैरुल्लाह को पुकारना शिर्क है जो इस इबादत के विपरीत है जिस के कारण अल्लाह ने जिन्नों और इन्सानों को पैदा किया,इसे बयान करने और इस की ओर बुलाने के लिये रसूलों को भेजा और किताबें उतारीं,लाइलाह इल्लल्लाह का अर्थ भी यही है कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं,यह अल्लाह के अतिरिक्त से हर प्रकार की पूजा की नफी करता और इसे केवल एक अल्लाह के लिये प्रमाणित करता है,जैसा कि अल्लाह पाक का फर्मान है :
तर्जुमा : वह सब इस लिये कि अल्लाह ही हक़ है और उस के सिवा जिसे भी यह पुकारत हैं वह ग़लत है। सूरे हज : 62
यही दीन की अस्ल और मिल्लत की बुन्यिाद है,यह यदि सही है तब ही इबादतें सही होंगी,जैसा कि अल्लाह ताला का कथन है :

तर्जुमा : निःसंदेह तेरी ओर और तुझ से पहले ( के सब पैग़म्बरों) की ओर वह्य की गई अगर तू ने शिर्क किया तो निःसंदेह तरा अमल बर्बाद हो जायेगा और तू हानि उठाने वालों में से हो जायेगा। सुर जुमर : 65

और अल्लाह ताला फर्माता है :

तर्जुमा : यदि यह लोग भी शिर्क करते तो जो कुछ यह आमाल करते थे वह सब बर्बाद हो जाते। सुरतुल अन्आम : 88

दीने इस्लाम की इमारत दो स्तंभों पर है, पहला : केवल एक अल्लाह ही की इबादत की जाये, दूसरा : इबादत केवल अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद ﷺ के बताये हुये तरीक़ अनुसार ही की जाये। लाइलाहा इल्लल्लाह और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही का अर्थ यही है,इस लिये जिस ने नबियों आदि जैसे मुर्दों को पुकारा या बुतों से प्रार्थना की,या पेड़ अथवा पत्थरों या इस के अतिरिक्त से फर्याद की,या उन से सहायता मांगी या नज़्रो नियाज़ के ज़रिये उन की निकटता प्राप्त की,या उन के लिये नमाज़ पढ़ी या उन का सज्दा किया उस ने अल्लाह को छोड़ कर उन्हें माबूद बनाया और उन्हें अल्लाह ताला का साझी ठहराया।

यह अमल कल्मा लाइलाह के विपरीत है,इसी प्रकार वह व्यक्ति जो दीन में ऐसी चीज़ ईजाद करे जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी है तो उस ने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही अनुसार अमल नहीं किया

शक्तिमान अल्लाह का फर्मान है :

तर्जुमा : उन्हों ने जो जो आमाल किये थे हम ने उन की ओर बढ़ कर उन्हें बिखरे हुये कणों समान कर दिया। सूरतुल फुर्क़ान : 23

उन आमाल से मुराद उस व्यक्ति के आमाल हैं जिसे वह ताक़तवर अल्लाह के साथ करते हुये दुनिया से चला जाता है,इसी प्रकार बिदअती आमाल भी जिन की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी है,यह सब आमाल क़यामत के दिन बिखरे हुये कणों समान हो जायेंगे क्योंकि वह पाक शरीअत अनुसार नहीं थे,जैसा कि नबी ﷺ ने फमार्या : " जिस व्यक्ति ने हमारे इस दीन में कोई ऐसी नई चीज़ गढ़ी जो उस में से नहीं है ता वह निरस्त है " बुखारी,मुस्लिम [83]।

आप अधिक लिखते हैं : " अल्लाह अज़ीज़ व बर्तर ने बंदे से दुआ करने का आदेश दिया है और दुआ करने वाले से क़बूलियत का वादा किया है और जो व्यक्ति उस से कतराये और अहंकार करे उसे नर्क में डालने की धमकी दी है, जैसा कि अल्लाह ताला का कथन है :

---

([83]) बुखारी (2697) और मुस्लिम (1718) ने आयशा रजिअल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है।

तर्जूमा : तुम्हार रब का फर्मान है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा,यक़ीन मानों कि जो लोग मेरी इबादत से अहंकार करते हैं वह जल्द ही ज़लील हो कर जहन्नम में पहुंच जायेंगे। सूरे ग़ाफिर : 60

अर्थात ज़लील हो कर नर्क में जायेंगे,यह आयते करीमा इस बात पर दलील है कि दुआ इबादत है,और जो व्यक्ति दुआ से कतराये और घमंड करे तो उस के ठिकाना जहम्नम होगा,जब अल्लाह को पुकारने से कतराने वाले का यह अंजाम होगा तो भला उस की क्या हालत होगी जो अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करता है या अल्लाह से ही मुंह फेर लेता है?

अल्लाह पाक क़रीब है,दुआ को क़बूल करता है, हर चीज़ का मालिक और हर काम पर शक्तिमान है,जैसा कि अल्लाह ताला का फर्मान है :

तर्जुमा : जब मेरे बंदे मेरे बारे में आप से पूछें तो आप कह दें कि मैं अधिकतर निकट हूं हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी वह मुझे पुकारे क़बूल करता हूं। इस लिये लोगों को भी चाहिये कि वह मेरी बात मान लिया करें और मुझ पर ईमान रखें,यह उन की भलाई का कारण है। सूरतुल बक़रा : 186

अल्लाह के रसूल ﷺ ने सही हदीस में हमें यह बताया है कि दुआ ही इबादत है, आप ने अपने चचा ज़ाद अब्दुल्लाह बिन अब्बास से फर्माया : तुम अल्लाह के आदेश का पालन करो वह तुम्हारी हिफाज़त करेगा,तुम अल्लाह के हुकूक अदा करो उसे तुम अपने सामने पाओगे,जब तुम कोई चीज़ मोंगो तो केवल अल्लाह से मांगो,जब तुम सहायता चाहो तो केवल अल्लाह से सहायता मांगो। तिर्मिज़ी आदि ने इसे रिवायत किया है [84]।

आप ने अधिक फर्माया : जो व्यक्ति इस हाल में मर जाये कि अल्लाह के सिवा औरों को भी उस का साझी मानता रहा हो तो वह जहन्नम में जायेगा। [85]

बुखारी व मुस्लिम में है कि नबी ﷺ से पूछा गया : कौन सा गुनाह अल्लाह के समीप अधिकतर बड़ा है?फर्माया : तुम अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाओ जब कि उस ने तुम्हें पैदा किया है। [86]

पता चला कि हर वह व्यक्ति जो अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करता है या उस से मदद मांगता है या उस के लिये मन्नत मानता या उस के नाम पर पशु ज़बह करता है या उस के लिये किसी प्रकार की उपासना करता है,वह

---

([84]) इस हदीस की व्याख्या पहले बयान हो चुकी है।

([85]) इसे बुखारी (4497) ने अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत किया है।

([86])इसे बुखारी (7497) और मुस्लिम (86) ने अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत किया है और शब्द मुस्लिम के हैं।

अल्लाह के साथ साझी बनाता है,चाहे वह नबी हो या वली,फरिश्ता हो या जिन्न, बुत हो या कोई और मख्लूक़।
रही बात ज़िदां और मौजूद इंसान से ऐसी चीज़ मांगना जो उस के बस में हो, या ऐसे हिस्सी मामलात में उस से मदद मांगना जिन पर वह ताक़त रखता हो तो यह शिर्क नहीं है,बल्कि यह उन आम मामलात में से है जो मुसलमानों के बीच रवा है,जैसा कि अल्लाह ताला ने मूसा ﷺ के क़िस्से में फर्माया :
तर्जुमा : उस की क़ी क़ौम ने उस के खिलाफ जो उस के दुश्मनों में से था उस से फरयाद की। सुरे क़सस : 15
और जैसा कि अल्लाह ने मूसा ﷺ के क़िस्से में यह भी बयान किया :
तर्जुमा : मूसा वहां से डर कर देखते भालते निकल खड़े हुये। सुरे क़सस : 21
और जैसा कि इंसान अपने दोस्तों से जंग और उन जैसी दूसरी पेश आने वाले मामलात में मदद तलब करता है,जिन में उन को आपसी मदद की आवश्यक्ता पड़ती है।
अल्लाह ने अपने नबी को यह आदेश दिया कि लोगों तक यह बात पहुंचादें कि आप किसी के लिये लाभ एवं हानि के मालिक नहीं हैं,अल्लाह ताला ने सुरे जिन्न में फर्माया :
तर्जुमा : आप कह दीजिये कि मैं तो केवल अपने रब ही को पुकारता हूं और उस के साथ किसी को साझी नहीं बनाता ,कह दीजिये कि मुझे तुम्हारे किसी लाभ और  हानि का इख्तियार नहीं। सूरे जिन्न : 20–21
और अल्लाह ताला ने सूरे आराफ में फर्माया :
तर्जुमा : आप फर्मा दीजिये कि मैं स्वयं अपनी ज़ाते खास के लिये लाभ और हानि का इख्तियार नहीं रखता,मगर जितना अल्लाह चाहे और यदि मैं ग़ैब की बातें जानता तो मैं अधिकतर लाभ प्राप्त कर लेता और कोई हानि मुझ को न पहुंचती, मैं तो केवल डराने वाला और खुशखबरी देने वाला हूं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। सूरे आराफ : 188
इस अर्थ की अधिकतर आयतें हैं।
आप ﷺ अल्लाह के सिवा किसी को नहीं पुकारते,उस के अतिरिक्त किसी और से मदद नहीं मांगते,बदर के दिन गिड़गिड़ा कर अल्लाह से मदद और सहायता तलब करते हुये आप ﷺ ने यह दुआ की : "ऐ मेरे रब! मुझ से अपना किया हुवा वादा पूरा कर दे", यहां तक कि अबूबक्र सिद्दीक ﷺ ने आप से कहा :

अल्लाह के नबी! बस,काफी है आप की अपने रब से इतनी दुआ,अल्लाह आप से जो वादा कर रखा है वह उसे पूरा करेगा।[87]
इस सिलसिले में अल्लाह ताला ने यह आयत उतारी :
तर्जुमा : उस समय को याद करो जब कि तुम अपने रब से फर्याद कर रहे थे फिर अल्लाह ताला ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम को एक हज़ार फरिश्तों से मदद दूंगा जो लगातार चले आयेंगे,और अल्लाह ताला ने यह मदद केवल इस लिये की ताकि खुश हो जाओ और तुम्हारे दिलों को सुकून मिल जाये और मदद केवल अल्लाह ही की ओर से है जो कि ज़बरदस्त हिकमत वाला है। सूरतुल अन्फाल : 9–10
अल्लाह ताला ने इन आयतों में यह याद दहानी कराई है कि सहाबा अल्लाह से मदद तलब करते थे,और यह खबर दी है कि उस ने उन की दुआ क़बूल भी की और फरिश्तों के ज़रिये उन की मदद की,फिर अल्लाह पाक ने यह बयान किया कि मदद फरिश्तों से नहीं मिली,बल्कि अल्लाह ने फरिश्तों के ज़रिये उन की सहायता की ताकि उन्हें मदद और सुकून की खुशखबरी दे सके, अल्लाह ताला ने यह स्पष्ट किया है कि मदद तो अल्लाह की ओर से मिली,फरमाया :
तर्जुमा : मदद तो अल्लाह ही की ओर से है। सूरे आले इमरान : 126
अल्लाह ग़ालिब और बर्तर ने सूरे आले इमरान में फर्माया :
तर्जुमा : जंगे बदर में अल्लाह ताला ने उस समय तुम्हारी सहायता की थी जब कि तुम गिरी हुई हालत में थे। सूरे आले इमरान : 123
इस आयत में अल्लाह ने यह बताया कि उस पाक रब न ही उन को बदर के दिन मदद की और विजय दी,पता चला कि अल्लाह ने उन्हें हथियार और शक्ति और हिम्मत प्रदान की और फरिश्तों के ज़रिये उन्हें मदद पहुंचाई,यह सब मदद और खुशखबरी और सुकून का कारण था न कि मदद उन चीज़ो के कारण मिली,बल्कि यह विजय व कामयाबी केवल अल्लाह की ओर से मिलती है।[88]
शैख इब्ने बाज़ का कथन खतम हुवा।
लेखक कहता है : अल्लाह सब ज्ञानियों को उत्तम बदला दे जो इख्लास के साथ लोगों के सामने दीन की असलियत को स्पष्ट करते हैं,जो कि इबादत में

---

([87]) इस हदीस को बुखारी (2915) और मुस्लिम (1763) ने इब्ने अब्बास रजिअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया।

([88]) मज्मूआ फतावा व मक़ालात मुतनववआ : 2/108, प्रकाशक : दारुल क़ासिम – रियाज़

तौहीद(पर क़ायम रहना है) उन उलमा के कारनामों पर प्रकाश डालते हुये शैख अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद यूसुफ अपनी किताब " अल दुरर अल सनिय्या मिनल फतावा अल नजदिय्या " के भूमिका में लिखते हैं :
उलमा ने हर दौर और हर मुल्क में उसूल और फुरू आदि पर इतनी किताबें लिखी हैं जिन को गिनना असंभव है, उन का उद्देश्य दीन और शरीअत और इल्म वालों के कथनों को (उन किताबों में) महफूज़ करना था,ताकि इल्मो अमल पर बाक़ी रहने,शरई अहकाम की पाबंदी करने और लोगों पर उन्हें लाज़िम ठहराने में उम्मत का अंतिम तबक़ा भी अपने पहले तबक़ा समान हो,क्योंकि इस जानकारी की आवश्यक्ता सब आवश्यक्ताओं से बढ़ कर है,यदि यह चीज़ न होती तो हमारे दीन में भी वह रद्दो बदल होता जो इस से पहले पिछले दीनों में रद्दो बदल हुवा था,इस लिये कि कोई भी ज़माना अटकल मारने वालों और बिना सूज बूझ के बातें बनाने वालों से खाली नहीं रहता। [89]

**अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना गलत अमल है, इस की पांचवी दलील यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त की इबादत करना उस प्रकृति से दूर हटना है जिस पर अल्लाह ने लोगों का पैदा किया है,और वह है केवल एक अल्लाह की इबादत :** दुआ एक प्रकार की इबादत है,बल्कि वह इबादत की मग्ज़ है, उस का निचोड़ और रूह है,क्योंकि अल्लाह ने सब लोगों को दीने हनीफ पर एकेश्वरवादी बना कर पैदा किया है,हनीफ का अर्थ है झुकाव अर्थात शिर्क से तोहीद की ओर मायल होना, फिर उन के पास इन्स व जिन्न के शयातीन आये और उन्हें तौहीद से हटा कर शिर्क में डाल दिया,जैसा कि नबी ﷺ ने फर्माया : खबरदार रहो! मेरे रब ने मुझ को आदेश दिया है कि मैं तुम्हें वह सिखाऊं जिसे तुम नहीं जानते, उन बातों में से जो अल्लाह ने आज के दिन मुझे सिखाया है,मैं जो माल अपने बंदे को दूं वह हलाल है,मैं ने अपने सब बंदों को मुसलमान बनाया,फिर उन के पास शैतान आये,और उन के दीन से उन्हें हटा दिया,जो चीज़ें मैं ने उन के लिये हलाल की थी वह हराम कर दिया,और उन्हें आदेश दिया कि मेरे साथ शिर्क करें,जिस की मैं ने कोई दलील नहीं उतारी।[90]
अबू हुरेरा ؓ से रिवायत है कि आप ﷺ ने फर्माया : हर बच्चा फितरत पर पैदा होता है लेकिन उस के मां बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बना देते हैं,बिल्कुल उसी प्रकार जैसे एक जानवर एक सही और पूर्ण तौर पर जन्म देता

---

([89]) अद्दुर्रर अस्सन्निया : 1/21

([90]) इसे मुस्लिम (2865) ने अयाज़ अल मुजाशई ؓ से रिवायत किया है।

है,क्या तुम उस का कोई भाग पैदाइशी तौर पर कटा हुवा देखते हो?फिर अबू हुरेरा ﷺ ने यह आयत पढ़ी :

तर्जुमा : यह अल्लाह ताला की फित्रत है जिस पर लोगों का उस ने पैदा किया है,अल्लाह ताला के पैदा करने में कोई तब्दीली मुम्किन नहीं। [91]

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फित्रते तौहीद पर पैदा होने वाले उस बच्चे की जिस के घर वाले उसे शिर्क की ओर फेर देते हैं,उस जानवर से तुलना की है जो सही सालिम पैदा होता है परन्तु उस का मालिक उस के कान काट देता है,अगर यहूदो नसारा और मजूसी अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारते हैं,तो फित्रत (प्रकृति) उस के विपरीत है, जो कि केवल एक अल्लाह को पुकारना और उस से दुआ करना है और यही अपेक्षित (मतलूब) भी है।

केवल एक अल्लाह को पुकारना फित्रत का तक़ाज़ा है,उस की एक दलील यह भी है कि अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने वाले मुसीबतों और कठिनाइयों के समय उन को पूरी तरह से भूल जाते हैं जिन से वे दूआयें करते हैं,और इस हालत में केवल एक अल्लाह से दुआ करने के लिये आकर्षण हो जाते हैं,बेकसी और लाचारी में फित्रत उन्हें इस बात की ओर बुलाती है कि केवल अल्लाह से दुआ करें, जो इस बात की दलील है कि इस के विपरीत अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करना बातिल और बे बुन्यिाद है,अल्लाह ताला पहले के मुश्रिकों के बारे में फर्माता है :

तर्जुमा : वही है जो तुम को जंगल और समुद्र में चलने फिरने और सैर करने की तौफीक़ देता है,यहां तक कि जब तुम नौकाओं में सवार होते हो और नौकायें साफ हवा के नर्म झोंकों से सवारों को लेकर चलने लगती हैं और वे उस से प्रसन्न होते हैं,तो अचानक तेज़ हवा चल पड़ती है और लहरें हर ओर से उन पर जोश मारती हुई आने लगती हैं और वे समझते हैं कि अब लहरो में घिर गये तो उस समय केवल अल्लाह की इबादत कर के उस से दुआ मांगने लगते हैं कि ऐ अल्लाह! अगर तू हम को इस से बचाले तो हम तेरे अधिक आभारी होंगे। लेकिन जब वह उन्हें बचा लेता है तो मुल्क में नाहक शरारत करने लगते हैं। सूरे यूनुस : 22–23

अल्लाह ताला सुरे अन्आम में फर्माता है :

तर्जुमा : कहो काफिरो!भला देखो तो अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आ जाये या क़यामत आ जाये तो क्या तुम ऐसी हालत में अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे?अगर सच्चे हो तो बताओ। बल्कि दुख की घड़ी में तुम उसी को

---

([91]) बुखारी (1358) और मुस्लिम (2658)

पुकारते हो तो जिस दुख के लिये उसे पुकारते हो वह अगर चाहता है तो उस को दूर कर देता है और जिन को तुम साझी बनाते हो उस समय उन्हें भूल जाते हो।

जब अबरहा मक्का में आया और उस के डर से मक्का वाले भाग खड़े हुये,और नबी ﷺ के दादा अब्दुल मुत्तलिब और कुरैश के कुछ लोग अल्लाह से दुआ करने लगे और उस से मदद मांगने लगे,अब्दुल मुत्तलिब काबे का द्वार पकड़ कर यह आवाज़ लगाने लगे :

يارب لا أرجولهم سواك　　يارب فامنع منهم حماك

إن عدوالبيت من عاداك　　امنعهم أن يخربوا قراك

तर्जुमा :

ऐ पालनहार! हम उन के खिलाफ तेर सिवा किसी से उम्मीद नहीं रखते,ऐ पालनहार! अपने घर को उन से बचा। निःसंदेह काबे का दुश्मन वही है जो तेरा दुश्मन है, तू उन्हें इस बात से रोक दे कि वह मक्का को बर्बाद कर दें।

**नोट :**

पहले ज़माने के मुश्रिकों को जब कोई मुसीबत पहुंचती तो वह केवल एक अल्लाह को पुकारते थे,और जब वह खुशहाली में होते तो अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारते,जब कि हमारे ज़माने के मुश्रिकीन पहले के मुश्रिकों से भी गये गुज़रे हैं,क्योंकि वह खुशहाली और तंगी हर सूरत में अल्लाह के अतिरिक्त को ही पुकारते हैं,लाहौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह।

शैख सिद्दीक़ हसन खान जो कि तेरहवीं सदी हिज्री के आलिम हैं,उन्हों ने अपनी किताब : " रिहलतुस्सिद्दीक़ इलल बैतिल अतीक़ " में इस विषय पर एक कहानी बयान की है जो उन के साथ उस समय पेश आई जब वह समुद्री मार्ग से हज के लिये गये,इस कहानी में है कि :

यह एक ऐसी तअज्जुब वाली बात है जिसे छिपाना ठीक नहीं कि हवा की लहर के थम जाने या उस का विपरीत सिम्त में चलने के कारण नौका वालों को जब नौकाओं की चिंता होती है या नौका और उस के सवारों के लिये किसी प्रकार का डर होता है तो वे शैख अब्दूस आदि मख्लूकों के नाम की गुहार लगाते और उन से मदद मांगते हैं,वे अल्लाह ग़ालिब और बर्तर को कभी नहीं पुकारते,और न उस के खूबसूरत नामों के साथ उस से दुआ करते हैं,जब मैं उन्हें अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारते हुये और अवलिया से मदद मांगते हुये सुनता तो मुझे नौका की हलाकत का बड़ा डर हो जाता,और मैं अपने दिल में कहता : कितनी तअज्जुब की बात है,यह नौका अपने सवारों के साथ सलामती के साहिल तक भला कैसे पहुंच पायेगी,मुश्रिकीने अरब भी इस प्रकार के स्थान पर अपने बातिल माबूदों को नहीं पुकारा करते थे, बल्कि ऐसे मक़ाम पर एक

अल्लाह ताला को पुकारते थे और उस के साथ साझी नहीं बनाते थे,जैसा कि अल्लाह पाक ने अपनी किताब में फर्माया :
तर्जुमा : फिर जब यह नौका में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं और खालिस उसी की इबादत करते हैं।
जब कि यह क़ौम जो खुद को मुसलमान कहती है,वह अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारती और मख्लूक़ के नामों की गुहार लगाती है,निःसंदेह अल्लाह ताला ने सच कहा है :
तर्जुमा : उन में से अधिकतर अल्लाह पर ईमान नहीं रखते मगर उस के साथ शिर्क करते हैं।
**छटी दलील : अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना बातिल अमल है ,उस की एक दलील यह है कि यह बिल्कुल उन मुश्रिकों जैसा अमल है जिन के बीच नबी को भेजा गया, इस लिये वह मुश्रिकीने अंबिया,फरिश्तों और बुज़ुर्गों आदि को पुकारा करते थे और कहते थे : यह हमें अल्लाह के क़रीब कर देंगे और उन के समीप हमारे सिफारशी बनेंगे**,अल्लाह ताला ने उन के विषय में फर्माया :
तर्जुमा : यह लोग अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की पूजा करते हैं जो न उन का कुछ बिगाड़ सकती हैं और न कुछ भला कर सकती हैं और कहते हैं कि यह अल्लाह के पास हमारी सिफारिश करने वाले हैं,कह दो कि क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ बताते हो जिस का वजूद न उसे आसमानों में मालूम होता है और न ज़मीन में। वह पाक है और उस की शान उन के शिर्क करने से अधिक ऊंची है।
अल्लाह ने सुरे जुमर में उन के बारे में अधिक फर्माया :
तर्जुमा : जिन लोगों ने उस के सिवा और दोस्त बनाये हैं वह कहते हैं कि हम उन को इस लिये पूजते हैं कि हम को अल्लाह के निकट कर दें,तो जिन बातों में यह इख्तिलाफ करते हैं अल्लाह उन में उन का फैसला कर देगा,निःसंदेह अल्लाह उस व्यक्ति को जो झूटा और नाशुक्रा है हिदायत नहीं देता।
आप ग़ौर करें कि किस प्रकार अल्लाह ने पहली आयत में उन पर शिर्क का और दूसरी आयत में कुफ्र का हुक्म लगाया है।
बल्कि अल्लाह ताला को छोड़ करे किसी और को पुकारना ऐसा अमल है जिसे माज़ी से ले कर हाल तक और नूह से ले कर हमारे मौजूदा दौर तक के सब मुश्रिकीन अंजाम देते रहे हैं,इब्राहीम की क़ौम के लोग भी इस में शामिल हैं जो बुतों से दुआ करते थे,और ईसाई जो कि ईसा और उन की मां को पुकारते थे,इसी प्रकार बौध धर्म के मानने वाले और हिंदू जैसी बुत प्रस्त क़ौमें भी ऐसा ही करती रही हैं।

इस क़िस्म के इनहिराफ में बहुत से वह गुट भी पड़ चुके हैं जो दीने इस्लाम की ओर मंसूब होते हैं,इन में से सब से मश्हूर तीन गुट यह हैं :

**पहला गुट** राफिज़ा का है,जिन्हों ने अली बिन अबी तालिब और कुछ आले बैत नबवी की शान को हद से अधिक बढ़ाया,यहां तक कि उन्हे पुकारने और उन से मदद तलब करने लगे, वह अब करबला में मौजूद हसन ﵁ की क़ब्र का इरादा कर के सफर करते हैं,इन से अल्लाह की तरह जीविका और अवलाद की दुआ करते हैं,अल्लाह उन का मुंह काला करे।

**दूसरा गुट** हद से बढ़ जाने वाले सूफिया का है जिन्हों ने उन लोगों की शान को हद से बढ़ाया जिन्हें वह अवलिया और अक़्ताब कहते हैं,उन से आफत और दुख दूर करने और हानि के समय उन से दुआ करते हैं।

**तीसरा गुट** क़ब्र प्रस्तों का है, जो कुछ बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर जा कर और कभी कभार नबी ﷺ की क़ब्र के पास आ कर अल्लाह की तरह उन से दुआ करते हैं,इसी प्रकार कुछ ऐसी क़ब्रों के पास भी जाते हैं जो नबी ﷺ के आल की ओर मंसूब है, यह इबादत में अल्लाह के साथ शिर्क करना और दीने इस्लाम से निकल जाना है,अल्लाह की पनाह!!

लेखक : वह माबूद जिन की अल्लाह के अतिरिक्त इबादत की जाती है वह क़यामत के दिन अपनी इबादत करने वालों के इस दावे को झुटला देंगे कि वह उन्हें अल्लाह के क़रीब कर देंगे,ग़ौर कीजिये कि उस से बड़ी रुस्वाई क्या हो सकती है?अल्लाह ताला का फर्मान है :

तर्जुमा : जिस दिन अल्लाह इन को और उन को जिन्हें यह अल्लाह के सिवा पूजते हैं इकट्ठा करेगा और फर्मायेगा क्या तुम ने मेरे बंदों को गुमराह किया था या ये खुद गुमराह हो गये थे। वह कहेंगे तू पाक है हमारे लिय यह मुनासिब न था कि तेरे सिवा औरों को दोस्त बनाते। लेकिन तूने ही उन को और उन के बाप दादा को बरतने को नेमतें दीं यहां तक कि वह तेरी याद को भूल गये और यह हलाक होने वाले लोग थे,तो उन्हों ने तुम को तुम्हारी बात में झुटला दिया,अब तुम अज़ाब को न फेर सकते हो,न किसी से सहायता ले सकते हो। जो व्यक्ति तुम में से ज़ुल्म करेगा हम उस को बड़े अज़ाब का मज़ा चखायेंगे।

इब्ने कसीर इस आयत की तफ्सीर में लिखते हैं :

तो उन्हों ने तुम को तुम्हारी बात में झुटला दिया अर्थात जिन की तुम ने अल्लाह को छोड़ कर इबादत की और यह गुमान रखा कि वह तुम्हारे दोस्त हैं और तुम्हें अल्लाह से क़रीब कर देंगे उन्हों ने तुम को झुटला दिया ... अब तुम (अज़ाब को)न फेर सकते हो,न (किसी से) सहायता ले सकते हो अर्थात वह तुम से अज़ाब को टालने की सकत नही रखते और न वह स्वयं अपनी मदद कर सकते हैं।

खतम हुवा।

**सातवीं दलील : अगर अंबिया और नेक लोग जैसे अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारना ठीक होता तो अल्लाह उस का हुक्म अवश्य देता,अल्लाह ताला इस से बुहत ऊंचा और बड़ा है,और नबी ﷺ और सहाबा उस को अवश्य करते, आप और आप के सहाबा इस से बरी हैं,क्योंकि वह खैर और भलाई के सब से अधिक अभिलाषी और सब से बढ़ कर सत्य को पहचानने वाले थे,**अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया और वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये,अल्लाह ने उन के लिये ऐसी जन्नतें तय्यार की है जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी।

इन में चारों खुलफा ,और आले बैत,जन्नत की खुश खबरी पाने वाले और ऐसे सहाबा भी थे जिन के अगले और पिछले सब गुनाह क्षमा कर दिये गये,इस के बावजूद कभी भी ऐसा नहीं हुवा कि उन्हों ने आप से दुआ और मदद मांगी हो,बल्कि उन के बाद आने वाली तीनों प्रतिष्ठित शताबदियों में किसी के बारे में सही या हसन असर ऐसा नहीं जो यह प्रमाणित कर सके कि जब उन्हें कोई आवश्यक्ता होती तो वह क़ब्रों की ओर जाते।

इब्ने तैमिया लिखते हैं : मोमिन अपने रब से उम्मीद क़ायम रखता है,उस से डरता और दीन को खालिस रखते हुये उसी से दुआ करता है,उस के शैख और मुर्शिद का इस पर यह हक़ बनता है कि वह उन के लिये दुआ करे और उन पर रहमत भेजे,क्योंकि संपूर्ण मखलूक़ में सब से बड़ा मक़ाम पर रसूलुल्लाह ﷺ का थ, आप के सहाबा आप की शान व मरतबे से सब से अधिक जानते थे और आप के अधिकतर फरमांबर्दार थे लेकिन आप डर के समय किसी को भी यह हुक्म न देते कि वह यह पुकारे कि : ऐ मेरे आक़ा रसूलुल्लाह वह न आप के जीवन में ऐसा करते थे और न आप की वफात के बाद,बल्कि आप उन्हें अल्लाह को याद करने,उस से दुआ करने और आप पर दरूद भेजने का हुक्म दिया करते थे,अल्लाह ताला फर्माता है :

तर्जुमा : जब उन से लोगों ने आ कर बयान किया कि कुफ्फार ने तुम्हारे (मुक़ाबले के लिये बड़ा लश्कर) इकट्ठा किया है, उन से डरो। तो उन का ईमान और अधिक बढ़ गया और कहने लगे : हम को अल्लाह काफी है और वह अतिउत्तम काम बनाने वाला है। फिर वह अल्लाह की नेमतों और उस के फज़्ल के साथ वापस आये,उन को किसी प्रकार का हानि न पहुंचा,वह अल्लाह की खुशी के ताबे रहे और अल्लाह बड़े फज़्ल का मालिक है।

आप अधिक लिखते हैं : " मुर्दा और ग़ायब –चाहे वह नबी हो या कोई और – को पुकाररना मुसलमानों के सब इमामो के नज़्दीक क़ाबिले नकीर हराम चीज़ों में से है,न तो अल्लाह ने इस का आदेश दिया है और न उस के रसूल ने,न तो किसी सहाबी ने इसे किया और न ही भलाई के साथ उन की पैरवी करने वाले किसी ताबई ने,और न ही मुसलमानों के किसी इमाम ने इसे ठीक

कहा है,यह दीने इस्लाम की एक मशहूर तालीम है,इन में से किसी को भी जब कोई कमी या कोई ज़रूरत पड़ती तो वह किसी मुर्दा से यह न कहते : ऐ मेरे फलाने आक़ा! मैं तेरी रक्षा में हूं या यह कि तू मेरी आवश्यक्ता पूरी कर दे,जैसा कि इन मुश्रिकों में से कुछ लोग मुर्दों और ग़ायब लोगों को पुकारते हुये कहते हैं,किसी सहाबी ने आप की वफात के बाद(भी) आप से मदद नहीं मांगी,आप के अतिरिक्त किसी और नबी से भी नहीं, न उन की क़ब्रों के पास और न उन से दूर,वह मुश्रिकों से जंग करते हुये बड़े सख्त हालात से गुज़रते थे, उन की हालत खत़रनाक हो जाती थी और वह भिन्न प्रकार के गुमान में पड़ जाते थे इस के बावजूद उन में से कोई भी किसी नबी और मख्लूक़ से मदद की गुहार नहीं लगाता था,बल्कि उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबले में कभी किसी मख्लूक़ की क़सम भी नहीं खाई, न वह अंबिया की क़ब्रों के पास जा कर दुआ करते थे और न वहां नमाज़ पढ़ा करते थे।

इब्नुल क़य्यिम फर्माते हैं :

क़ब्र में दफन किये हुये लोगों के विषय में अल्लाह के रसूल ﷺ का बीसों साल तक जब तक कि आप की वफात न हो गई,फिर आप के बाद खुलफाये राशदीन और संपूर्ण सहाबा और भलाई के साथ उन की पैरवी करने वाले ताबईन का यही तरीक़ा रहा,क्या धर्ती का कोई इंसान इन में से किसी के तअल्लुक़ से कोई सही,या हसन,या ज़ईफ अथवा मुन्क़ते रिवायत ला सकता है कि उन्हें जब कोई आवश्यक्ता होती तो वह क़ब्रों का इरादा करते,वहां पर दुआ करते और उन को छू कर (तबर्रुक प्राप्त करते) थे,चे जाये कि वह वहां पर नमाज़ अदा करें,या उन क़ब्र वालों के वसीले से अल्लाह को पुकारें,या उन से अपनी ज़रूरतें बयान करें? हमें इस विषय में कोई असर या कोई एक हर्फ ही दिखा दें।

**आठवीं दलील : जो अल्लाह के अतिरिक्त से दुआ करता और उस की इबादत करता है वह उस माबूद को प्रेम और सम्मान में अल्लाह के बराबर ठहराता है, क्योंकि वह (इबादतो मुहब्बते के साथ) इसी प्रकार उस का इरादा करता है जिस प्रकार अल्लाह का इरादा करता है**,यह बराबरी और तश्बीही शिर्क की असल हक़ीक़त है,इस का अर्थ और इस का सच्चा प्रतो है,अल्लाह ताला ने काफिरों के अमल को स्पष्ट करते हुये कहा :

तर्जुमा : फिर काफिर (और चीज़ों को) अल्लाह के बराबर ठहराते हैं।

अर्थात वह (उन्हें) अल्लाह के बराबर मानते हैं,अल्लाह ताला ने जहन्नम के अंदर उन का अपनी दुनियावी ज़िंदगी को याद करने के विषय में फरमाया :

तर्जुमा : अल्लाह की क़सम हम तो खुली हुई गुमराही में थे। जब कि तुम्हें अल्ला ताला के बराबर ठहराते थे।

शैख अब्दुर्रहमान बिन सादी इस आयत की तफ्सीर में लिखते हैं : " इबादत, मुहब्बत,डर और उम्मीद में तुम्हें अल्लाह की तरह पुकारते थे,उस समय उन के सामने उन की गुमराही स्पष्ट हो जायेगी और वह इक़रार करेंगे कि उन पर अल्लाह की सज़ा इंसाफ अनुसार है,क्योंकि उन्हों ने इन बातिल माबूदों को इबादत में अल्लाह ताला के बराबर ठहराया "।
अल्लाह को मख्लूक़ के बराबर ठहराना बातिल है,क्योंकि न तो कोई अल्लाह के बराब है और न कोई साझी,न उस के जैसा है और न कोई उस के प्रकार,अल्लाह ताला का फर्मान है :
तर्जुमा : कोई उस का हमसर नहीं।
और फर्माया :
तर्जुमा : किसी को अल्लाह का हमसर न बनाओ।
अर्थात उस का हम मिस्ल और नज़ीर न ठहराओ।
इब्नुल क़य्यिम फर्माते हैं : शिर्क की दो क़िस्में हैं : बड़ा शिर्क और छोटा शिर्क,बड़े शिर्क को अल्लाह बिना तोबा के क्षमा नहीं करता,और वह यह है कि अल्लाह के सिवा किसी को उस का साझी बनाये और उस से अल्लाह की तरह मुहब्बत रखे,यह वह शिर्क है जिस में मुश्रिकों के माबूद को अल्लाह ताला के बराबर ठहराया जाता है,इसी लिये वह जहन्नम में अपने माबूदों से कहेंगे : अल्लाह की क़सम हम तो वाज़ेह गुमराही में थे,जब कि तुम्हें अल्ला ताला के बराबर ठहराते थे।
जब कि वह स्वयं मानते थे कि अल्लाह ही अकेला हर चीज़ को पैदा करने वाला,पालनहार और मालिक है,उन के माबूद न तो किसी चीज़ को पैदा कर सकते हैं,न रोज़ी दे सकते हैं और न ज़िंदगी और मौत पर शक्ति रखते हैं,बल्कि यह बराबरी केवल मुहब्बत,सम्मान और इबादत की बराबरी हुवा करती थी,जैसा कि संसार के अधिकतर मुश्रिकीन की सुरते हाल है,बल्कि वह सब अल्लाह को छोड़ कर अपने माबूदों से मुहब्बत रखते,उन का सम्मान करते और उन से दोस्ती रखते हैं,उन में अधिकतर लोग अल्लाह से बढ़ कर अपने माबूदों से प्रेम करते हैं,उन के ज़िक्र से जितना खुश होते हैं वह उस खुशी से अधिकतर होती है जो केवल एक अल्लाह के ज़िक्र से उन के चेहरे पर दिखती है,उन को पीरो मुर्शिद माबूदों की शान में अगर कोई गुस्ताखी करता है तो अल्लाह ताला की शान में की जाने वाली गुस्ताखी से अधिक वह उस से क्रोधित होते हैं,जब उन के माबूदों की कोई इज़्ज़त पामाल होती है तो शेर के प्रकार बिफर जाते हैं,जब कि अल्लाह की हुर्मतों की पामाली पर उन्हें थोड़ा भी क्रोध नहीं आता!

बल्कि अल्लाह की हुर्मत की पामाली करने वाला यदि उन्हें कुछ खिला दे तो वह उस से प्रसन्न हो जाते हैं और उन के दिल में कोई नफरत नहीं रहती,हम ने और दूसरे लोगों ने भी इसे स्पष्ट रूप से देखा है।

आप देखेंगे कि ऐसा करने वाला उठते बैठते,बीमारी,डर और हर हाल में अपने माबूद के ज़िक्र को अपनी आदत बना लेता है,अल्लाह को छोड़ कर अपने माबूद को पुकारना उस के दिल और ज़ुबान के लिये हर समय का कार्य बन जाता है,वह अपने अमल को बुरा भी नहीं जानता,बल्कि इस गुमान में रहता है कि वह अल्लाह तक उस की हाजत पहुंचाने का दरवाज़ा,उस के पास उस का सिफारशी और वसीला है,ठीक यही हालत बुतों की पूजा करने वाले की भी थी।

यही वह चीज़ है जो इन के दिलों में क़ायम थी,और सब मुश्रिकों ने उसे एक दूसरे से प्राप्त किया,अगरचे उन के माबूद अलग अलग ही क्यों न हों,उन मुश्रिकों के माबूद पत्थर के थे जब कि उन के सिवा जो मुश्रिकीन हैं उन के माबूद इंसानी शक्ल में हैं,अल्लाह ताला उन मुश्रिकों के पूर्वजों के बारे में फर्माता है :

तर्जुमा : जिन लोगों ने उस के सिवा और दोस्त बनाये हैं वह कहते हैं कि हम उन को इस लिये पूजते हैं कि हम को अल्लाह का क़रीबी बना दें। जिन बातों में यह इख्तिलाफ करते हैं अल्लाह उन में उन का फैसला कर देगा।

फिर अल्लाह ने उन के काफिर और झूटे होने की गवाही दी और यह बताया कि अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देगा :

तर्जुमा :अल्लाह उस व्यक्ति को जो झूटा और नाशुक्रा है,हिदायत नहीं देता।

उस व्यक्ति का यही हाल होता है जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरे को दोस्त बनाये और इस गुमान में रहे कि वह उसे अल्लाह के क़रीब कर देगा,कितने कम हैं ऐसे लोग जो उस से बच जाते हैं,बल्कि कितने नायाब हैं वह लोग जो अपने ऊपर एतराज़ करने वालों और नक़्द करने वालों से दुश्मनी नहीं करते।

आप अधिक लिखते हैं :

मुश्रिक इंसान मख्लूक़ को उलूहित की विशेषताओं में पैदा करने वाले को हम मिस्ल मानता है,क्योंकि यह उलूहियत की विशेषताओं में से है कि अल्लाह लाभ,हानि,देने और न देने का अकेले मालिक है,जो इस बात को लाज़िम है कि केवल उसी से दुआ की जाये,उसी से डर,उम्मीद की जाये और उसी पर भरोसा रखे,तो जो व्यक्ति उसे किसी मख्लूक से जोड़े रखे वह उस को खालिक़ का हम मिस्ल ठहराता है, और ऐसे व्यक्ति को जो अपने लिये भी किसी प्रकार के लाभ और हानि,मौत और जिंदगी और दोबारा उठाये जाने की ताक़त नहीं रखता,चे जाये कि किसी और के लिये उन चीज़ों की ताक़त रखे,उस अल्लाह

का हम मिस्ल ठहराता है जिस के हाथ में हर चीज़ है,सब मामलात का लगाम उसी के हाथ में है,उसी की ओर हर चीज़ लौट कर जाने वाली है जो वह चाहता है वह होता है और जो नहीं चाहता वह नहीं होता,जो वह दे उसे कोई नहीं टाल सकता,और जिस चीज़ को न दे वह कोई नहीं दे सकता,बल्कि जब वह अपने बंदे के लिये दया का द्वार खोलता है तो उसे कोई भी नहीं बंद कर सकता,और अगर उस से अपनी दया रोक ले तो कोई उसे दया नहीं दे सकता, यह एक अधिक बे तूकी और बे माना मुमासलत है कि अपनी ज़ात में आजिज़ और बेकस ,फक़ीर और तुच्छ इंसान को मुतलक़ कुदरत और बे नियाज़ी रखने वाले अल्लाह का हम मिस्ल ठहराया जाये।

उलूहियत की विशेषता में से यह भी है कि अल्लाह हर प्रकार से कमाले मुतलक का हामिल है, जिस में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं है,इस से यह लाज़िम आता है कि सब इबादतें केवल उसी के लिये रवा रखी जायें,सम्मान और इज़्ज़त,डर और खौफ,दुआ और मुनाजात,उम्मीद,तौबा,भरोसा और सहायता मांगना (सब उसी के लिये खास रखे जायें),उस के सामने अधिकतर नम्रता और उस से अधिकतर प्रेम किया जाये,बुद्वि,शरीअत और प्रकृति इस बात पर दलालत करती हैं कि यह सब आमाल केवल उसी के लिये अंजाम दिये जायें,और बुद्वि,शरीअत और प्रकृति इस बात से रोकती हैं कि उन्हें किसी और के लिये अंजाम दिया जाये,तो जिस व्यक्ति ने उन में से कोई अमल अल्लाह के अतिरिक्त के लिये अंजाम दिया उस ने उस को ऐसी  हस्ती से तश्बीह दी जिस का न कोई हम मिस्ल है, न नज़ीर है और न साझी है,यह अधिक बुरी और अधिकतर बातिल तश्बीह है,चूंकि अधिकतर बुरी तश्बीह है और उस में अधिकतर जुल्म पाया जाता है,इस लिये अल्लाह ताला ने अपने बंदों को यह सूचना दी है कि वह इस गुनाह को क्षमा नहीं करता है,जब कि उस ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य किया है।

उलूहियत की एक विशेषता यह भी है कि बंदगी दो ऐसे खंबों पर खड़ी होती है कि जिन के बिना उस का वजूद बाक़ी नहीं रह सकता,अधिकतर नम्रता के साथ अधिकतर प्रेम,यही कमाले उबूदियत व बंदगी है,उबूदियत में बंदों के दरजे इन्हीं दो उसूलों की बुन्यिाद पर भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं,तो जो अपनी मुहब्बत,नम्रता और खुशू व खुज़ू का अल्लाह के अतिरिक्त के सामने पेश करता है तो वह उस को अल्लाह के खालिस हक़ में उस का हम मिस्ल ठहराता है,यह कदापि नहीं हो सकता कि कोई भी शरीअत उस की इजाज़त दे,उस की बुराई हर इंसान की फित्रत और बुद्वि में मौजूद है,लेकिन शैतान ने अधिकतर मख्लूक़ की फित्रत और बुद्वि को बदल दिया,उन में बिगाड़ पैदा कर दिया और उन्हें हक़ के मार्ग से हटा दिया,फिर वह लोग अपनी पहली फित्रत की ओर

लौट गये,जिन के लिये अल्लाह ने स्वर्ग लिख रखी है, तो अल्लाह ने उन की ओर अपने संदेष्टाओं को भेजा और उन पर अपनी किताबें उतारी जिन में उन की फित्रत और बुद्वि अनुसार तालीमात थीं,उस से उन का नूर अधिक बढ़ गया :( अल्लाह अपने नूर से जिस को चाहता सीधा मार्ग दिखाता है।)
जब इस बात का पता चल गया तो ( यह जानना भी अनिवार्य है कि) उलूहियत की विशेषता में से सज्दा भी है,तो जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त के लिये सज्दा किया उस ने मख्लूक को अल्लाह के हम मिस्ल ठहराया।
उलूहियत की एक विशेषता तवक्कुल और भरोसा है,जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त पर भरोसा करता है वह उसे अल्लाह जैसा ठहराता है।
इसी प्रकार तौबा भी उलूहियत की एक विशेषता है,जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त से तौबा करता है वह उसे अल्लाह के हम मिस्ल ठहराता है।
और सम्मान और इज़्ज़त के साथ अल्लाह की क़सम खाना भी उलूहियत की विशेषता में से है,जिस ने अल्लाह के अतिरिक्त की क़सम खाई उस ने उस को अल्लाह के मुशाबह ठहराया,यह रही तश्बीह की बात [92]।
शैख शरीफ बिन मुहम्मद बिन नासिर अल हाज़मी [93] लिखते हैं : हर ज्ञानी इस बात को जानता है कि काफिर जिन बुतों की पूजा करते थे वह उन के सम्मान और उस अक़ीदे की बेस पर करते थे कि वह लाभ और हानि के मालिक हैं,इसी लिये आवश्यक्ता पड़ने पर उन से सहायता मांगते और कुछ हालात में अपने मालो दौलत के ज़रिये उन की निकटता प्राप्त करते थे,यही कार्य क़ब्र प्रस्त भी कर रहे हैं,वह क़ब्रों की इस प्रकार सम्मान करते हैं जो केवल अल्लाह ताला के लिये ही सही है,बल्कि इस प्रकार गलत विश्वास रखने वाला गुनहगार और नाफर्मान जब उस क़ब्र के सामने या उस के क़रीब होता है जिस के तअल्लुक़ से वह लाभ और हानि का अक़ीदा रखता है,तो उस डर से गुनाह को छोड़ देता है कि कहीं वह मुर्दा उसे फौरी अज़ाब में न डाल दे,जब कि कभी बभार वही व्यक्ति यदि हरमे इलाही के अन्दर या किसी मस्जिद या उस के क़रीब होता है तो उस गुनाह से नहीं रुकता [94]।

---

([92]) (अद्दाअ वद्दवा लि इब्निल क़य्यिम : 208–211)।

([93]) आप की जीवनी के लिये देखें : "उकूदुद्दुरर्र फी तराजुमे उलमाइल क़र्न अस्सालिस अशर " : 2/723,लेखक : हसन बिन अहमद आकिश ज़मदी,तहक़ीक़ : डाक्टर इस्माईल दिन मुहम्मद अल बिश्री,प्रकाशक : मक्तबा जामिअतुश्शर्क़ा।

([94]) (अैक़ाजुल वस्नान अला बयानिल खललि फी सुल्खिल अख्वान : 37 प्रकाशक : दारुश्शरीफ –रियाज़)।

शैख अब्दुल्लाह अबा बतीन लिखते हैं :
जिस ने ज़िंदा और मुर्दा के बीच बराबरी की और कहा : ( मुर्दा से भी वह चीज़ मांगी जा सकती है जो ज़िंदा से मांगी जाती है) तो उस ने ऐसी चीज़ों को बराबर ठहराया जिन के बीच अल्लाह और लोगों ने तफ्रीक़ किया है,अगर कोई पागल व्यक्ति भी किसी के घर जाये ताकि उसे खाना खिलाये और जब पहुंचे तो देखे कि वह मर चुका है और उस क घर वाले उस के आस पास इकट्ठा हैं,तो वह मुर्दा के बजाय उस के पास मौजूद जीवित लोगों से अपनी आवश्यक्ता बयान करेगा [95]।
और अधिक लिखते हैं : ज़िंदों और मुर्दों के बीच बराबरी करने वाले व्यक्ति से यह कहा जायेगा : यह मालूम सी बात है कि संसार वाले एक दूसरे से अपनी ज़रूरतें तलब करते हैं,चाहे वह नेक हो या बुरा,मुस्लिम हो या काफिर,नबी ﷺ ने भी सफ्वान बिन उमय्या से ढाल उधार ली थी जब कि वह उस समय मुश्रिक थे,कुछ जंगों में आप ने कुछ मुश्रिकों से भी मदद ली,मुसलमान अब भी अपनी ज़रूरतें मुसलमान,ज़िम्मी,नेक और बुरे सब से पूरी करते हैं,इस बिना पर ज़िंदों और मुर्दों के बीच बराबरी करने वाले व्यक्ति पर यह लाज़िम आता है कि ऊपर लिखे गये क़िस्मों की मुर्दों के बीच बराबरी करें जिस प्रकार वह दुनिया में ( ज़रूरतें पूरी करने में) एक जैसे थे [96]।
आप अधिक लिखते हैं : ज़िंदा व मुर्दा के बीच बराबरी करने वाले से यह भी कहा जायेगा : अगर कोई इंसान किसी दूसरे को माल दे और कहे कि : किसी भरोसे वाले व्यक्ति के पास उसे अमानत के तौर पर रख दो,तो वकील जाये और शैख अब्दुल क़ादिर जैसे किसी नेक इंसान की क़ब्र के पास उसे रख आये और कहे कि : यह आप के पास फलाने की अमानत है और उन से इस की रक्षा की विन्ती करे लेकिन वह ग़ायब हो जाये,तो लोग ऐसे व्यक्ति को ऐसा पागल कहेंगे जिस से ज़िम्मेदारी दूर नहीं होती?बल्कि वह उस पर उस का तावान ठोकेंगे,(ऐसी सूरत में)ज़िंदा व मुर्दा के बीच बराबरी करने वाले पर यह कहना अनिवार्य होगा कि : वह अपने काम में हक़ पर है और उस पर कोई तावान नहीं,हो सकता है लोगों के सामने रुस्वाई के डर से ऐसा न कहे,ऐसी हालत में वकील जिसे अमानत रखने की ज़िम्मेदारी दी गई थी वह कह सकता है कि : मैं ने आप के उस मज़हब अनुसार कोई कोताही नहीं की

---

([95]) (तासीस अल तक़्दीस फी कश्फ तलबीस दावूद बिन जरजीस : 82)।

([96]) (तासीस अल तक़्दीस फी कश्फ तलबीस दावूद बिन जरजीस : 88)।

कि ज़िंदा व मुर्दा के बीच बराबरी पाई जाती है,क्योंकि आप कहते हैं कि जो चीज़ ज़िंदा से मांगी जाती है,वह चीज़ मुर्दा से भी मांगी जा सकती है,और मैं ने शैख अब्दुल क़ादिर से उस अमानत की रक्षा करने को कहा था जो कि उन से वाबिस्ता मेरी एक ज़रूरत है,और आप मुर्दों से हाजत तलब करने को जायज़ ठहराते हैं तो मुझे ग़लत क्यों कह रहे हैं? [97]।

नवीं दलील : अल्लाह ताला ऐसे अमल को क़बूल नहीं करता जिस में रिया (दिखावा) की मिलावट हो,क्योंकि अल्लाह ताला इस से बेनियाज़ है कि कोई उस का साझी हो,इसी लिये दुआ जैसी इबादत में भी शिर्क की मिलावट रद्द के क़ाबिल है,क्यों कि इन दोनों का द्वार एक ही है,अर्थात मखलूक़ की निकटता प्राप्त करना है,सही मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा ﵁ से रिवायत है वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फर्मायया : मैं और साझीदारों के मुक़ाबले में अधिकतर शिर्क से बेनियाज़ हूं,जिस ने कोई ऐसा अमल किया जिस में मेरे साथ मेरे अतिरिक्त को मिलाया और साझी किया तो मैं उस को और उस के साझी के काम को छोड़ देता हूं [98]।

अल्लाह के नबी ﷺ ने फर्माया : दिखावा छोटा शिर्क है जो उन आमाल को बर्बाद कर देता है जिन में इस की मिलावट होती है,इस की ताईद महमूद बिन लबीद से रिवायत की गई हदीस से होती है जिस में है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फर्माया : तुम्हारे तअल्लुक़ से मुझे जिस चीज़ का अधिकतर डर है वह छोटा शिर्क है,सहाबा ने पूछा कि : ऐ अल्लाह के रसूल! छोटे शिर्क का क्या अर्थ है? आप ने फर्माया : वह दिखावा है,जब सब लोगों को उन के आमाल का बदला दे दिया जायेगा उस समय अल्लाह ताला दिखावा करने वालों से कहेगा : दुनिया में जिसे तुम दिखाते थे उन के पास जा कर देखो क्या तुम उन के पास कोई बदला पा रहे हो? [99]

जब दिखावा एक ऐसा शिर्क है जो अमल को बर्बाद कर देता है तो उस दुआ का क्या हुक्म होगा जो खास अल्लाह के अतिरिक्त से ही की जाये? निःसंदेह इस में अधिक खतरनाकी और हानि है।

---

([97]) (तासीस अल तक़्दीस फी कश्फ तलबीस दावूद बिन जरजीस : 84–85)।

([98]) इमाम अहमद ने (मुस्नद में) इस की तख्रीज की है और इस की तहक़ीक़ करने वालों ने कहा है कि इस की सनद हसन के दरजे तक पहुंचती है।

([99]) पिछला हवाला देखें।

जब दिखावा करने वाले से क़यामत के दिन यह कहा जायेगा कि :(तुम अपने अमल का बदला उन से मांगो जिन के लिये तुम ने अमल किया) तो जो अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारते हैं उन से भी क़यामत के दिन यही कहा जायेगा,बल्कि (जिन को वह पुकारते थे) वह उन से अपनी बराअत ज़ाहिर करेंगे।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें हर छोट बड़े शिर्क से बचाये।

**दस्वीं दलील : अल्लाह ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि केवल अल्लाह ही दुआ क़बूल करता है,इसी लिये इस बात पर ईमान लाना अनिवार्य है,वरना उन आयतों को ठुकरान और उन का इन्कार करने वाला माना जायेगा,**अल्लाह ताला ने फर्माया :

तर्जुमा : बेकस की पुकार को जब कि वह पुकारे,कौन क़बूल करके सख्ती को दूर कर देता है।

और अल्लाह फर्माता है :

तर्जुमा : आप कहें कि अपना हाल तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का कोई अज़ाब आ पड़े या तुम पर क़यामत ही आ पहुंचे तो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे अगर तुम सच्चे हो,बल्कि खास उसी को पुकारोगे,फिर जिस के लिये तुम पुकारोगे अगर वह चाहे तो उस को हटा भी दे और जिन को साझी ठहराते हो उन को भूल जाओगे।

अधिक अल्लाह का फर्मान है :

तर्जुमा : उसी को पुकारना सत्य है,जो लोग औरों को उस के सिवा पुकारते हैं वह उन की पुकार का कुछ भी उत्तर नहीं देते,मगर जैसे कोई व्यक्ति अपने दोनों हाथ पानी की ओर फैलाये हुये हो कि उस के मुंह में पड़ जाये,हालांकि वह पानी उस के मुंह मं पहुंचने वाला नहीं। उन इन्कार करने वालों की जितनी पुकार है सब गुमराही में है।

जो लोग यह कहते हैं कि क़ब्र वाला दुआ करने वाले की दुआ क़बूल करता है, तो वह बड़ी खतरनाकी के शिकार हैं,जो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार करना है क्योंकि उस ने कुर्आन की उस खबर की तस्दीक़ नहीं की जो यह कहती है कि केवल अल्लाह ही दुआ क़बूल करता है,अल्लाह का कथन है :

तर्जुमा :यह सब इस लिये कि अल्लाह ही हक़ है और उस के सिवा जिसे भी यह पुकारते हैं वह बातिल है।

और सूरे लुक़्मान में फर्माया :

तर्जुमा : यह सब इन्तिज़ामात इस कारण हैं कि अल्लाह ताला हक़ है और उस के सिवा जिन जिन को लोग पुकारते हैं सब बातिल है।

जहां तक अल्लाह को पुकारने की बात है तो अल्लाह ताला ने उसे सत्य कहा है : जैसा कि फर्माया :
तर्जुमा : उसी को पुकारना सत्य है।
**बारहवीं दलील : अल्लाह ताला ने उस व्यक्ति को अधिकतर बड़ा गुमराह कहा है जो उस के सिवा किसी और को पुकारे,** फर्माया :
तर्जुमा : उस से बढ़ कर गुमराह और कौन होगा जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है जो क़यामत तक उस की दुआ क़बूल न कर सकें बल्कि उन के पुकारने से बिल्कुल बे खबर हों।
इमाम बैज़ावी [100] अपनी तफ्सीर में लिखते हैं :
" आयत में इस बात का इन्कार मौजूद है कि मुश्रिकीन से बढ़ कर भी कोई (गुमराह) हो सकता है,क्योंकि यह वह लोग हैं जो सब से अधिक सुनने वाले,देखने वाले,दुआयें क़बूल करने वाले,कुदरत रखने वाले और खबर रखने वाले (अल्लाह ताला) की इबादत छोड़ कर उस की इबादत करने लगे जो उस की सुनता ही नहीं,चेजाये कि उसे उन के भेद का ज्ञान हो और उन की मस्लहतों का खयाल(बल्कि उन के पुकारने से बिल्कुल बे खबर हैं)क्योंकि या तो वह जमादात हैं,या फिर पाबंद और अपनी ज़ात में मसरूफ बंद`" [101]।
**तेरहवीं दलील :**
**दुआये इलाही को छोड़ना अल्लाह के क्रोध का करण है अगरचे वह अल्लाह के अतिरिक्त को न पुकारे तो उन के विषय में क्या कहा जा सकता है जो अल्लाह के अतिरिक्त ही को पुकारता हो?!**
अबू हुरेरा ﵁ फर्माते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फर्माया : "जो बंदे अल्लाह ताला से न मांगें अल्लाह ताला उस पर क्रोधित होता है " [102]।
चौदहवीं दलील : अल्लाह ताला ने ऐसे लोगों को जहन्नम की धमकी दी है जो उस के अलावा किसी और को पुकारें,जैसा कि अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﵁ से रिवायत है,नबी ﷺ ने एक कल्मा फर्माया : और मैं ने एक और बात कही,आप

---

([100]) आप अब्दुल्लाह बिन उमर बिन मुहम्मद बिन अली,अबुल खैर नासिरुद्दीन बैज़ावी हैं,आप शाफई मस्लक के एक इमाम,अल्लामा, फिक़्ह,तफ्सीर और अरबी जुबान के माहिर,तेज़ निगाह,नेक,इबादत गुज़ार और ज़ाहिद इंसान थे। देखें : तबक़ातुल मुफस्सिरीन,लेखक दाऊदी,पेज : 173,प्रकाशक : दारुल कुतुब अल इल्मिय – बैरूत।

([101]) अन्वारुत्तन्ज़ील व अस्रारुत्तावील,सूरतुल अहक़ाफ : संक्षिप्त में।

([102]) इसे तिर्मिज़ी (3373) ने रिवायत किया है और तबरानी ने " अल अवसत " में ( 2452) रिवायत किया है और इसे अल्बानी ने सही कहा है।

ﷺ ने फर्माया कि जो व्यक्ति इस हाल में मर जाये कि वह अल्लाह के सिवा औरों को भी उस का साझी ठहराता रहा हो तो वह नर्क में जाता है,और मैं ने यूं कहा है कि जो व्यक्ति इस हाल में मरे कि अल्लाह का किसी को साझी न ठहराता हो तो वह स्वर्ग में जाता है " [103]

अबू हुरेरा رضي الله عنه फर्माते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फर्माया : " क़यामत के दिन जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी,उस की दो आंखें होगी जो देखेंगी,दो कान होंगे जो सुनेंगे और एक ज़ुबान होगी जो बोलेगी,वह कहेगी : मुझे तीन लोगों पर मुक़र्रर किया गया है,हर सर्कश ज़ालिम पर,हर उस व्यक्ति पर जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को पुकारता हो,और मूर्तियां बनाने वालों पर " [104]

शैखअब्दुर्रहमान बिन क़ासिम फर्माते हैं कि हमें कुफ्र व इर्तिदाद की किसी ऐसी क़िस्म का ज्ञान नहीं जिस के बारे में इस प्रकार दलीललें आई हों जो अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने के विषय में आई हैं,जैसे इस से रोका गया है,ऐसा करने पर डांट फटकार लगाई गई,ऐसा करने वाले को काफिर कहा गया,और उसे हमेशा के लिये जहन्नमी होने की धमकी दी गई,इस मस्ले पर स्थाई रूप से किताबें लिखी गई हैं,अधिकतर उलमा ने इस पर इज्मा नक़ल किया है और फर्माया कि यह इस्लाम की आवश्यक्ताओं में से एक है। [105]

मेरा मानना है कि इस मस्ले में शायर का यक कहना बुन्यिाद की हैसियत रखता है :

لا تسألن بني آدم حاجة وسل الذي أبوابه لا تحجب

الله يغضب إن تركت سواله وبني آدم حين يسأل يغضب

तर्जुमा : किसी इन्सान से न मांगो,बल्कि उस से मांगो जिस का दरबार दंद नहीं होता।

---

([103]) इसे बुखारी ने (4497) रिवायत किया है इसी प्रकार इमाम अहमद ने : (1/374) रिवायत किया है।

([104]) तिर्मिज़ी (2574) अल्बानी ने इसे सही कहा है।

([105]) अस्सैफ अल मस्लूल अला आदिदिर्रसूल : 24 संक्षिप्त में।

अल्लाह को क्रोध तब आता है जब तुम उस से मांगना छोड़ दो,जब कि इन्सान से जब मांगा जाये तो वह क्रोधित हो जाता है।

**पंदरहवीं दलील : जो लोग संदेष्टाओं और नेक लोगों को पुकरते हैं,वह यह मानते हैं कि अल्लाह ताला ही है जो पैदा करने वाला और पालनहार है,जिस के हाथ में हर चीज़ है,और इस से लाज़िम आता है कि जिस प्रकार उन्हों ने अल्लाह ताअला का अपनी रब माना,इसी प्रकार इबादत केवल उसी की करें,और दुआ तो एक महान उनासना है।**

अल्लाह ताला ने फर्माया :

तर्जुमा : हे लोगो! अपने उस रब की इबादत करो जिस ने तुम्हें और तुम से पहले लोगों को पैदा किया,यही तुम्हारा बचाव है,जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना और आकाश को छत बनाया और आकाश से पानी बरसाकर उस से फल पैदा कर के तुम्हें जीविका दी,खबरदार जानने के बावजूद अल्ला के साथ किसी को साझी न बनाओ।

तो जिस प्रकार रुबीबियत में अल्लाह का कोई साझी नहीं,इसी प्रकार उलूहियत में भी वह अकेला है,सब से बड़ा हक़दार है,उस में भी उस का कोई साझी नहीं,क्योंकि तौहीदे रुबीबियत,तौहीदे उलूहियत को लाज़िम है।

शैख अब्दुर्रहमान बिन सादी लिखते हैं कि : " अल्लाह ताला ने अधिकतर जगहों पर तौहीदे उलूहियत को तौहीदे रुबीबियत के साथ मिला कर बयान फर्माया है क्योंकि यह इस पर दलालत करता है और इबादत के मामले में मुश्रिकीन ने भी इसे स्वीकार किया है " [106]

**सोलहवीं दलील : अल्लाह के अरिक्ति को पुकारना नतीजा के एतबार से भी हराम है, और वह नतीजा यह है कि जिन को पुकारा जाता है उन्हें रब समझा जाता है,चाहे वह स्थाई तौर पर हों या फिर अल्लाह तआला के शरीक ठहराये जायें,**इमाम शौकानी अपनी किताब " अद्दुर्र अल नज़ीद फी इखलासि कलिमतित्तौहीद " में लिखते हैं : क़ब्रों में दफन बुज़ुर्गों और कुछ मशहूर नेक लोगों के विषय में अधिकतर आम लोग और कुछ खास लोगों का यह अक़ीदा आज़माइश का कारण है कि वह लोग उन आमाल पर शक्ति रखते हैं जिन पर केवल अल्लाह को शक्ति प्राप्त है और वे ऐसे ऐसे कार्यों को करते हैं जो केवल अल्लाह के लिये संभव है,यहां तक कि उन के दिल की आवज़ ज़ुबान

---

([106]) तैसीरुल करीम अर्रहमान फी तफ्सीरि कलामिल मन्नान,सूरे अस्साफ्फात की शुरूआती तफ्सीर।

की आवाज़ बन गई,फिर उन्हें कभी अल्लाह के साथ पुकारने लगे तो कभी अल्लाह को छोड़ कर केवल उन्हें ही पुकारते हैं,वे इन के नामों का ज़ोर ज़ोर से जाप करते हैं और इस प्रकार इन का सम्मान करने लगे जिस प्रकार सम्मान लाभ और हानि के मालिक के लिये शोभा है,नमाज़ और दुआ की हालत में अपने रब के सामने जिस प्रकार विनम्रता करते हैं उस से अधिक नम्रता उन के (अर्थात क़ब्र वालों और जीवित नेक लोगों) के लिये इख्तियार करने लगे। यदि यह शिर्क नहीं तो हमें नहीं मालूम [107] कि शिर्क क्या है और अगर यह कुफ्र नहीं तो संसार में कोई काम कुफ्र का काम नहीं हो सकता "। इमाम शौकानी की बात इख्तिसार के साथ संपन्न हुई।

शैख अहमद बिन यहया नजमी [108] फर्माते हैं कि इस उम्मत के मुश्रिकीन का शिर्क अरब के मुश्रिकों के शफाअत और वसीला के अक़ीदे से आगे बढ़ कर बादशाहत,संसार की तदबीर और जीवित करने और मारने तक जा पहुंचता है,इस उम्मत के अंदर ऐसे भी लोग हैं जिन का अक़ीदा है कि ब्रहमांड की सियासत की सारी ज़िम्मेदारी चार अक़्ताब उठा रहे हैं।

अल्लाह की तौहीद के तअल्लुक़ से मुसलमानों की जिहालत यहां तक पहुंच गई है कि वे तौहीद की दलीलों को देखते हुये भी अपने इस दावे से बाज़ नहीं आये कि अंबिया और नेक लोग यहां तक कि मुर्दे उन्हें लाभ और हानि पहुंचाने की पूरी शक्ति रखते हैं,जो कि अल्लाह ताला उन्हें अपने ब्रहमांड के निज़ाम अनुसार दिया होता है,बल्कि वह यह भी अक़ीदा रखते हैं कि वह संपूर्ण संसार को नियंत्रित करते हैं जैसा कि चारों अक़्ताब के बारे में उन का विश्वास है। इस दौर के कुछ अज़हर के बड़े उलमा इस मस्ले को अज़हर के सरकारी मजल्ला नूरुल "इस्लाम" में लिखते हैं,जिस में वह अल्लाह के अरिक्ति मुर्दों को

---

([107]) छपे हुये नुस्खे में " तदरी " का शब्द लिखा हुवा है,मगर मुझे यह लिखावट की गलती लग रही है।

([108]) आप अहमद बिन यहया बिन मुहम्मद बिन बशीर नज्मी हैं। सऊदी अरब के जुनूब में वाक़े निजामिया के बासी हैं,आप की पैदाइश 1346 हिज्री में हुई,आप के अध्यापकों में : शैख अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद क़र्आवी,शैख हाफिज़ बिन अहमद हकमी और सऊदिया के मुफ्ती मुहम्मद बिन इब्राहीम आले शैख महत्वपूर्ण हैं,आप एक फक़ीह और मुहद्दिस थे,आप की अनेक किताबें हैं जिन में से कुछ यह हैं : अवज़हुल इशारा फिर्रद्दे अला मन अजाज़ल मम्नूअ मिनज़्ज़ियारा , तन्ज़ीहुश्शरीआ अन इबाहतिल अगानी अल खलीआ, रिसाला फी हुक्मिल जहरि बिल बस्मला,अल मौरिद अल अज़्ब अज़्ज़ुल्लाल फीमन तक़्दा अला बाज़िल मनाहिज अद्दाविय्या मिनल अक़ाइद वल आमाल। आप की वफात 1429 हिज्री में हुई।

पुकारने और हर वह मामला जिन में आम लोग बे बस हों,जैसे फायदा पहुंचाने और मुसीबत को टालने में उन से मदद तलब करने के जायज़ होने का फतवा देते हैं। अनेक उलमा यह साबित करने के लिये किताबें लिखीं कि अल्लाह के अरिक्ति को पुकारना और उन से सहायता मांगना सही है और यह नेक मुर्दे स्वयं को लाभ और हानि पहुंचाने की शक्ति रखते हैं,इसी प्रकार यह साबित करने के लिये कि वह अपनी क़ब्रों से निकलते हैं और पुकारने वालों की आवश्यक्तायें पूरी करते और उन की सहायता भी करते हैं। [109]

बातिल माबूदों के रब होने का दावा पूराने मुश्रिकों ने भी किया था,जैसा कि आद की क़ौम ने हूद से कहा था :

तर्जुमा : बल्कि हम तो यही कहते हैं कि तू हमारे किसी माबूद के बुरे झपटे में आगया है।

अर्थात तुम हमारे माबूद के किसी बुरे तीर का शिकार हो गये। गोया प्रभाव डालने और मामलात ठीक करने की निस्बत उन माबूदों की ओर करते थे।

हमारे इस दौर का हाल यह है कि कुछ क़ब्र प्रस्त यह मानते हैं कि अगर किसी शहर या किसी दिहात में कोई क़ब्र हो तो उन्हें उस की बर्कत से रोज़ी मिलती है,उन की मदद की जाती है और दुश्मनों का डर और काले बादल छट जाते हैं। और यह कि सय्यदा नफीसा मिस्र और क़ाहिरा की हिफाज़त करती हैं [110]। इसी प्रकार दसूक़ी और बदवी भी हिफाज़त करते हैं,और शैख अब्दुल क़ादिर बग़दाद के कुतुब और हिफाज़त करने वाले हैं और फलाने शाम और हिजाज़ की हिफाज़त करने वाले (और फलाने पीरो मुर्शिद पाक और हिंदुस्तान की हिफाज़त करने वाले)हैं,इन लोगों ने हर शहर की हिफाज़त मुतय्यन कर रखी है। [111]

---

([109]) अवज़हुल इशारा फिर्रद्दे अला मन अजाज़ल मम्नूअ मिनज़्जियारा : 342–345,संक्षिप्त में,प्रकाशक : मक्तबतुल गुरबा अल असरिय्या– मदीना।

([110]) इब्ने मन्ज़ूर लिसानुल अरब में कहते हैं कि : खुजैरुल क़ौम लोगों की रक्षा करने वाले को कहा जाता है,लोग जब तक उन के शहर में पनाह लिये होते हैं वह इन की देख रेख करते हैं।

([111])हिवार मअस्सूफिया लेखक : अबू बक्र इराक़ी : 56 से लिया गया है,और देखें : दमआ अलत्तौहीद : 78,प्रकाशक : अल मुन्तदा अल इस्लामी– लंदन।

ज़ाहिद कौसरी [112] का बयान है कि शाम को मुसीबतों और आज़माइशों से चार अवलिया बचाये हुये हैं जो अपनी अपनी क़ब्रों से ही काम करते हैं । [113] उन के पास हवाई रक्षा के संसाधन हैं,मिस्र के फ्यूम शहर में मौजूद अली रूबी के मज़ार ने दूसरी विश्व युद्व के बीच शहर को तबाही और बर्बादी से बचाया था,इसी की बर्कत थी जिस ने एटम बमों को यूसुफ समुद्र की ओर मोड़ दिया था।[114]

जब मदद की आवश्यक्ता होती है और ताक़तवर मुक़ाबिल के खिलाफ लड़ने के लिये खास शक्ति की आवश्यक्ता होती है तो क़ब्र प्रस्त लोग मज़ार वालों से भी सहायता मांगते हैं,जब तातारियों ने मुल्के शाम पर हमला किया था तो क़बूरी लोग घरों से निकल रहे थे और क़ब्रों के पास जा जा कर उन से मदद मांग रहे थे,यही कारण है कि किसी क़ब्र प्रस्त क़वी ने कहा :

يا خائفين من التتر لوذوا بقبر أبي عمر

तर्जुमा : ऐ तातारियों से डरे लोगो! अबू उमर की क़ब्र की पनाह लो।

या यूं कहा :

---

([112]) आप मुहम्मद ज़ाहिद बिन हसन हिल्मी हैं, कोसरी के नाम से मश्हूर हैं, आप की पैदाइश 1296 हिज्री में हुई,एक मश्हूर जहमी क़ब्र प्रस्त हैं,अक़ीदे के मस्ले में अहले सुन्नत के इमामों पर एतराज़ करते हैं, बल्कि उन्हें गाली देने में अपनी एक पहचान रखते हैं,जैसा कि इमाम इब्ने खुज़ेमा,सुफ्यान सौरी,अवज़ाई इब्ने बत्ता,उस्मान दारमी,इब्नुल मदीनी,दार कुत्नी,अब्दुल्लाह बिन इमाम अहमद और नईम बिन हम्द के साथ उन का रवय्या इस का प्रमाण है,जहां तक इमाम इब्ने तैमिया और इब्ने क़य्यिम की बात है तो उस ने उन के बारे में लानत भरे कथनों को नक़ल किया है,फिर या तो चुप रहा या फिर बिदअतो गुमराही के इमामों उदाहरण के तौर पर जहम बिन सफ्वान आदि कि हिमायत कर बैठे,ज़ाहिद कौसरी एक तअस्सुब पसंद हनफी मातुरीदी थे,मर्दों से सहायता मांगने और उन से अभिलाषा करने की दावत देते थे,अधिकतर उलमा ने उस के गलत अक़ीदे के रद में किताबें लिखी हैं,इस के गलत अक़ीदे के बारे में प्रोफेसर अली फुहेद ने " ज़ाहिद अल कौसरी व आराअल एतक़ादिय्या : अर्ज़ व नक़्द " के नाम से एक मक़ाला लिखा,डाक्टर मुहम्मद अल खमीस ने एक किताब लिखी " बयान मुखालफतिल कौसरी लि एतक़ादिस्सलफ ", मक़ालात कौसरी पर शैख मुहम्मद बिन माने ने अधिक टिप्पणियां की है,कौसरी की गुमराही की तक़्लीद उन के शागिर्द अब्दुल फत्ताह अबू गुद्दा ने की है,अल्लाह ताला हम सब को अंधी तक़्लीद और बुरे तअस्सुब से बचाये।

([113]) देखिये : जुहूदु उलमाइल हनफिय्या लिइब्तालि अक़ाइदिल क़बूरिय्या : 461

([114]) मआलिम मिस्र अल महरूसा : 53,यह किताब :(दमआ अलत्तौहीद से 79) से नक़ल किया गया है।

عوذوا بقبر أبي عمر ينجيكم من الضرر

तर्जुमा : अबू उमर की क़ब्र की पनाह लो वह तुम्हें हानि से बचालेंगे। [115]

सय्यद रशीद [116] रज़ा फर्माते हैं कि मराकश वालों की आदत थी कि जब कभी उन पर कोई दुख और परेशानी आती या उन पर प्रदेसियों का हम्ला होता तो वह " फास " अर्थात मराकश की राजधानी में मौजूद शैख इद्रीस के मज़ार पर इकट्ठे हो जाते,वहां वे गिड़गिड़ा कर मांगते कि वह उन की परेशानियों को दूर कर दे,हालांकि उन्हें इस बात की कोई चिंता नहीं थी कि क़ौम की तालीमो तर्बियत और दुश्मनों के मुक़ाबले के लिये फौज की तय्यारी पर ध्यान दिया जाये। [117]

हद तो यह है कि क़ब्र प्रस्त लोग हर मज़ार के लिये अलग अलग और खास खास कार्यों को मुतय्यन करते थे,लेकिन शफाअत की तलब में सब एक तरह होते,मगर कुछ अवलिया औरतों की चाहत पूरी करने में मशहूर थे उदाहरण के तौर पर बड़ी उम्र की कंवारी औरतों की शादी और बांझ औरतों [118] को बच्चे देना उन का काम होता था,जब कि कोई बीमार बच्चों को शिफा तो कोई पट्ठों और जोड़ों की परेशानियों से छुटकारा दिलाने के लिये जाना जाता था। [119]

शैख अब्दुल्लतीफ बिन अब्दुर्रहमान बिन हसन फर्माते हैं : जहां तक मिस्र और उस के आस पास की बात है तो यहां शिर्किया काम,कुफ्रिया आमाल और फिरऔनी दावे मौजूद हैं जिन का किताब और खिताब में दूर दूर तक निशान

---

([115]) इब्ने तैमिया ने इसे " अर्रद्द अलल बिकरी " : 631 में बयान किया है।

([116]) आप शैख मुहम्मद रशीद बिन अली रज़ा क़लमूनी हैं,1282 में पैदा हुये,हदीस,अदब,और तफ्सीर के बड़े आलिम थे,क़ब्रप्रस्ती और खुराफात के खिलाफ जंग में उन के बड़े कारनामे हैं,मिस्र से छपने वाले परचे "अल मनार के अभिभावक थे,इस प्रचे का उम्मते मुस्लिमा को दुख देने वाले बिदअतों से छुटकारा दिलाने में बड़ा रोल है,सय्यद रशीद रजा फलासफिक मदरसे से प्रभावित होने कारण कुछ गलतियों का शिकार हो गये,आप की वफात 1354 हिज्री में हुई,आप की जीवनी के लिये देखें : मशाहीर उलमाये नज्द आदि :486,लेखक : अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह आले शैख, और ज़िरकली की अल आलाम देखें ।

([117]) यह मुहम्मद अहमद दरनीक़ा का कथन है,देखें : दमआ अलत्तौहीद :80

([118]) अल इन्हिराफात अल अक़दिय्या : 336, दमआ अलत्तौहीद : 84

([119]) अफयून अश्शुऊब अल इस्लामिया , अन्नताइज वल आसार, दमआ अलत्तौहीद : 82

नहीं मिलता,खास कर अहमद बदवी और उन जैसे दूसरे पीरों और फक़ीरों के दरबार का हाल अधिक बुरा था,इन के बारे में इन के मुरीदों ने ऐसे ऐसे अक़ीदे गढ़े जो जाहिलियत में भी उन के झूटे माबूदों के बारे में नहीं पाये जाते थे,उन मुरीदों में से अधिकतर का मानना है कि यह पीर शाने रुबीबियत और आम शक्ति की बिना पर संसार का निज़ाम चला सकते हैं,स्पष्ट रहे कि ऐसा अक़ीदा किसी फिरऔन व नमरूद के बारे में भी मनकूल नहीं है।

कुछ भक्तों का कहना है कि पूरे संसार को सात लोग अपनी निगरानी में रखे हुये हैं जब कि कुछ चार की बात करते हैं तो कुछ का मानना है कि एक कुतुब हैं और उन्हीं की ओर सब आते हैं,अधिक लोगों का ख्याल है कि कुछ खास लोगों के बीच एक शूराई व्यवस्था है जो उन की ओर मंसूब है। निःसंदेह अल्लाह ताला ज़ालिमों की इन बातों से बिल्कुल पाक है। यह तोहमत बड़ी बुरी है जो इन के मुंह से निकल रही है,यह साफ झूट बोल रहे हैं। [120]

शैख अब्दुल्लतीफ अधिक फर्माते हैं : " हज़्रे मौत,शहर,अदन और याफे में ऐसी ऐसी चीज़ें राइज हैं कि जिन का सुनना कानों को बोझल कर देगा "।

कहने वाला तो यह (कह कर) भी मदद की गुहार लगाता है कि :(ऐ क़ब्र वाले) ईदरूस! तू मेरी झोली भर दे,ऐ जानों को ज़िंदा करने वाले [121] कुछ कर दिखा) {ऐ अब्दुल क़ादिर जीलानी मेरी सहायता कर,ऐ मुईनुद्दीन चिश्ती! मेरी फर्याद सुन ले,ऐ अज्मेरी बाबा ! मेरी मदद कर}

मेरा मानना है कि ऐसा करने वाला व्यक्ति इस बात को नहीं जानता कि हर प्रकार की दुआ केवल अल्लाह ताला ही से मांगनी चाहिये,बल्कि इस से पता चलता है कि ऐसे व्यक्ति को अल्लाह ताला के (शाफी) अर्थात शिफा देने वाला होने पर विश्वास नहीं होता।

---

([120]) अद्दुरर्र अस्सनिय्या : 1/383

([121]) अद्दुरर्र अस्सनिय्या : 1/384

**सतरहवॉ कारण:अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से दुआ करने के ग़लत होने के तर्कों में से एक महत्वपूर्ण तर्क उन व्यक्तियों का ज्ञान की दृष्टि से कमज़ोर होना है जिन्हें पुकारा जाता है, और इस का मुख्य कारण यह है कि मृतक न तो लोगों की आवश्यकता से अवगत होता है न उनकी परिस्थितियों को जानता है,और इस तथ्य की ओर अल्लाह ने क़ुरआन के विभिन्न स्थानों में संकेत किया है। अल्लाह का फरमान है:" जीवित और मृत एक सामान नहीं हो सकते हैं, सत्य में अल्लाह जिसे चाहता है सुना देता है,और तुम ( मुहम्मद) जो लोग क़ब्रों में हैं उन्हें नहीं सुना सकते "।**

**इब्न क़ैय्यिम रह॰ का कहना है:" पैदा किया गया व्यक्ति तुम्हारे हितों को नहीं जानता है, मगर हाँ जब अल्लाह उसे इस से अवगत करा दे, और वह उसे उस समय तक पाने की क्षमता नहीं रखता है जब तक कि उसे अल्लाह क्षमता न प्रदान कर दे, और उस वस्तु को पाने की उसमें चाहत भी जागृत नहीं होती जब तक अल्लाह उसमें चाहत और इच्छा न डाल दे,अतः समस्त बातें उस की ओर लौट आईं जिसने इस सृष्टि की रचना की,और वही है जिसके पास सारे हित और भलाईयाँ हैं, और उसी के पास फल और परिणाम हैं, और उसी के पास लौट कर जाना है। इसी कारण भय, भक्ति ,भरोसा और आशा की दृष्टि से किसी से दिल लगाना हानिकारक है जिसमें कोई लाभ नहीं है, और उस से यदि कोई लाभ प्राप्त होता है तो यह केवल अल्लाह की कृपा और उसकी चाहत से होता है जो उस लाभ को संभव बना देता है "। { 384 :الدرر السنية}**

और नबी ﷺ की ओर से तो हौज़ वाली हदीस में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि उन्हें इस बात का भी ज्ञान नहीं है कि उनके मरने के बाद क्या होगा,तो फिर आप के अतिरिक्त कोई अन्य मरने वाला क्या बता सकता है?आप का यह शुभ कथन है:" तुम लोग अल्लाह के पास ख़ाली पाँव नंगे आओगे( जिस प्रकार हमने पहली बार पैदा किया है उसी प्रकार हम उन्हें फिर वापस लगायेंगे,यह मेरा संकल्प है,और हम इसे अवश्य करेंगे,फिर सबसे पहले जिस को वस्त्र पहनाया जायेगा वह इब्राहिम अ॰ होंगे,फिर कुछ लोगों को लाया जायेगा और बाया ओर खड़ा किया जायेगा,उस अवसर पर मैं कहूंगा:" हे अल्लाह,यह मेरे मित्र हैं,तो कहा जायेगा:" आपको नहीं पता कि आप के बाद इन लोगों ने क्या क्या पैदा कर दिया था ( धर्म में) ,उस समय मैं वही कहूंगा जो नेक बंदे ने कहा:" मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनके बीच रहा,जब तुमने मुझे मौत देदी तो फिर तुम उन पर निगहबान रहे,और तु समस्त चीज़ों पर निगहबान है "।{ बुख़ारी शरीफ़: 3197/ मुस्लिम शरीफ़: 5235}

अहमद बिन यहया नजमी ने कहा:" इस हदीस में नबी स॰ ने यह सूचना दी है कि आप मरणोपरांत लोगों की गतिविधियों और स्थितियों से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं,बल्कि आप अपने जीवन में उनके जाहरी कामों पर साक्षी रहे,और धर्म का पालन करने और उसे नकारने पर गवाह रहे, लेकिन जब अल्लाह ने आपको मृत्यु देदी, तो वही केवल लोगों की हालात से बाख़बर और उनकी स्थितियों और गतिविधियों से परिचित है "।

**और विचार करने से दोनों शब्दों " शहीद और,रक़ीब "के मध्य अंतर स्पष्ट हो जायेगा।नबी स॰ के प्रति जो शब्द " शहीद " प्रयोग किया गया है,उस से अभिप्राय अपनी निगाहों से देखना है,जैसा कि अल्लाह ने फरमाया:" मैं ( मुहम्मद) जब तक उनके बीच रहा उन पर गवाह रहा ", अर्थात: अपने जीवन में उनकी परिस्थितियों से अवगत रहा,उनकी ऐसी गतिविधियां देखने को मिलीं जो उनके ईमान,कुफ़्र, धर्म का पालन और उसकी अवज्ञा पर गवाह बना देते।**

**और जहाँ तक मेरी मृत्यु के बाद की बात है,तो उनके निगाहों से ओझल हो जाने के कारण वह सारी बातें समाप्त हो गईं,अब रब तेरा ही इल्म उनके साथ बाक़ी है,तु ही उनका निरीक्षक है,तु ही उनकी परिस्थितियों से अवगत है,उनके हृदय के भेद से परिचित है,और उनकी नियतों को जानता है। क्युंकि तु हर चीज़ को देख रहा है,और प्रत्येक वस्तु तेरे ज्ञान में हैं। वह सब तेरे ही मख़लुक हैं,उन पर तेरा आदेश जारी होता है,और तेरे निरीक्षण और निगरानी और तेरी शक्ति का उन पर वर्चस्व है,उनके कार्य एवं पुण्य की गणना तेरे उस ज्ञान से होती है जिस से कोई चीज़ छुट नहीं सकती। अतः " रक़ीब " शब्द से संपूर्ण वर्चस्व एवं शासन का ज्ञान होता है,और उस संपूर्ण ज्ञान का संकेत होता है जो छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कामों का विवरण रखता है। {** أوضح الإشارة فى الرد على من أجاز الممنوع من الزيارة، ص **360- 61}**

**जब नबी स॰ की यह स्थिति है कि किसी के विषय में मरणोपरांत कुछ भी ज्ञान नहीं रखते,तो फिर किसी अन्य मृत व्यक्ति के लिए कैसे संभव**

**है?क्या यह कहना उचित है कि वह लोग किसी भी व्यक्ति के बारे में कुछ भी ज्ञान रखते हैं? बिल्कुल नहीं और कदापि नहीं।**

**बनी इसराईल के संदेष्टाओ में से एक संदेष्टा हज़रत उज़ैर अ॰ के विषय में अल्लाह का यह कहना:" अथवा उस व्यक्ति के प्रकार जो एक ऐसी नगरी से गुज़रा जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी। उसने कहा:" अल्लाह इसे धवस्त हो जाने के पश्चात कैसे जीवित करेगा?फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मृत्यु देदी। फिर उसे जीवित किया और कहा: तुम कितनी अवधि तक मुर्दे पड़े रहे?उसने कहा: एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण तक मैं पड़ा रहा। अल्लाह ने कहा: बल्कि तुम सौ वर्ष तक पड़े रहे "।{ सुरह बक़रह:259} स्पष्ट संकेत है इस बात का कि मुर्दों में असल परलोक से बाहर हो रहे घटनाओं का न सुनना और उस से अवगत न होना है। अतः उज़ैर अ॰ तो एक सम्मानित संदेष्टा हैं जो सौ वर्ष तक मृत्यु की स्थिति में पड़े रहे, और उन्हें यह भी ज्ञात न हो सका कि इनके इर्द गिर्द और परिवेश में क्या हुआ,और अपनी क़ब्र में कितने साल रहे ,तो फिर यह कहना कैसे उचित होगा कि मुर्दे अपने पुकारने वालों की पुकार को सुनते हैं?**

**शैख़ मुहम्मद सुल्तान मासुमी हनफी[122] ने अपनी किताब (** المشـــاهد المعصـومية عند قبر خير البرية**) में कहा है: यह एक प्रसिद्ध घटना है कि**

---

[122] **यह अबु अबदुल करीमएमुहम्मद सुल्तान बिन मुहम्मद औरुन बिन मुल्ला मीर सैयद मासुमी खुजंदी फिर मक्की हैं। रुस के खुजंदह शहर से इन का संबंध है। सलफी आस्था रखते हैंए ज्ञानार्जन हेतु कई यात्राएं की हैंए यहाँ तक कि सौ ज्ञानी वयक्तिओं से शिक्षा ग्रहण किया हैए नौवे से अधिक आप के द्वारा लिखित पुस्तक एवं पत्रिकाएं हैं। उनके**

**नबी स॰ की तख़्त के निचे कुत्ते का एक मृत बच्चा था जिसके विषय में आपको पूर्व ज्ञान नहीं था,जब जिब्रील अ॰ ने आने में देर की और विलंबित होने का कारण बतलाते हुए कहा कि**

**आपके तख़्त के निचे मृत कुत्ता है;तो आप स॰ को इसका ज्ञान हुआ,और आप उसे निकाल कर बाहर किये।[123]और इसी तरह नमाज़ के दौरान आपका जुता निकालने का वाक़्य,[124]और ऐसे ही यात्रा में हज़रत आईशा**

---

**जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी उनकी किताब (** حكم الله الواحد الصمد فى حكم الطلب من الميت المدد**)में प्राप्त की जा सकती है।**
**ईमान और अक़ीदा से संबंधित भी उनकी पुस्तकें हैं। उनकी मृत्यु** 1389 **हिजरी में हुई।**

[123] **इस रिवायत को इमाम मुस्लिम ने हज़रत आईशा से हदीस नंबर** 2104 **में वर्णित किया है। हज़रत आईशा कहती हैं:" हज़रत जिब्रील अ॰ ने नबी स॰ से मुलाक़ात के लिए एक समय निर्धारित कियाए और वह समय आ गया लेकिन हज़रत जिब्रील नहीं आए। और आप के हाथ में एक लाठी थी जिसे आपने अपने हाथ से फेंक दियाए और बोले कि अल्लाह और उसके रसूल वचन की अवहेलना नहीं करते हैंए फिर आपने निगाह उठाई तो तख़्त के निचे एक कुत्ते का मृत बच्चा नज़र आयाए आपने पूछा कि आईशा यह कुत्ता यहाँ कब प्रवेश कियाः हज़रत आईशा उत्तर देते हुए बोलीं: मुझे नहीं पता " अंततः आपने उसे बाहर करने का आदेश दिया जिसका पालन किया गया। जिब्रील प्रवेश कियेए आपने कहा :" आपने मुझ से वादा कियाए मैं आपकी प्रतीक्षा में बैठा रहाए किंतु आप नहीं आए "।इस पर जिब्रील ने कहा:" आप के घर में उपस्थित कुत्ते ने मुझे प्रवेश से रोक दिया थाए हम उस गृह में प्रवेश नहीं करते जहाँ कुत्ते और चित्र होते हैं "।**

[124] **अबु दाऊद ने अपने सुनन में अबु सईद ख़ुदरी से वर्णित किया है कि आप स॰ एक दिन अपने साथियों को नमाज़ पढ़ा रहे थेए और नमाज़ ही के दौरान अपना जुता निकाल दियाए इस पर आप के साथी भी जूते निकाल दियेए जब आपने नमाज़ पुरी कर ली तो साथियों से जुता निकालने का कारण पूछते हुए कहा:" तुम लोगों को जुता निकालने पर किस बात ने विवश कियाः उनहोंने उत्तर दिया:" हमने आपको निकालते हुए देखाए अतः निकाल दिया "। आपने कहा:" मेरे पास जिब्रील आए और बोले कि मेरे जुते में गंदगी है"। हदीस नंबर:** 650.

**का हौदज से गुम होने की घटना।[125]वास्तविकता यह है कि नबी स॰ अपने जीवन में निगाहों से ओझल वस्तुओं से अनभिज्ञ रहे, मगर यह कि अल्लाह प्रकाशना के माध्यम से आप को बतला देता,तो फिर मरणोपरांत निगाहों से ओझल वस्तुओं के बारे में आप कैसे बता सकते हैं जबकि आप परलोक में हैं?क्या अतिशयोक्ति करने और सीमा से दूर जाने वाले लोग इस तथ्य से अवगत नहीं हैं कि आप स॰ की उम्मत के कुछ लोग हौज़े कौसर पर आयेंगे और उन्हें धुतकार कर भगा दिया जायेगा,और आप कहेंगे: हे पालनहार! वास्तव में यह सब मेरे उम्मती हैं "? तो आप से अल्लाह तआला कहेगा:" आपको नहीं पता कि आप के पश्चात इन लोगों ने धर्म में किस प्रकार का आविष्कार किया"।**

---

**इस हदीस में हमारे लिए तर्क यह है कि नबी स॰ उन बातों से अनभिज्ञ थे जो आप की निगाहों से ओझल थींए और वह इस हदीस में वर्णित वह गंदगी है जो आप के जुते में लगी हुई थीए और आप उस से अपरिचित थेए यहाँ तक कि जिब्रील अ॰ ने आपको इस की सूचना दी।**
**यह हदीस सहीह हैए इसको अल्लामा अल्बानी ने सत्य कहा हैए और ऐसे ही शैख़ मुक़बिल वादेई ने भी इसकी सत्यता का समर्थन किया है।**

[125] **हौदज का वाक़्य बुख़ारी शरीफ़** ¶4750द्व **और मुस्लिम शरीफ़** ¶ 2770द्व **में हज़रत आईशा से वर्णित है। संक्षेप में कहानी यह है कि किसी युद्ध में आईशा रज़॰ नबी स॰ के साथ गई थींए जबकि कहीं रास्ते में योद्धाओं ने पड़ाव डालाए तो आईशा अपनी हार तलाश करने निकल पड़ींए जब वापस लौटीं तो पता चला कि क़ाफिला जा चुका हैए इस गुमान के कारण कि आईशा अपने हौदज में हैं। और उस समय आप बिल्कुल हल्के बदन की थींए इसी कारण लोगों को आभास नहीं हो पाया कि आईशा उस में नहीं हैंए अतः वह पैदल चल कर क़ाफिला से जा मिलींए जबकि दो पहर का समय था।इस में हमारे लिए तर्क की बात यह है कि अगर नबी साहब परोक्ष अर्थात ग़ैब को जानते तो इस बात को अवश्य जान लेते कि उनकी बीवी और उन से निकटतम व्यक्ति को क़ाफिला छोड़ कर आगे बढ़ चुका है।**

अतः अल्लाह ने इस बात का स्पष्टीकरण कर दिया है कि नबी स॰ संसार में घटने वाली घटनाओं के बारे में अवगत नहीं हैं।

विदित हो कि जो व्यक्ति ऐसा विश्वास रखता है कि नबी स॰ मरणोपरांत परोक्ष {ग़ैब} को जानते हैं, अथवा सहायता की गुहार लगाने वालों की सहायता करते हैं, या जो आप से फरियाद करता है उसकी फरियाद सुनते हैं,तो ऐसा व्यक्ति क़ुरआन ,सुन्नत और सहाबा एवं ताबेईन के मध्य सहमति प्राप्त तथ्य की अवहेलना करता है। और इस में कोई संदेह नहीं है कि इस प्रकार के व्यक्ति अल्लाह की कृपा,मार्गदर्शन, तौफ़ीक़, रहमत और उसकी जन्नत से वंचित रहते हैं,लेकिन उनकी अज्ञानता की पराकाष्ठा और अतिशयोक्ति का अंत है कि वह इस बुराई का आभास एवं एहसास नहीं करते। अंधभक्ति ने उन्हें अधिक अंधा कर दिया है, अल्लाह का प्रकोप एवं लानत हो ऐसे लोगों पर जो इस प्रकार के शिर्क व बिदअत, गंदगी और कुरीतियों का धर्म में आविष्कार करते हैं, अल्लाह हम सब को अपनी कृपा और मेहरबानी से इन बुराइयों से बचाये"। संक्षेप में यह बात पुरी हुई।

और इसी प्रकार उनहोंने कहा:" जहाँ तक बात मुर्दे की है,तो स्पष्ट रहे कि वह कितना बड़ा क्यूं न हो,सांसारिक जीवन में उसका कार्य समाप्त हो जाता है।और चाहे उसकी क़ब्र के पास ही क्यूं न हो,संसार में घटित घटनाओं,होने वाले कार्यों तथा कही गई बातों से वह बिल्कुल अनभिज्ञ होता है,और इसका कारण यह है कि मुर्दे की रूह यदि नेक हो तो "इल्लीईन" में रहती है,जैसा कि संदेष्टाओं एवं सफल मुमिनों की रूह

रहती है,या फिर " सिज्जीन " में रहती है यदि वह नास्तिक,मुशरिक अथवा काफिर हो। और निश्चय ही वह रूहें इस सांसारिक गृह से प्रस्थान कर के परलोक में चली जाती हैं,और वहां की परिस्थिति एवं समस्या इस संसार की परिस्थिति से पूर्णतः भिन्न होती हैं।

और यदि हम इस बात को स्वीकार कर लें कि वह परिस्थितियों से अवगत हैं,फिर भी वह उत्तर देने की शक्ति एवं स्थिति में नहीं हैं जैसा कि क़ुरआन की स्पष्ट आयतों से प्रतीत होता है। अतः इस पर ध्यान केंद्रित रहे।

और इस बात में भी कोई संदेह नहीं कि मृत व्यक्ति अल्लाह की कृपा का मुहताज होता है चाहे वह कितना बड़ा क्यूं न हो,और जीवित लोगों का उनके प्रति रहमत और क्षमा की दुआएं करना उसे लाभ प्रदान करता है। और इसी तरह उनके लिए दान करना भी लाभप्रद होता है। अतः क़ब्र की ज़यारत का मुख्य परिणाम इबरत और नसीहत प्राप्त करना है,दर्शन करने वालों के लिए मृत्यु और परलोक का स्मरण कराना है, दुआओं का सवाब पाना और मृत के लिए दान करना है। और यही तथ्य क़ब्र के दर्शन का वास्तविक रहस्य है। अतः जो व्यक्ति इसके अतिरिक्त कोई कार्य करेगा,अथवा हमारी कही गई बातों के विपरीत कोई आस्था रखेगा वह अल्लाह और उसके रसूल की अवहेलना करने का मुजरिम होगा। मुहम्मद सुल्तान मासुमी हनफी की बात संक्षिप्त शब्दों के साथ पुरी हुईं।

और शैख़ हाफिजुद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद शहाब,जो इब्न बज़्ज़ाज अलकुरदी अलहनफी के नाम से प्रसिद्ध हैं," फतावा बज़्ज़ाज़िया में कहते

**हैं:" जिसने कहा कि पवित्र वयक्तिओं की रूहें उपस्थित हैं और सब कुछ जानती हैं; उसने कुफ़्र किया। {**البحر الرائق:٥/١٤٣**}**

**इन बातों का सारांश यह है कि जो व्यक्ति क़ुरआन व हदीस में शोध करेगा उसके सामने अगण्य तर्क आएंगे और उन तर्कों से यह विदित होगा कि नबी स॰ और अन्य मृत व्यक्ति ग़ैब के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं रखते हैं। बल्कि अल्लाह ने मानव जाति को जो त्वचा और शक्ति प्रदान किया है जो कुछ जानने और समझने में सहायता देती हैं,जैसे कान और आँख, वह सब मिट जाते हैं और फना हो जाते हैं, और केवल मानव के पीठ में उपस्थित हड्डियां बाक़ी रहती हैं।तो क्या इस के पश्चात भी कहा जा सकता है कि मुर्दे ज़िंदों के हालात से अवगत हैं?,इसका उत्तर होगा कदापि नहीं। और जो भी इसके विपरीत कुछ कहेगा, वह अल्लाह पर बिना ज्ञान के इल्ज़ाम धरेगा।**

**अठारहवां कारण: और अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से दुआ करने के ग़लत होने की तर्कों में से एक तर्क यह भी है कि अल्लाह को छोड़ कर जिन व्यक्तियों की पूजा की जाती है वह क्षमता की दृष्टि से लाचार और विवश हैं। कुंयकि जिन व्यक्तियों को पुकारा जाता है वह पुकारने वालों की पुकार को सुनते हैं न उनकी सहायता की क्षमता रखते हैं,कुंयकि वह लोग जिन के समक्ष शिश नवाते हैं यद्यपि जीवित वयक्तिओं में से हैं फिर भी वह उतना ही करने की शक्ति एवं क्षमता रखते हैं जितना मानव के वश में है। और यह सब कुछ दुआ के बिना भी प्राप्त हो जाता है,और अगर मुर्दों में से हैं तो वह कुछ भी करने से विवश है।अल्लाह**

तआला ने नबी स॰ की ज़बानी कहा:" आप कह दें कि मैं तो अपने व्यक्तित्व के लिए भी किसी लाभ एवं हानि की क्षमता नहीं रखता,मगर हाँ जितना अल्लाह चाहे "। जब हमारे संदेष्टा मुहम्मद साहब की यह अवस्था है तो फिर आप के अतिरिक्त किसी अन्य का अपने लिए किसी भी नफ़ा व नुक़सान का मालिक न होना तो और भी स्पष्ट है।

अल्लाह तआला का फरमान है:" हे नबी! उनसे कहिए कि क्या हम अल्लाह के अतिरिक्त उनकी वंदना करें जो हमें कोई लाभ और हानि नहीं पहुंचा सकते?और हम एड़ियों के बल फिर जायें, इसके पश्चात जब हमें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है, उसके समान जिसे शैतानों ने धरती में बहका दिया हो, वह आश्चर्यचकित हो"। {सुरह अनआम:71}

और इसी तरह अन्य स्थान पर कहा:" वह पुकारता है अल्लाह के अतिरिक्त उसे जो न हानि पहुंचा सके उसे और न लाभ,और वही सबसे बड़ा पथभ्रष्ट है। वह उसे पुकारता है जिस की हानि अधिक समीप है उसके लाभ से, वास्तव में वह बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी है"। { सुरह हज: 12-13}

अर्थात्: वह उन्हें पुकारता है जिन्हें पुकारना छोड़ दे तो वह कोई हानि नहीं पहुंचा सकते,और यदि उन्हें पुकारता रहे तो वह कोई लाभ प्रदान नहीं कर सकते।

और इसी प्रकार कहा:" और यदि आप उनसे प्रश्न करें कि किसने पैदा किया आकाशों तथा धरती को तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने।आप

कहिये कि तुम बताओ जिसे तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो:यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुंचाना चाहे तो क्या वह उस हानि को दुर कर सकते हैं?अथवा मेरे साथ अल्लाह दया करना चाहे तो क्या वह रोक सकते हैं उसकी दया को?आप कह दें कि मुझे अल्लाह पर्याप्त है,और उसी पर भरोसा करते हैं भरोसा करने वाले "।{ सुरह ज़ुमर: 38}

और इसी प्रकार अन्य स्थान पर कहा गया है:" क्या उनके पूज्य हैं जो उन्हें बचायेंगे हम से?वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे और न हमारी ओर से उनका साथ दिया जायेगा "। {सुरह अम्बिया:43}इस प्रसंग में शंक़ीती रह॰ का कहना है:" क्या उनके पास ऐसे पूज्य वयक्ति हैं जो उन्हें मेरे अज़ाब और गिरफ्त से सहारा दे सके,यहाँ तक कि उन्हें मेरा अज़ाब न पकड़े "?फिर स्पष्ट किया कि जिनको वह पूज्य समझते हैं वह स्वयं को भी लाभ नहीं पहुंचा सकते,तो फिर किसी अन्य को कैसे लाभान्वित कर सकते हैं?और इसके लिए अल्लाह के इस कलाम को तर्क बनाया " वह स्वयं को लाभ पहुंचाने की क्षमता नहीं रखते "। और अल्लाह के इस फरमान " और वह मेरी ओर से सहायता नहीं प्रदान किये जायेंगे " का भावार्थ है कि मेरी ओर से पनाह नहीं दिये जायेंगे। अर्थात: इन झुटे माबुदों के लिए कोई पनाह देने वाला नहीं है जो मुझसे उन्हें पनाह दे सके। क्युंकि अल्लाह पनाह देता है,और उसके खिलाफ़ किसी को भी पनाह नहीं दी जाती है,जैसा कि इस बात का स्पष्टीकरण अल्लाह तआला ने अपने इस कथन के माध्यम से किया है जो इस प्रकार है:" आप पुछिये  कि किस के हाथ में समस्त चीज़ों का शासन है और वह पनाह देता है और उसके खिलाफ़ किसी को भी पनाह नहीं दी

जाती है?(उत्तर दो) यदि तुम लोग सच्चे हो "।संक्षेप में शैख़ शंक़ीती की बात पुरी हुई।

अल्लाह तआला का फरमान है:" क्या वह अल्लाह का साझी उन्हें बनाते हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते,और वह स्वयं पैदा किये गये हैं। तथा न उनकी सहायता कर सकते हैं,और न स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं। और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं चल सकते,तुम्हारे लिए बराबर है चाहे उन्हें पुकारो अथवा तुम चुप रहो। वास्तव में अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिनको पुकारते हो वह तुम्हारे जैसे ही ( अल्लाह के) दास हैं। अतः तुम उनसे प्रार्थना करो फिर वह तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दें,यदि उनके विषय में तुम्हारे विचार सत्य हैं। क्या इन ( पत्थर की मूर्तियों) के पाँव हैं जिनसे चलती हों? अथवा उनके हाथ हैं जिनसे पकड़ती हों? या उनकी ऑखें हैं जिनसे देखती हों, अथवा कान हैं जिनसे सुनती हों? आप कह दें कि अपने साझियों को पुकार लो,फिर मेरे विरुद्ध उपाय कर लो,और मुझे कोई अवसर न दो"। {सुरह आराफ: 191-195}इसका भावार्थ यह है कि तुम और वह जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो एकत्रित हो जाओ और बिना एक क्षण अवसर दिये मुझे कष्ट पहुंचाने का प्रयास करो,लेकिन तुम कुछ भी नहीं कर सकते, क्युंकि वह तुम्हारे हाथ में नहीं है, बल्कि अल्लाह के हाथ में है जिसका कोई साझी नहीं है और वह प्रत्येक वस्तु पर क्षमता रखता है।

प्रिय पाठको! अंतिम आयतों में अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से संबंध एवं आशा रखने वालों के लिए जो चैलेंज है उस पर विचार करें।

और इब्ने जरीर रह॰ ने अल्लाह तआला के इस फरमान" और अल्लाह ही निर्णय करेगा सत्य के साथ,तथा जिनको वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त वह कोई निर्णय नहीं कर सकते, निश्चय अल्लाह ही भलि-भांति सुनने- देखने वाला है " {सुरह मुमिन: 20} के विषय में कहा है:" और मुर्ति और तथाकथित पूज्य जिनको वह मिश्रणकारी अल्लाह के अतिरिक्त पूजते हैं वह किसी भी वस्तु के साथ निर्णय नहीं कर सकते हैं,कुंयकि न तो वह कुछ जानते हैं और न कुछ करने की क्षमता रखते हैं। अल्लाह तआला उनसे कहता है:" तुम उस व्यक्तित्व की वंदना करो जो हर चीज़ पर क़ुदरत रखती है,और जिस से तुम्हारी कोई भी गतिविधि एवं हरकत निहित नहीं है। वह तुम में से अच्छों को अच्छाई का और बुरों को बुराई का भरपूर बदला देगा,और तुम उसकी पूजा न करो जो न तो किसी चीज़ पर कुदरत रखता है और न किसी वस्तु के प्रति कोई ज्ञान रखता है "।{ तफसीर इब्ने जरीर; सुरह मुमिन: 20}

और शैख़ अब्दुल्लाह अबाबतीन रह॰ ने अल्लाह के इस फरमान" और वह जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो किसी भी चीज़ के स्वामी नहीं हैं। यदि तुम उन्हें पुकारते हो तो वह तुम्हारी पुकार को नहीं सुनते हैं और यदि सुन भी लें तो उत्तर नहीं दे सकते "।{सुरह फातिर :13-14}के प्रसंग में कहा है:" और भर्त्सना उन लोगों की ओर केन्द्रित की गई है जो इस प्रकार की विशेषताओं वाले वयक्तिओं की वंदना करते हैं चाहे वह कोई मानव हो,या शासक हो अथवा पत्थर,और यह ऐसे हैं कि अपने पुकारने वालों को बिल्कुल लाभ नहीं प्रदान करते,और जो उन्हें नहीं

**पुकारता है उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ते "।** تأسيس التقديس فى كشف تلبيس داؤد بن جرجيس: **86}**

**और इसी प्रकार इमाम बैज़ावी शाफई ने अल्लाह तआला के फरमान "क्या मैं उसको छोड़ कर किसी अन्य को पूज्य बना लूँ?यदि अत्यंत कृपाशील मुझे कोई हानि पहुंचाना चाहे तो उनकी अनुशंसा मुझे कुछ भी लाभ नहीं प्रदान करेगी,और न वह मुझे बचा सकेंगे "।{सुरह यासीन: 23}के विषय में कहा है:" यानी उनकी शफाअत बिल्कुल काम नहीं आयेगी,और न उन्हें किसी तरह की सहायता और हंगामा के द्वारा बचाया जा सकता है। कुंयकि ऐसी चीज़ को प्राथमिकता देना जो न लाभ पहुंचाने की क्षमता रखती है और न ऐसी शक्तिशाली हस्ती पर कोई हानि डाल सकती है जो हर प्रकार के नफ़ा व नुक़सान की क्षमता रखती है एक बहुत बड़ी गुमराही है और स्पष्ट धोखा है जो किसी भी ज्ञानी वयक्ति से निहित नहीं है। अल्लामा बैज़ावी शाफई की बात समाप्त हुई। और इब्ने क़ैयिम रह॰ ने इस आयत की तफसीर में कहा:" एक भक्त अपने पूज्य से यह अभिलाषा रखता है कि वह बुरी स्थिति में उसकी सहायता करेगा,और जब मेरा रब मुझे अपनी इच्छानुसार कोई कष्ट देना चाहे तो इन तथाकथित पूज्य वयक्तिओं में कोई क्षमता नहीं है जो मुझे इस कष्ट से छुटकारा दिला सकें,न अल्लाह के समीप इनकी पहुंच व रसाई है कि मैं इनकी सहायता से बच सकूं। अगर वास्तविकता यह है तो फिर इनकी भक्ति कैसे उचित है? और मैं स्पष्ट पथभ्रष्टता में रहूँगा यदि अल्लाह को छोड़ कर इनकी पूजा व अर्चना करुँ"। {** الصواعق المرسلة؛ الفصل العشرون، ص**497}**

और सृष्टि के लाचार एवं विवश होने की तर्कों में से एक तर्क यह भी है कि सहाबा रज़॰ जो संदेष्टाओं के बाद सबसे महत्वपूर्ण वयक्ति थे, इस बात से विवश थे कि स्वयं से कोई कष्ट टाल सकें। अतः प्रस्थान से पहले उनहें बहुत सताया गया और प्रस्थान के पश्चात विभिन्न युद्धों में ढेर सारे ज़ख़मों  से दो-चार किया गया,बल्कि बहुतों की तो हत्या भी कर दी गई,और वह स्वयं की रक्षा न कर सके। और इसी प्रकार संदेष्टाओं में भी यह क्षमता नहीं थी कि वह स्वयं से कोई कष्ट नष्ट कर सकें, क्युंकि बहुत सारे अंबीया क़त्ल कर दिए गए। और इसी प्रकार हमारे अंतिम संदेष्टा मुहम्मद साहब जो सर्वश्रेष्ठ एवं सब नबीयों से उत्तम हैं; स्वयं से किसी दुख एवं कष्ट को हटाने से असमर्थ रहे। उहुद के युद्ध में आप का चेहरा ज़ख़्मी हो गया था, दाढ़ के दांत टुट गये थे,आपकी बेटी फातिमा रक्त को धो रही थीं,हज़रत अली उस पर पानी बहा रहे थे,जब फातिमा न देखा कि पानी से रक्त के बहाव में वृद्धि ही हो रही है तो उनहोंने चटाई का एक टुकड़ा लिया,उसको जलाया,फिर उसे ज़ख़्म पर चिपका दिया जिस से ख़ून का बहना रुक गया।{बुख़ारी शरीफ़: 4075-मुस्लिम शरीफ़: 1790: सहल बिन साद से वर्णित}

हज़रत अनस रज़॰ से रिवायत है कि नबी स॰ के दाढ़ के दांत उहुद के दिन टुट गये थे,सर में चोट लग गई थी,अतः आपके बदन से रक्त बहने लगा, और आप कहने लगे कि वह क़ौम कैसे सफल होगी जिस ने अपने नबी को ज़ख़्मी कर दिया,उसके दांत तोड़ दिए,हालांकि वह उन्हें अल्लाह की ओर बुलाता है?इस पर अल्लाह तआला ने क़ुरआन की यह आयत नाज़िल फरमायी " हे नबी! इस विषय में आपको कोई अधिकार नहीं

है,अल्लाह चाहे तो उनकी क्षमा याचना स्वीकार करे, या दण्ड दे, क्युंकि वह अत्याचारी हैं "।{ सुरह आले इमरान: 128} [ मुस्लिम शरीफ़ ; 1791]

बल्कि उसी युद्ध में आपके घुटने में भी चोट लगी,अर्थात आपके चमड़े में ख़राश आ गई,निचले होंट का भीतरी भाग ज़ख़्मी हो गया,मस्तिष्क रक्षक अंग टुट गया,और इब्ने क़मिआ के आक्रमण के कारण आपका मोंढा कमज़ोर पड़ गया।(अधिक जानकारी के लिए इब्ने हजर के फतहुल बारी का अध्ययन करें: 7/ 423)

जब नबी स॰ के साथ यह कठिनाई उतपन्न हुई,और आप जीवित रहने के बावजूद उसे टाल न सके,तो यह तो बिल्कुल स्पष्ट है कि मरणोपरांत जबकि आप अपनी क़ब्र में हैं किसी अन्य से कोई कठिनाई नष्ट नहीं कर सकते। और यही समस्या उन समस्त मुर्दों के साथ भी है जो नबी नहीं हैं। और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह किसी भी चीज़ की क्षमता नहीं रखते। और सबसे से बड़ा तर्क अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से दुआ करने के ग़लत होने का यह है कि नबी स॰ पर जादू किया गया,और यह जादू लबीद बिन आसम यहूदी ने किया था,इस जादू के प्रभाव के कारण आपको ऐसा प्रतीत होता था कि आप कुछ कर रहे हैं,हालांकि आप ऐसा नहीं करते थे। लेकिन नबी होने के बावजूद आप इस बला से सुरक्षित न रह सके,न ही स्वयं को सुरक्षा देने में सफल हो सके।

और बहुत सारी हदीसें हैं जिन से यह ज्ञात होता है कि नबी स॰ के पेट पर भुक के कारण पत्थर बंधा हुआ था। क्या इस तथ्य के पश्चात भी

**नबी साहब अथवा आप से निचे किसी अन्य व्यक्ति को मरणोपरांत सहायता के लिए पुकारा जा सकता है?बल्कि समझने की सबसे बड़ी बात यह है कि नबी साहब ने ज़हर मिश्रित बकरी का गोश्त खा लिया था,और यही आपकी मृत्यु का कारण भी बना। अतः कौन सी मुसीबत आपने खाने से पहले स्वयं से दूर किया, और कौन सी मुसीबत खाने के उपरांत?**

**जाबिर बिन अब्दुल्लाह से वर्णित है कि अहले ख़ैबर की एक यहूदी महिला ने भुने हुए गोश्त में ज़हर मिलाया,फिर उसे उपहार स्वरुप नबी स॰ को दिया, आप स॰ बाज़ु का गोश्त लिए और उसमें से खा लिए, और आप के साथ आप के सहाबी साथी भी प्रयोग कर लिए,फिर आप ने उनसे कहा:" हाथ उठा लो "।और उस यहूदी महिला को बुलाने के लिए किसी सहाबी को भेजा,अतः वह आई और आपने उससे पूछा:" क्या तुम ने इस गोश्त में ज़हर मिलाया था?**

**उस यहूदी औरत ने कहा: आपको किसने सूचना दी?**

**आपने कहा: मेरे हाथ में जो है उसने यह ख़बर दी- बाज़ु।**

**उसने कहा: हाँ**

**आपने कहा: इसके पीछे तेरा क्या उद्देश्य था?**

**वह औरत बोली: मैंने सोचा कि अगर वह नबी होगा तो कुछ भी नहीं होगा, और अगर नबी नहीं होगा तो फिर उस से हमें नजात मिल जायेगी।**

अतः नबी स॰ ने उसे क्षमा प्रदान कर दिया,और उसको कोई भी यातना नहीं दी,हालांकि कुछ सहाबा जो उसमें से खाए वह मृत्यु से दो-चार हुए। {अबु दाऊद शरीफ़: 4509/ बुख़ारी शरीफ़: 5777}

मैं कहूँगा: वह समस्त लोग- सहाबा,हमारे नबी स॰ और शेष अंबिया- यह सब के सब अच्छे लोग और अल्लाह के क़रीबी वयक्तिओं में से हैं,यह ससर्वश्रेष्ठ लोग हैं जिनके पास क़ब्र की पूजा करने वाले लोग जाते हैं,उनहें पुकारते हैं,उनसे कठिनाई दूर करने और लाभ प्रदान करने की याचना करते हैं,जैसे हज़रत हसन, हुसैन, बदवी, इब्ने अरबी और तेजानी इत्यादी। और इसके बावजूद भी वह अपने आप से किसी कष्ट को दुर न कर सके, या अपने लिए कोई लाभ प्राप्त न कर सके। इस से यह स्पष्ट हुआ कि नबी साहब से निचे किसी अन्य व्यक्ति से जो क़ब्रों में हैं उनसे दुआ करना,कुछ मांगना या सहायता की गुहार लगाना पूर्णतः अनुचित है। और संसार में अल्लाह के अतिरिक्त कोई ऐसा वयक्ति नहीं है जिस से कठिन समय में सहायता की गुहार लगाना उचित हो,और अल्लाह तआला का यह फरमान सत्यता पर आधारित है:" यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुंचाना चाहे तो उसके अतिरिक्त कोई नहीं जो उसे दूर कर सके, और यदि कोई लाभ प्रदान करना चाहे तो वह जो कुछ भी चाहे कर सकता है "।{ सुरह अनआम: 17}

और इस तथ्य को नबी स॰ ने स्पष्ट किया है,और सृष्टि की विवशता को विस्तृत रूप से बयान किया है,और कार्यरूप में परिणत करके इसे समझा भी दिया है,ताकि लोगों के दिलों से सृष्टि के साथ सहायता के

लिए संबंध स्थापित करने की आस्था समाप्त हो जाये,और लोग निष्ठापूर्वक अल्लाह से अपना संपर्क स्थापित करने की चेष्टा करें। यही कारण है कि एक बार आप स॰ सफ़ा पहाड़ पर खड़े हुए जबकि क़ुरआन की यह आयत नाज़िल हुई ( और अपने क़रीबी लोगों को डराओ) और बोले:हे क़ुरैश के लोगों- या इसी प्रकार के कुछ शब्द प्रयोग किये- तुम लोग अपने आप को ( नेकी के बदले) ख़रीद लो। मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हे कोई सहायता नहीं दे सकता।

हे अब्बास बिन मुत्तलिब! मैं तुम्हें अल्लाह के यहाँ कोई भी लाभ नहीं प्रदान कर सकता।

हे सुफैया, मुहम्मद की चच्ची! मैं तुम्हें अल्लाह के यहाँ कोई भी लाभ नहीं प्रदान कर सकता।

हे फातिमा मुहम्मद की बेटी! मेरे धन से जो चाहो मांग लो,मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं कर सकता हूँ।{बुख़ारी शरीफ़: 4493/ मुस्लिम शरीफ़: 206}

जब नबीयों के सरदार औरतों की सरदार को लाभ नहीं पहुंचा सकते हैं,हालांकि वह अल्लाह की सबसे प्यारी बंदी हैं,तो फिर दूसरों का क्या होगा?बल्कि जो नबी स॰ से स्थान और मर्तबा में कम होगा उसके प्रति क्या विचार रखा जायेगा?

और जब आप स॰ के चच्चा अबु तालिब पर मौत का आक्रमण हुआ तो नबी स॰ वहाँ तशरीफ़ लाये,और देखा कि पहले से ही वहाँ पर अब्दुल्लाह

बिन अबु उमयया और अबु जहल उपस्थित हैं। आपने अपने चाचा से कहा: हे चाचु: लाइलाह इल्लल्लाह " कह दें,यह ऐसा शब्द है जिसके आधार पर मैं अल्लाह के यहाँ आप के लिए हुज्जत क़ायम कर दूंगा। वह दोनों काफिर बोले: क्या तुम अबदुल मुत्तलिब के पथ से पृथक हो जाओगे?नबी स॰ अपनी बात दुहराते रहे और वह दोनों अपनी बात, यहाँ तक कि सबसे अंतिम शब्द जो अबु तालिब की ज़बान से निकला, वह यह था: अबदुल मुत्तलिब के धर्म पर " और लाइलाह इल्लल्लाह पढ़ने से इनकार कर दिया। { बुख़ारी शरीफ़; 4494- मुस्लिम शरीफ़ ; 24}

उपरोक्त दोनों हदीसों में उन लोगों पर सख़त रद्द है जो यह आस्था रखते हैं कि नबी स॰ परलोक में किसी प्रकार के लाभ प्रदान करने की क्षमता रखते हैं,हालांकि आप सामान्य रूप से बंदों में सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वाधिक लोकप्रिय हैं,अल्लाह की दृष्टि में आप का बड़ा स्थान है और अनुशंसा के स्तर पर भी आप अल्लाह के क़रीब हैं। लेकिन इन तमाम विशेषताओं के बावजूद भी आप अपने सबसे क़रीबी रिश्तेदार को नफ़ा पहुंचाने से असमर्थ रहे। फिर किसी अन्य व्यक्ति के प्रति जो नबी स॰ से भी कम मर्तबा का हो जैसे नेक लोग इत्यादि हम उनके विषय में क्या विचार रख सकते हैं?

शैख़ अबदुर्रहमान बिन साअदी ने कहा: एकेश्वरवाद की दलिलों और तर्कों में से मख़लुक़ और उन लोगों की विशेषताओं को पहचानना है जिन की अल्लाह के साथ वंदना की जाती है। क्युंकि वह समस्त वस्तु जिन की पूजा की जाती है चाहे वह शासक या मानव हो, वृक्ष हो या पत्थर

हो या कोई अन्य वस्तु, ये सब के सब विवश,लाचार और असमर्थ हैं। उनकी क्षमता में थोड़ा लाभ पहुंचाना भी नहीं है,न वह किसी वस्तु का सृजन कर सकते हैं,बल्कि वह स्वयं सृजित किये गये हैं। न वह किसी लाभ के स्वामी हैं न किसी हानि के मालिक,न मृत्यु की क्षमता रखते हैं न जीवन की शक्ति और नहीं मरणोपरांत जीवित होने की ताक़त ।और वह अल्लाह ही है जो सारी दुनिया को पैदा करने वाला है,और हर एक को वही आहार देता है,समस्त समस्याओं का वही निदान करता है और समस्त कार्यों का वही संचालन करता है। वही हानिकारक है, वही लाभदायक है,वही दाता है और वही निषेधकर्ता है। उसी के हाथ में हर चीज़ का शासन है और समस्त चीज़ें उसी के पास लौट कर आयेंगी। और हर चीज़ उसी का रुख़ करती है,उसी की पनाह लेती है,और उसी के सामने शीश नवाती है। अतः इस से बड़ा तर्क और क्या हो सकता है जिसको अल्लाह ने बार बार दुहराया है और जिसे विभिन्न स्थानों पर अपनी किताब में और आपने संदेष्टा की ज़बानी वयक्त किया है। यह एक बौद्धिक एवं प्राकृतिक तर्क है जिस तरह यह कान तथा वर्णन पर आधारित तर्क है अल्लाह के एक होने की अनिवार्यता पर, और यही बात सत्य भी है,और मिश्रण (शिर्क) के ग़लत होने पर एक महत्वपूर्ण उदाहरण भी।

और जब सामान्य रूप से सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व अपने निज्जी और क़रीबी आदमी को लाभ पहुंचाने की क्षमता नहीं रखते हैं और अपने प्रिय रिशतेदारों को लाभ पहुंचाने से असमर्थ हैं तो फिर किसी अन्य के प्रति क्या आस्था रखी जा सकती है।

अतः तबाही हो उस व्यक्ति की जो अल्लाह के साथ मिश्रण करता है और उसके जनित वस्तुओं में से किसी को उस के समान क़रार देता है,वास्तव में उसकी बुद्धि उस से छीन ली गई है उस से दीन छीन जाने के पश्चात।

सृष्टि के विवश और लाचार होने के प्रमाण के रूप में जिन तर्कों को प्रस्तुत किया जाता है उन में से एक तर्क अल्लाह का यह शुभ कथन भी है:" आप कह दें कि उनको पुकारो जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त पूज्य समझते हो। न वे तुम से दुख दूर कर सकते, न तुम्हारी दशा बदल सकते हैं।

वास्तव में जिनको यह लोग पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामीप्य प्राप्त करने का साधन खोजते हैं कि कौन अधिक समीप है?और उसकी दया की आशा रखते हैं। और उसकी यातना से डरते हैं। वास्तव में आपके पालनहार की यातना डरने योग्य है"।{ सुरह बनी इस्राईल: 56-57}

इब्ने जरीर रह॰ का कहना है:" अल्लाह तआला अपने नबी के नाम क ज़िक्र करते हुए कहता है:ऐ मुहम्मद अपनी जाती के मिश्रणकारीयों से कहो जो अल्लाह के अतिरिक्त उसके जनित वस्तुओं को पूजते हैं: ऐ मेरी जाती के लोगों तुम उनहें पुकारो जिन को तुम पूज्य समझते हो और उनके समक्ष शिश नवाते हो जब तुम पर किसी कठिनाई की वर्षा होती है, फिर देखो कि वह तुम्हारी सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं, तुम्हारे कष्ट को नष्ट करते हैं, तुम्हारी दशा को परिवर्तित करते हैं और

किसी और की ओर लौटाते हैं, फिर उनहें तुम अपना पूज्य मानो? वास्तव में वह इस बात की क्षमता नहीं रखते हैं, न कोई चीज़ उनकी शक्ति के अंतर्गत है, बल्कि इसकी पूर्ण क्षमता केवल वही रखता है जो तुम्हारा और उनका रचयिता है"।उनकी बात समाप्त हुई।

शैख़ साअदी रह॰ ने इस आयत के विशलेषण में कहा है:" अल्लाह तआला कहता है: उन मिश्रणकारीयों से कहो जिन्होंने अल्लाह का साझी बना लिया, और उनकी वैसे ही वंदना करते हैं जैसे अल्लाह की करनी चाहिए,और उन्हें ऐसे ही पुकारते हैं जैसे अल्लाह को पुकारना चाहिए,उस गुमान और आस्था को ठीक करने का उपदेश देते हुए अगर वह सच्चे हों: तुम उनहें पुकारो जिन को तुम पूज्य समझते हो, फिर देखो कि वह तुम्हारी सहायता करते हैं, तुम से कष्ट को दुर करते हैं,कुंयकि वह न तो तुम से किसी रोग,दुख,भुखमरी और कठिनाई इत्यादि को दुर करने की क्षमता रखते हैं,वह उसे बिल्कुल समाप्त नहीं कर सकते और न इसी प्रकार उस बिमारी से एक को नजात देकर दुसरे में प्रवेश करने की शक्ति रखते हैं,न एक कठिनाई को दूसरी कठिनाई में परिवर्तित करने की शक्ति। जब उनके भीतर इस प्रकार की कमी उपस्थित है तो फिर किस आधार पर उनको तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो? कुंयकि न उनमें गुण है,न ख़ूबी और न कमाल और न ही लाभदायक विशेषत।अतः उनको पूज्य बनाना धर्म और बुद्धि में कमी का संकेत और विचार में मूर्खता का द्योतक है।

और आश्चर्यजनक बात यह है कि मूर्ख व्यक्ति मूर्खता को अपनाने, उसे अंगीकार करने और उसे अपने पथभ्रष्ट पूर्वजों से सवीकार करने में उचित विचार और लाभदायक बुद्धि समझता है,और उस अल्लाह के लिए जो एक है, अकेला है, स्वयं में पुर्ण है और विभिन्न प्रकार की विशेषताओं से सुसज्जित है, के साथ निष्ठा को  मूर्खता समझता है और उसे आश्चर्यजनक बात मानता है। जैसा कि मुशरिकों ने कहा:" क्या कई पुज्यों को एक पूज्य बना दिया,यह तो आश्चर्यचकित कर देने वाली बात है?{ तैसिरुल करीम अर्रहमान फि तफसीर कलामिल मन्नान}

और अल्लामा शौकानी ने " फतहुल क़दीर" में कहा है:" वह तुमसे कठिनाई को दुर करने की क्षमता नहीं रखते हैं " अर्थात: यह उनकी शक्ति- क्षेत्र से बाहर की बात है। और सत्य पूज्य वही है जो कष्ट को नष्ट करने की क्षमता रखता है,उसे एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तित करने की शक्ति रखता है और एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की ताक़त रखता है। अतः इस बात पर विश्वास करना अनिवार्य है कि जिनको यह लोग पूज्य समझते हैं वह वास्तव में पूज्य नहीं हैं। फिर अल्लाह तआला ने उनकी असमर्थता को उनकी अति विवशता के साथ बयान किया है कि वह किस तरह लाभ प्राप्त करने और कष्ट को दुर करने में अल्लाह के मुहताज हैं। अतः अल्लाह तआला ने फरमाया :" वह लोग जिन्हें यह पुकारते हैं वह स्वयं अपने रब का सामीप्य तलाश करते हैं "।

और अल्लाह तआला ने हमारे लिए पुर्ण रूप से इस बात को स्पष्ट कर दिया,और इस तथ्य को सुन्दरता के साथ बयान कर दिया है। और वह तथ्य है अल्लाह के अतिरिक्त समस्त सृष्टि का लाचार एवं विवश होना, और इस बात को अल्लाह तआला ने अपने इस फरमान में वर्णित किया है:" आप कह दें: उन पुज्यों को पुकारो जिन को तुम अल्लाह के अतिरिक्त मानते हो। वह आकाश और धरती में कण बराबर भी अधिकार नहीं रखते हैं,न उन दोनों में उनका कोई भाग है,और न उन में से कोई अल्लाह का सहायक है। और न अल्लाह के पास कोई अनुशंसा काम देगी परन्तु जिस के लिए वह अनुमति देगा। {सुरह सबा;22}अतः अल्लाह के अतिरिक्त जिन को पुकारते हैं न तो वह उसके शासन में साझी हैं और न उसमें भागीदार हैं और न संसार के संचालन में कोई उसका सहायक है, और न कोई अंतिम दिवस पर उस की अनुमति के बिना अनुशंसा ही कर सकता है। और जिस की यह स्थिति हो उस से वंदना करना और सहायता की गुहार लगाना सबसे बड़ी मूर्खता और सबसे बड़ी त्रुटी है।

और इस भाग में शक्तिशाली तर्कों में से अल्लाह तआला का वह फरमान भी है जो सुरह फ़ुरक़ान के प्रारंभ में है:" और उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त ऐसे लोगों को पूज्य बनाया जो किसी भी  वस्तु को जन्म नहीं दे सकते,और वह स्वयं पैदा किये गये हैं,और अपने लिए भी किसी हानि और लाभ के स्वामी नहीं हैं, और न वह मृत्यु के मालिक हैं, न जीवन के और न मरणोपरांत दुबारा उठाये जाने के "।

और शैख़ शंक़ीती रह॰ ने इस आयत की तफसीर में कहा है:" अल्लाह तआला ने इस पवित्र आयत में वर्णित किया है कि वह तथाकथित पूज्य व्यक्ति जिन्हें मिश्रणकारी लोग अल्लाह के अतिरिक्त पूजते हैं वह छह विशेषताओं से सुसज्जित हैं और उनमें से प्रत्येक ज़बरदस्त तर्क है इस बात का कि अल्लाह के साथ उनकी पूजा किसी भी अवस्था में उचित नहीं है। बल्कि यह सबसे बड़ा अत्याचार और भयावह अज्ञानता है। और एक ऐसा मिश्रण और शिर्क है जिस को अंजाम देने वाला सदैव के लिए नर्क में रहेगा। और वह छह बातें जो इन तथाकथित पूज्य वयक्तिओं में हैं वह निम्नलिखित हैं:

प्रथम: वह किसी भी चीज़ को जन्म नहीं देते हैं, अर्थात किसी भी वस्तु को पैदा करने की क्षमता नहीं रखते हैं।

द्वितीय:वह सृजित किये गये हैं, अर्थात उनहें सृष्टि के रचयिता ने पैदा किया है।

तृतीय: वह अपने लिए किसी भी लाभ तथा हानि की क्षमता नहीं रखते हैं।

चतुर्थ, पंचम तथा छट्ठा यह है कि वह लोग न तो मृत्यु के मालिक हैं, न जीवन का और न मृत्यु के पश्चात दुबारा उठाये जाने का।

और इस पवित्र आयत में वर्णित यह छह बातें क़ुरआन के दुसरे स्थान पर विस्तृत रुप से आई हैं। फिर उसके पश्चात् बहुत सारी आयतों क वर्णन किया है जिनमें मख़लुक की विशेषताओं का वर्णन है और उनकी

विवशता का विवरण। और इसी से यह सिद्ध हो गया कि अल्लाह की इबादत में अन्य को साझी बनाना अवैध एवं अनुचित है।

और इब्ने क़ैययिम रह॰ ने कहा:" मख़लुक में से किसी के अंदर भी किसी व्यक्ति को लाभ एवं हानि पहुंचाने की क्षमता नहीं है,न किसी को देने की शक्ति है न छीनने की ताक़त, न उसके वश में किसी का मार्गदर्शन है न किसी को पथभ्रष्ट करने की सकत।न उसके हाथ में किसी की सहायता है, न किसी का अपमान, न किसी को गिरा सकता है, न किसी को उठा सकता है, न किसी का सम्मान उसके वश में है न किसी की रुसवाई। बल्कि अल्लाह ही है जो उन तमाम चीजों का स्वामी है। अल्लाह तआला का फरमान है:" यदि किसी के लिए अल्लाह दया का द्वार खोल दे तो उसे कोई बंद करने वाला नहीं, और जिस के लिए बंद कर दे तो अल्लाह के पश्चात उसे कोई खोलने वाला नहीं है,और वही शक्तिशाली और ज्ञानवान है "। { सुरह फातिर:2} और दुसरे स्थान पर फरमाया:" और यदि अल्लाह आपको कोई दुख पहुंचाना चाहे तो उसके अतिरिक्त कोई नहीं जो उसे दूर कर सके ,और यदि वह आपके साथ भलाई करना चाहे तो कोई उसकी भलाई को रोकने वाला नहीं । वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है,तथा वह क्षमताशील एवं दयावान है"।{ सुरह युनुस: 107} ,और तीसरे स्थान पर फरमाया:" यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करना चाहे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं प्राप्त कर सकता, और यदि तुम्हारी सहायता न करे तो फिर वह कौन है जो उसके पश्चात् तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए "। {सुरह आले इमरान: 160}और

चौथे स्थान पर फरमाया:" क्या मैं उसको छोड़ कर किसी अन्य को पूज्य बना लूँ? यदि अत्यंत कृपाशील मुझे कोई हानि पहुंचाना चाहे तो उनकी अनुशंसा मुझे कुछ भी लाभ नहीं प्रदान कर सकती,और न वह मुझे बचा सकेंगे "।{ सुरह यासीन:23}और पांचवे स्थान पर फरमाया:" हे मनुष्यो! याद करो अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को,क्या कोई उत्पत्तिकर्ता है अल्लाह के अतिरिक्त जो तुम्हें जीविका प्रदान करता हो आकाश तथा धरती से?नहीं है कोई वंदनीय परन्तु वही! फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो"। {सुरह फातिर: 3}और इसी प्रकार फरमाया:" कौन है वह तुम्हारी सेना जो तुम्हारी सहायता कर सकेगी अल्लाह के मुक़ाबले में?काफिर तो बस धोखे ही में हैं। या कौन है जो तुम्हें जीविका प्रदान कर सके यदि अल्लाह अपनी जीविका रोक ले?बल्कि वह तो अवज्ञा एवं घृणा में घिर गए हैं "।{सुरह मुल्क: 20-21} अतः अल्लाह ने जीविका एवं सहायता को एक साथ वर्णित किया है, क्युंकि मनुष्य मुहताज है किसी ऐसे व्यक्ति का जो उस से शत्रु को दुर कर उसकी सहायता कर सके, और उसे लाभ प्रदान कर उसे जीविका दे सके। इसी कारण किसी ऐसे व्यक्ति का होना परम् आवश्यक है जो सहायक भी हो और रोज़ी देने वाला भी। और यह केवल अल्लाह ही है जो सहायता भी  करता है और जीविका का साधन देता है। अतः वही रोज़ी देने वाला है और आश्चर्यजनक शक्ति का मालिक भी है। आदमी के ज्ञान, समझदारी और शिक्षा का कमाल यह है कि वह इस तथ्य को जान ले कि जब अल्लाह उसे हानि पहुंचाना चाहे तो कोई भी उसे रोक नहीं सकता, और जब दया करना चाहे तो कोई उसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

और अल्लाह तआला ने जादूगरों के विषय में कहा है:" वह अल्लाह की अनुमति के बिना किसी को भी कष्ट देने की क्षमता नहीं रखते हैं "। {सुरह बक़रह: 102} अतः वह अल्लाह ही है जो अपने बंदों के लिए काफी और पर्याप्त है,उनकी सहायता करता है,उनहें रोज़ी रोटी देता है और उनकी रक्षा करता है।

और सृष्टि तथा मानवमात्र की विवशता के अन्य उदाहरण भी हैं जिन्हें शैख़ अबदुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया है। अतः वह कहते हैं:" यदि कोई पीड़ित व्यक्ति किसी शासक की सेवा में उपस्थित होता है,और शासक तथा उसके नौकर दोनों से अपने ऊपर किये गये अत्याचार के प्रति न्याय की गुहार लगाता है ,तो क्या उसे अक़्ल उचित समझेगी?

या कोई धनी वयक्ति जो प्रचुर मात्रा में धन खर्च करता है,और उसका एक नौकर है जो कुछ भी देने की क्षमता नहीं रखता है,फिर कोई निर्धन और फ़क़ीर आकर उसी विवश नौकर से सहायता की गुहार लगाता है और उस धनी मालिक को छोड़ देता है,तो क्या समझदार मस्तिष्क इसको सवीकार करेगा?

और क्या कोई इस बात से प्रसन्न होगा कि उसके नौकर को उसके साथ सामान दर्जा दिया जाये?

या अगर कोई अत्याचारी शासक है जिसका कोई नौकर हो और वह किसी भी लाभ तथा हानि की क्षमता नहीं रखता हो,फिर कोई अन्य नौकर इसी

प्रकार के विवश नौकर का सहारा तलाशने लगे और उस शक्तिशाली शासक को छोड़ दे तो क्या अक़्ल इसे सवीकार करेगी?

या फिर कोई वयक्ति क़ब्रस्तान से गुज़रता है और उसकी सवारी गड्ढे में गिर जाती है,और वह क़ब्र में उपस्थित लोगों को बुलाने लगता है: हे भाई! मेरी सहायता करो "। जबकि उसके पास कोई जीवित शक्तिशाली वयक्ति है जो उसकी सहायता कर सकता है, लेकिन वह उसे छोड़ देता है, और नहीं पुकारता है,तो क्या इस बात को समझदार दिमाग़ सवीकार करेगा?,इसके अतिरिक्त और भी अन्य उदाहरण हैं जो विवश ग़ुलाम और शक्तिशाली शासक से संबंधित हैं। स्पष्ट रहे कि इस तरह की हरकत पर  एक समझदार आदमी हंसेगा,बल्कि उपहास उड़ायेगा,बुरा भला कहेगा और फटकार लगायेगा। और जब एक ताकतवर मख़लुक से सहायता न लेने के कारण एक आदमी हास्य एवं व्यंग्य का पात्र बन सकता है, तो फिर ऐसे जीवित और शक्तिशाली व्यक्तित्व को छोड़ने का क्या परिणाम होगा जो सर्व शक्तिशाली एवं सर्व शक्तिमान है,जिसके हाथ में समस्त संसार का शासन है,और कष्ट को नष्ट करने और कठिनाई से नजात पाने के लिए उनको बुलाता है जो अपने लिए ही न किसी हानि के मालिक न किसी लाभ के स्वामी हैं ?{अस्सैफुल मस्लुल अला आबिदिर्रसुल;पृष्ठ संख्या :67-68,कुछ परिवर्तन के साथ} और इसी प्रकार उनहोंने उन वयक्तिओं में से किसी एक को जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से दुआ करने की आस्था रखते हैं और उसे उचित समझते हैं,उपदेश देते हुए कहा: यदि आप कहते हैं कि अल्लाह आपकी अपेक्षा इनकी दुआ जल्दी सुन लेता है; तो यह बात उस समय उचित होती

जबकि वह जीवित होते, उपस्थित होते और आप उनसे अल्लाह से अपने लिए दुआ करने की विनती करते, अब जबकि वह मृतप्राय हैं-चाहे वो नबी हों अथवा कोई अन्य- उनसे दुआ की विनती करना मूर्खता एवं गुमराही है,कुंयकि उनकी  शारीरिक क्षमता समाप्त हो गयी  है,वह संसार से जा चुके हैं,उनकी आत्माएं स्वर्ग सुधार चुकी हैं,या फिर उनके साथ वह चुका है जो उनका रब उनके साथ चाहा,और उनके शरीर से रूह अलग हो चुकी है,फिर भी तुम एक जीवित और शक्तिशाली व्यक्तित्व को छोड़ देतो हो(और मृतप्राय को पुकारते हो)।{पुर्व हवालाऔर शैख़ अब्दुल्लाह अबाबतीन ने कहा:" आश्चर्य की बात यह है कि यदि कोई वयक्ति धरती पर किसी शहीद अथवा किसी अन्य से आकर केवल दुआ की विनती करता है,उससे अपने दुश्मन को पराजित करने या अपने लिए वस्त्र नहीं मांगता है,तो लोग फिर भी पागल कहेंगे,मगर जब वही शख्स धरती के भीतर सड़ कर मिट्टी बन जाता है,तो शैतान और गुमराही के सरदार उसे सजा संवार कर पेश करते हैं ताकि लोग उस से सहायता का आह्वान करें,और उस से मदद मांगे। और एक साधारण व्यक्ति अपनी प्राकृतिक शक्ति से अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से सहायता मांगने को अवैध होना समझ लेता है। जैसा कि एक वाक्य बयान किया जाता है कि मक्का का एक शिक्षित व्यक्ति नज्द के साधारण और अनपढ़ आदमी से कहा: तुम लोगों के यहाँ पवित्र वयक्तिओं और अल्लाह के वलियों का सम्मान क्यूं नहीं किया जाता,हालांकि अल्लाह शहीदों के विषय में कहता है कि वह जीवित हैं और अपने  रब के यहाँ रोज़ी पाते हैं? उस आलिम से देहाती नजदी ने कहा: क्या अल्लाह ने कहा कि वह

**रोज़ी देते हैं, या उनहें रोज़ी दी जाती है? अगर अल्लाह ने कहा कि वह रोज़ी देते हैं तो मैं उनसे रोज़ी की गुहार लगाऊंगा,लेकिन अगर अल्लाह ने कहा कि उन्हें रोज़ी दी जाती है तो फिर मैं उस से रोज़ी मांगूंगा जो उन्हें रोज़ी देता है। इस पर उस मक्की ने कहा: तुम लोगों के पास ढेर सारे तर्क हैं,और खामोश होगया। {** تأسيس التقديس في كشف تلبيس داؤد بن جرجيس**: पृष्ठ संख्या;118- 119}**

**उन्नीसवॉ कारण: अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी अन्य से दुआ करने के ग़लत होने की तर्कों में से एक तर्क यह भी है कि वह लोग जिन्हें पुकारा जाता है,वह शासन की दृष्टि से भी विवश और कमज़ोर हैं। और उसका अभिप्राय यह है कि वह लोग जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त पुकारा जाता है वह किसी भी चीज़ पर आधिपत्य और शासन नहीं रखते हैं,चाहे वह कोई छोटी ही चीज़ क्यूं न हो। अगर तथ्य यह है,तो फिर उनसे कोई भी चीज़ मांगना कैसे उचित होगा?और अल्लाह तआला ने कहा:" और जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो,वह क़ितमीर के भी मालिक नहीं हैं "।और क़ितमीर से अभिप्राय खजुर और उसकी गुठली के मध्य झिल्ली है।और जहां तक बात अल्लाह तआला की है तो वह समस्त संसार का पूर्ण रूप से शासक है,जैसा कि एक स्थान पर अल्लाह ने कहा है:" आकाश और धरती का शासन केवल अल्लाह के लिए है"। और एक स्थान पर फरमाया:" बाबरकत है वह ज़ात जिस के हाथ में शासन है "।**

और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए शासन के न होने का सबसे बड़ा तर्क सुरह सबा में वर्णित अल्लाह का यह फरमान है:" आप कह दें: उन पुज्यों को पुकारो जिन को तुम अल्लाह के अतिरिक्त गुमान करते हो। वह आकाश और धरती में कण बराबर भी अधिकार नहीं रखते हैं और न उनका उन दोनों में कोई भाग है,और न उनमें से कोई अल्लाह का सहायक है"।अर्थात उनमें से कोई भी अल्लाह के साथ संसार के संचालन में सहायक नहीं हैं, न स्वतंत्र रुप से, न उसमें शरीक होकर। बल्कि प्रत्येक वस्तु पर अल्लाह ही का शासन है। और जहां तक बात अल्लाह के मख़लुक की है, तो इस में कोई संदेह नहीं है कि उनका शासन विवशता पर आधारित है,क्षणिक है तथा औपचारिक है। यानी जो कुछ भी उनके पास माल, मवेशी, घर और संपत्ति है वह सब के सब एक सीमित समय के लिए है। और क्षणिक इस लिए है कि मरने के बाद वह संपत्ति बच्चों के पास चली जाती है,फिर उसके पश्चात् कोई भी चीज़ उसके नाम से नहीं संबंधित रहती है। और विवश इस लिए है कि जो कुछ भी उसके पास है उसके प्रयोग में वह शरीयत और धर्म के सिद्धान्तों के पालन हेतु मजबुर है,उसमें शरीयत के उसूल की अवहेलना करके हस्तक्षेप करना उचित नहीं है। अतः अगर आदमी अपना घर जलाना चाहे तो यह उसके लिए हराम है। अगर बिना किसी कारण अपने ग़ुलाम को मारना चाहे तो यह भी अवैध है।और जहाँ तक बात अल्लाह तआला की है तो वह अपनी पूंजी तथा संपत्ति में जैसे चाहे प्रयोग का हाथ चलाता है। और ज़लज़ला पैदा करने और सैलाब बहाने से उसके शासन में कोई कमी पैदा नहीं होती है। न निर्धन को धनी और धनी को निर्धन करने

पर कोई आपत्ति जता सकता है।" वह कुछ भी करे उस से प्रश्न नहीं किया जायेगा,लेकिन उन लोगों से अवश्य पुछा जायेगा "।और इन समस्त बातों के पीछे ऐसी हिकमत है जिसे अल्लाह ही जानता है। और अल्लाह ही ज़बरदस्त हिकमत वाला है।

बीसवां कारण: और अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से दुआ करने के ग़लत होने की तर्कों में से एक तर्क यह है कि वह लोग जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त पुकारा जाता है वह जन्म देने की दृष्टि से कमज़ोर हैं;कुंयकि अल्लाह तआला हर चीज़ का जन्मदाता है,और वही है जिसने सृष्टि को पैदा किया,और उन्हें अदम से अस्तित्व में लाया। और जहाँ तक उन लोगों की बात है जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त पुकारा जाता है,तो वह किसी भी वस्तु को जन्म देने की शक्ति नहीं रखते हैं,चाहे वह कोई छोटी ही चीज़ क्यूं न हो। तो फिर उनको पुकारना और उनसे संबंध स्थापित करना बिल्कुल ग़लत है,इसलिए कि मख़लुक अपने ख़ालिक़ कि मुहताज होती है,और जो विवश एवं मुहताज हो वह पुजे जाने योग्य नहीं है। बल्कि उस पर अनिवार्य है कि वह अल्लाह की वंदना करे,उस से अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु विनती करे और यह कार्य हमेशा करे।जो जन्मदाता नहीं है उसकी पूजा को अवैध ठहराते हुए अल्लाह तआला कहता है:" तो क्या जो उत्पत्ति करता है,उसके समान है जो उत्पत्ति नहीं करता?क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो तो कभी नहीं कर सकते। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा तथा दया करने वाला है। और जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम वयक्त करते हो उस से अल्लाह अवगत है। और जिन्हें

वह अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हैं वह किसी भी वस्तु की उत्पत्ति नहीं कर सकते हैं,बल्कि वह स्वयं उतपन्न किये गये हैं। वे निर्जीव प्राणहीन हैं,और यह भी नहीं जानते हैं कि कब पुनः जीवित किये जायेंगे। {सुरह नहल:17- 21}

और सुरह हज के अंत में अल्लाह तआला ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है,अतः कहता है:" हे लोगो! एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है,इसे ध्यान से सुनो, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो वह सब एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि सब इस के लिए मिल जाएं। और यदि उन से मक्खी कुछ छीन ले तो उस से वापिस नहीं ले सकते।मांगने वाले निर्बल और जिनसे मांगा जा रहा है वह भी निर्बल हैं "।{सुरह हज्ज: 73}

और इल्यास अ॰ ने इसी दार्शनिक तर्क के आधार पर अपनी जाती को समझाया कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की भक्ति अवैध है,अल्लाह तआला का फरमान है:" क्या तुम मूर्तियों की पूजा करते हो और सबसे बेहतरीन पैदा करने वाले को छोड़ देते हो?अल्लाह तुम्हारा भी और तुम्हारे पूर्वजों का भी मालिक है "।इस आयत में जो " बाल" शब्द का प्रयोग हुआ है उस से अभिप्राय वह बुत है जिस की अज्ञानता के युग में लोग पूजा करते थे। और यह तर्क अल्लाह की कृपा से बिल्कुल स्पष्ट है।

इक्कीसवॉ कारण: और अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से दुआ करने के ग़लत होने की तर्कों में से एक तर्क यह भी है कि वह लोग जिन्हें पुकारा जाता है वह समस्या को सुलझाने की दृष्टि से कमज़ोर हैं,कुंयकि

अल्लाह के अतिरिक्त जिन की भी पुजा की जाती है वह आकाश और धरती में उतपन्न किसी भी समस्या को सुलझाने की क्षमता नहीं रखते हैं,बल्कि समस्याओं का समाधान करने वाला और कठिनाईयों को समाप्त करने वाला केवल अल्लाह ही है जिसका कोई शरीक नहीं है,जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा:" अल्लाह ही का अधिकार है पहले भी और बाद में भी "। और अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया है कि उसके चहेते नबी मुहम्मद साहब भी किसी समस्या के निदान की क्षमता नहीं रखते हैं,अल्लाह का फरमान है :" हे नबी! इस विषय में आपको कोई अधिकार नहीं है,अल्लाह चाहे तो उनकी क्षमा याचना स्वीकार करे,या दण्ड दे,कुंयकि वह अत्याचारी हैं "।{ सुरह आले इमरान; 128} जब नबी स॰ के साथ यह समस्या है तो फिर किसी अन्य व्यक्ति के साथ क्या होगा?

और अल्लाह तआला के इस फरमान:" आप कह दें कि सारा अधिकार केवल अल्लाह के लिए है " के सबबे नुज़ुल से यह सिद्ध हो गया कि नबी स॰ ने अरब के कुछ जीवित वयक्तिओं पर क़ुनुत नाज़िला पढ़ी और उन पर लानत फरमाई। अतः अल्लाह ने आपका मार्गदर्शन किया और बताया कि सारा अधिकार उसी के पास है, इसलिए कभी दुआ को सवीकार करता है और उन पर तिरस्कार भेजता है,और कभी उनकी तौबा क़बुल करता है।

बुखारी शरीफ़ में हज़रत सालिम अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उनहोंने अल्लाह के रसूल को कहते हुए सुना जब फज्र की नमाज़ में आखरी रकात में रूकु से सर उठाये तो:" हे अल्लाह फलां फलां पर लानत

फरमा",तब अल्लाह तआला ने यह आयत अवतरित किया:"आप को इस विषय में अधिकार नहीं है "," वह सब जालिम हैं " तक।{ बुख़ारी शरीफ़; 4559}

और अहमद की एक रिवायत में है कि नबी स॰ हारिस बिन हिशाम,सुहैल बिन अमर और सफवान बिन उमैयाके पर लानत भेजते थे,लेकिन अल्लाह ने उनकी तौबा सवीकार कर ली।{अब्दुल्लाह बिन अहमद ने इस को रिवायत किया है अपने ज़वाएद में जो उनके वालिद के मुसनद पर है; 2/ 93}

और इब्ने जरीर का शब्द है:" और अल्लाह ने उन लोगों के लिए इसलाम का मार्ग प्रशस्त किया "।{जामिउल बयान फि तावीलिल क़ुरआन,तफसीर सुरह आले इमरान:128}

अल्लामा इब्ने कसीर का कहना है:" सामुहिक रूप से यह पता चला कि दुनिया व आख़िरत में हुकुमत केवल अल्लाह के लिए है जिसका कोई शरीक नहीं है, अतः अल्लाह ने कहा: ऐ नबी! आपके इख़्तियार में कुछ भी नहीं है ", अर्थात समस्त समस्या का निदान केवल अल्लाह के पास है।

फिर उसके पश्चात् अल्लाह तआला ने कहा:" आकाश और धरती का शासन केवल अल्लाह के हाथ में है ",और इसका स्पष्टीकरण करते हुए अल्लामा इब्ने कसीर ने कहा: समस्त चीज़ें अल्लाह की ही हैं,और धरती वाले उसके सामने केवल गुलाम हैं।" वह जिसे चाहता है क्षमा प्रदान

करता है,और जिसे चाहता है सज़ा देता है ",अर्थात वह अपनी चाहत के अनुसार कुछ करने वाला है,उसके निर्णय पर कोई आपत्ति नहीं जता सकता,और न जो कुछ करता है उसके प्रति प्रश्न किया जायेगा, बल्कि लोग अपने कार्य के प्रति पुछे जायेंगे"।

और शैख़ सुनउल्लाह बिन सुनउल्लाह हनफी उन लोगों की तर्कों को निरस्त करते हैं जो यह दावा करते हैं कि औलिया अपने जीवन में भी और मरणोपरांत भी निपटान का सामर्थ्य एवं क्षमता रखते हैं,और उनसे सहायता की गुहार लगाई जा सकती है कठिनाई और आपदा की घड़ी में,और उन्ही की सहायता से कोई बड़ा कार्य संभव है। अतः इस आस्था के कारण लोग उनकी क़ब्रों के पास आते हैं,और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उन से विनती करते हैं। इन्ही लोगों की आलोचना एवं भर्तसना करते हुए शैख़ सुनउल्लाह कहते हैं:

जहाँ तक उन लोगों का कहना है:(औलिया अपने जीवन में भी और मरणोपरांत भी समस्या के निदान की क्षमता रखते हैं) ,तो यह गलत इस लिए है कुंयकि यह अल्लाह के फरमान के विपरीत है।अल्लाह कहता है ( क्या अल्लाह के साथ भी कोई अल्लाह है?),(जान लो! सृष्टि भी उसी की है और शासन भी उसी का है) ,और यह भी कहता है ( आकाश और धरती उसी के हैं)। और इसके अतिरिक्त अन्य भी आयतें हैं जो इस बात की ओर संकेत करती हैं कि पैदा करने में,संसार के संचालन में,समस्याओं के निदान में और भविष्य को बनाने और बिगाड़ने में वह अकेला और एक है। उसके अतिरिक्त किसी के लिए भी उपरोक्त बातों में कोई हक़

और इख़्तियार नहीं है। परिणामस्वरूप समस्त चीज़ें उसी के शासन के अंतर्गत है,और उन पर उसी की हुकमरानी और आधिपत्य स्थापित है, वह जैसे चाहे प्रयोग करे, जैसे चाहे शासन करे, जिसे चाहे जीवन दे, जिसे चाहे मृत्यु दे और जिसकी चाहे रचना करे।

और अल्लाह तआला के अपने शासन में एकता होने का उदाहरण और तर्क क़ुरआन की बहुत सारी आयतों में उपस्थित है,जैसे अल्लाह तआला का यह कहना:" और जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो वह खजुर की गुठली के भी मालिक नहीं हैं "। और जहाँ तक उन लोगों की बात है जो कहते हैं कि औलिया मरणोपरांत कुछ करने की क्षमता रखते हैं,तो यह और बुरी है उन बातों से जो यह कहते हैं कि औलिया अपने जीवन में कुछ करने की क्षमता रखते हैं। अल्लाह तआला का फरमान है:" तुम भी मरोगे और यह लोग भी मरेंगे ",और दुसरे स्थान पर फरमाया:" अल्लाह ही खींचता है प्राणों को उनकी मृत्यु के समय,तथा जिसकी मृत्यु का समय नहीं आया उसकी निद्रा में। फिर जिस पर मृत्यु का निर्णय कर लिया हो उसे रोक देता है,तथा किसी अन्य तक भेज देता है एक निर्धारित समय के लिए। वास्तव में इस में कई निशानिया हैं उन लोगों के लिए जो चिन्तन मंथन करते हैं। {सुरह ज़ुमर; 42} और हदीस शरीफ़ में है :" जब आदम के पुत्र की मृत्यु हो जाती है तो उसकी नेकी की श्रृंखला समाप्त हो जाती है, परन्तु तीन चीजों के ----"।

और यह और इस प्रकार की अन्य चीजें इस बात की ओर इंगित करती हैं कि मृतक से एहसास और हरकत समाप्त हो जाती है,और यह भी

ज्ञात होता है कि उनकी आत्माएं पकड़ ली जाती हैं,और कमी व बढोतरी से उनके कार्य ख़ाली हो जाते हैं। अतः इस से सिद्ध हुआ कि अन्य में तो दुर की बात है, स्वयं में मृतक लोग कुछ करने की क्षमता नहीं रखते हैं। जब वह अपने व्यक्तित्व की गतिविधि से विवश है तो फिर किसी अन्य व्यक्ति के लिए क्या कर सकते हैं? अल्लाह तआला तो सूचित करता है कि आतमाऐं उसके पास हैं, लेकिन नास्तिक लोग कहते हैं कि आतमाऐं स्वतंत्र हैं, जो चहती हैं करती हैं।अल्लाह कहता है:" पुछिये! तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह "।

।और उनकी यह आस्था रखना कि औलिया लोगों का संसार में कुछ करना उन की करामात में से है,यह अत्यंत ग़लत आस्था है। कुंयकि करामत एक ऐसी चीज़ है जिसके माध्यम से अल्लाह अपने मित्रों और दोस्तों को सम्मान प्रदान करता है,और उसके आदेशों का पालन करने वालों को इज़्ज़त देता है। इस करामत में न उन बुजुर्गों की कोई इच्छा होती है,न कोई चैलेंज होता है,न कोई शक्ति होती है और न उनके ज्ञान की कोई भूमिका होती है,जैसा कि मरयम बिनते इमरान, उसैद बिन हुज़ैर और अबु मुस्लिम ख़ौलानी के वाक्य में वर्णित है।

और जहाँ तक उन लोगों का कहना है कि कठिनाई के समय उन से सहायता प्राप्त की जाती है, और वह सहायता देने की क्षमता रखते हैं, तो यह बात भी अत्यंत ग़लत है,बल्कि पहले वाली बात से भी ज्यादा खतरनाक है। इस का कारण यह है कि यह अल्लाह तआला के इस फरमान:" या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब उसे पुकारे और

दुःख दुर करता है, तथा तुम्हें धरती का अधिकारी बनाता है, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत ही कम शिक्षा ग्रहण करते हो। {सुरह नमल: 62}के विरुद्ध एवं विपरीत है। इसी तरह अल्लाह के इस फरमान के सिद्धान्त के भी विपरीत है जिसमें कहा गया है:" हे नबी! उनसे पुछिये कि थल तथा जल के अंधेरों से तुम्हें कौन बचाता है,जिसे तुम विनयपुर्वक और धीरे धीरे पुकारते हो कि यदि उसने हमें बचा दिया तो हम अवश्य कृतज्ञों में हो जायेंगे? { सुरह अनआम; 63}

स्पष्ट रहे कि अल्लाह तआला ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि वही कष्ट को नष्ट करने वाला है,उसके अतिरिक्त किसी में भी यह क्षमता नहीं है,और अकेला वही है जो किसी दुखी और व्याकुल की प्रार्थना सुन सकता है। और इसी लिए हर कठिन समय में उसी से सहायता मांगना परम् आवश्यक है,कुंयकि वही दुखों को दुर करने की क्षमता रखता है,भलाई पहुंचाने की शक्ति उसी के पास है,वह इस कार्य में एक एवं अकेला है। जब यह बात प्रमाणित हो गई कि अल्लाह तआला ही है जो कष्ट और हर्ष प्रदान करने की क्षमता रखता है तो फिर उसके अतिरिक्त जितने नबी,वली,पीर और तथाकथित पूज्य हैं वह सब इस श्रेणी से बाहर आ गये।

और सहायता की गुहार केवल उन्ही बातों में उचित है जो सामान्य रूप से आदमी को दिखाई देती है,जैसे युद्ध में शत्रु के विरुद्ध अपने मित्रों से सहायता की गुहार लगाना, या दुश्मन को पकड़ने के लिए,या फ़िर किसी खुंखार जानवर से बचने के लिए इत्यादी। जैसे किसी का यह

कहना:" ऐ खानदान वालो! ऐ मुसलमानो! दुश्मन के साथ युद्ध के लिए आ जाओ।

और जहाँ तक किसी की शक्ति और प्रभाव से सहायता प्राप्त करने की बात है,या फ़िर आंतरिक समस्याओं में ,जैसे बिमारी, डर, डूबना, तंगी, निर्धनता, रोज़ी मांगना इत्यादि,तो यह सब अल्लाह की विशेषताओं में से हैं,में अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से नहीं मांगा जा सकता।

और जहाँ तक लोगों के बुजुर्गों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रभाव प्राप्त करने की बात है,तो यह भी अवैध है,जैसा कि अज्ञानी अरब और अशिक्षित सुफीया किया करते हैं, वह बुजुर्गों को पुकारते हैं और उनसे सहायता की प्रार्थना करते हैं, और यह सब बातें धार्मिक दृष्टि से अनुचित हैं। अतः जिस की यह आस्था हो कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी नबी, वली, आत्मा इत्यादि की कष्ट को नष्ट करने और आवश्यकता की पूर्ति में भूमिका होती है ,तो वह व्यक्ति गुमराही और तबाही के गड्ढे में गिर गया वह बिल्कुल नर्क के किनारे खड़ा है।

और उनका यह तर्क देना कि बुजुर्गों का ऐसा करना करामत है;यह बिल्कुल ग़लत बात है कि अल्लाह के औलिया इस स्थान तक पहुंचें हों।यह सब मुर्ति के पुजारीयों और बुतप्रस्तों का वहम व गुमान है। जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा:" वह कहते हैं कि यह सब अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारिशी हैं ", " हम उनकी प्रार्थना इस लिए करते हैं ताकि यह हमें अल्लाह के क़रीब कर दें "," क्या मैं उसको छोड़ कर किसी अन्य को पूज्य बना लूँ? कुंयकि किसी भी नबी, वली या किसी अन्य को

सहायता की दृष्टि से पुकारना या याद करना जिनके हाथ में न किसी का नफ़ा है न नुक़सान; यह अल्लाह के साथ मिश्रण तथा शिर्क है,कुंयकि नुक़सान को दुर करने और ख़ैर को पहुंचाने की क्षमता अल्लाह के अतिरिक्त किसी और में नहीं है

बाइसवाँ कारण: और सृष्टि एवं मख़लुक से प्रार्थना करने के ग़लत होने की कारणों में से एक कारण यह भी है कि वह रोज़ी देने की दृष्टि से असमर्थ एवं विवश हैं। और अल्लाह तआला ने भी उन लोगों की निन्दा और तरदीद की है जो ऐसे लोगों से रोज़ी मांगते हैं जो देने की क्षमता नहीं रखते। अल्लाह तआला का फरमान है:" और अल्लाह के अतिरिक्त उनको पुकारते हैं जो उनके लिए आकाशों तथा धरती से कुछ भी जीविका देने की क्षमता नहीं रखते,और न इसका सामर्थ्य रखते हैं "।{सुरह नहल;73},जैसा कि अल्लाह तआला ने अपनी किताब में स्पष्ट किया है कि समस्त प्रकार का पुरस्कार एवं जीविका अल्लाह की ओर से है, जिसका कोई साझी नहीं है। वह अपने बंदों को पुरस्कृत करने में अकेला ही है। इसी कारण उचित नहीं है कि किसी अन्य से सहायता प्राप्त करने की विनती की जाये। अल्लाह तआला का फरमान है:" तुम्हारे पास जो कुछ भी पुरस्कार है वह सब अल्लाह की ओर से है "।और यह भी कहा :" किया तुमने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने जो कुछ आकाशों तथा धरती में है उसे तुम्हारे वश में कर दिया है,तथा अपना खुला एवं छुपा पुरस्कार तुम्हारे ऊपर पुर्ण कर दिया है "। { सुरह लुक़मान; 20} और इसी प्रकार एक स्थान पर फरमाया:" यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो तो कभी नहीं कर सकते हो "। इस से सिद्ध हुआ

कि अल्लाह तआला ही रोज़ी देने वाला हैऔर वास्तव में वही दाता है। और वही है जो जीविका को जिसे चाहता है प्रचुर मात्रा में देता है,और जिस से चाहता है रोक लेता है। अतः हम पर अनिवार्य है कि हम रोज़ी उसी से मांगें,और किसी अन्य के समक्ष हाथ न फैलायें, और इसी लिए अल्लाह तआला ने कहा है :" आकाशों तथा धरती में उपस्थित मख़लुक उसी से मांगते हैं "।

और मख़लुक की विवशता तथा निर्धनता का यह प्रमाण भी दिया जाता है कि नबी स॰ अपने मांगने वालों में से किसी को भी धनी नहीं बना सके जो अपनी सख्त ज़रूरत लेकर आप के पास आते थे। हालांकि आप ऐसे नबी थे जिन्को अल्लाह की ओर से पुर्ण समर्थन प्राप्त था और आप अपनी उम्मत पर दयालु भी थे। अतः आप से कमतर किसी अन्य से कुछ मांगना तो प्राथमिकता के साथ ग़लत एवं अवैध है।

कुछ सहाबा तबुक के युद्ध के समय आप स॰ के पास सवारी लेने के लिए आये,लेकिन आप स॰ कोई सवारी उपलब्ध नहीं करा सके। अतः सहाबा पलट कर चले गये और उनकी आँखें आँसु बहाने लगीं,और वह अपनी विवशता पर शोक व्यक्त करने लगे,अतः उनके विषय में अल्लाह ने कहा:" और उन पर भी कोई दोष नहीं जो आप के पास जब आयें कि आप उन के लिए सवारी की व्यवस्था करें,और आप कहें कि मेरे पास इतना नहीं है कि तुम्हारे लिए सवारी की व्यवस्था कर सकूं, तो वह इस दशा में वापिस हुए कि शोक के कारण उनकी आँखें आँसु बहा रही थीं "।{ सुरह तौबा; 92}

और अबु मूसा अशअरी से रिवायत है,कहते हैं :"मैं कुछ अशअरी लोगों के साथ नबी स॰ के पास सवारी मांगने के लिए आया,आप ने कहा: अल्लाह की क़सम मैं आप लोगों को सवारी नहीं दे सकता,और मेरे पास देने के लिए सवारी उपलब्ध भी नहीं है",अबु मूसा अशअरी कहते हैं:" फिर हम रुके रहे जितना अल्लाह ने चाहा,फिर आप के पास ऊँट लाया गया,फिर आप ने हमारे लिए सफेद कोहान के तीन ऊँट देने का आदेश दिया,जब हम चले तो हमने कहा- या हम में से किसी ने किसी से कहा- :अल्लाह हमें बरकत न दे,हम रसूल के पास आये, और सवारी मांगीं तो आप ने न देने की क़सम खाई, फिर आप ने हमें सवारी दी ",लोगों ने आप से कहा तो आप ने फरमाया: वह मैं नहीं हूँ जिस ने सवारी दी है,बल्कि अल्लाह ने तुम्हें सवारी दी है "। {मुस्लिम शरीफ़; 4263}

सारांश

मख़लुक की विवशता के उन पाँच कारणों के आधार पर जो अभी गुज़रा,अर्थात ज्ञान की दृष्टि से विवशता,क्षमता की दृष्टि से विवशता, संचालन की दृष्टि से विवशता,सृजन की दृष्टि से विवशता,शासन की दृष्टि से विवशता,और जीविका की दृष्टि से विवशता,ग़ैरुल्लाह की ओर भक्त का आकृष्ट होना अल्लाह के साथ बुरे गुमान का परिणाम है। अल्लामा इब्ने क़ैयिम का कहना है:" शिर्क अल्लाह के साथ बदगुमानी पर आधारित है,और इसलिए इब्राहीम अ॰ ने अपने मुशरिक शत्रुओं और हरीफों  से कहा:" क्या तुम अपने बनाये पुज्यों को अल्लाह के अतिरिक्त

चाहते हो,तो तुम्हारा क्या विचार है विश्व के पालनहार के विषय में?{सुरह साफफात;86-87} और यदि इसका अर्थ यह हो: ( तुम लोगों का अल्लाह के प्रति क्या गुमान है, वह तुम लोगों के साथ कैसा बर्ताव और व्यवहार करेगा?तुम लोगों को कैसा बदला देगा हालांकि कि तुम लोगों ने उसकी पुजा में अन्य को साझी बनाया और उसके लिए शरीक घोषित किया?),तो आपको इसके अंतर्गत धमकी नज़र आयेगी :( तुमने अपने रब के साथ कौन सी बदगुमानी पाल ली कि उसके साथ अन्य का मिश्रण कर दिया ?)। क्युंकि मिश्रणकारी या तो यह गुमान करता है कि अल्लाह किसी ऐसे शख्स का मुहताज है जो उसके साथ संसार के संचालन में उसका सहायक हो, चाहे वह मंत्री हो,साझी हो अथवा सहायक हो,और यह उस व्यक्तित्व का भयावह अपमान है जो व्यक्तिगत रूप से किसी का भी मुहताज नहीं है,बल्कि सब उसके मुहताज और उसके दर के भिखारी हैं।

या फिर मुशरिक यह विचार रखता है कि अल्लाह तआला की शक्ति उस के सहायक की शक्ति ही से पुर्ण होगी।

या फिर यह सोचता है कि वह अल्लाह को माध्यम और वसीले के बिना नहीं जान पायेगा।

या अल्लाह उस पर दया नहीं करेगा जबतक कि वह मधयस्थ और वसीला उस से दया की प्रार्थना न करे।

या फिर अल्लाह अकेले पर्याप्त नहीं है।

या फिर अल्लाह अपने बंदों के साथ वह नहीं करेगा जो वह चाहता है यहाँ तक कि कोई मधयस्थ उसके पास अनुशंसा करे जैसा कि मनुष्य मनुष्य के लिए करता है,अतः अल्लाह उस अनुशंसा का मुहताज है अपने भक्तों की बात स्वीकार करने के लिए,या फिर अल्लाह उनकी नहीं सुनेगा यहाँ तक कि वह मधयस्थ से विनती करें कि उनकी बातें अल्लाह तक पहुंचाई जायें,जैसा कि दुनिया के बादशाहों के हालात हैं,और यही वास्तव में शिर्क की जड़ और उसकी बुनियाद है।

या फिर यह आस्था रखता है कि अल्लाह तआला उनसे दुर होने के कारण उनकी बातें नहीं सुन सकता,इसलिए किसी के माध्यम से उस तक बात पहुंचाना अनिवार्य है। या फिर यह गुमान करता है कि मख़लुक का अल्लाह पर हक़ है। अतः अल्लाह मख़लुक के हक़ के अनुसार कुछ वितरित करता है, और उस मख़लुक  के माध्यम से हक़ तक पहुंचता है,जैसा कि लोग बुजुर्गों और बड़ों तक पहुंचते हैं उन लोगों के माध्यम से जो बुजुर्गों के महबूब होते हैं और बुजुर्ग उनकी बातें नहीं टालते हैं।

लेकिन यह सब कुछ अल्लाह के सम्मान का अपमान और उसके अधिकार पर आक्रमण है,और यदि उससे अल्लाह से मुहब्बत में कमी,उससे ख़ौफ में कमी, उससे आशा में कमी,उस पर भरोसे  में कमी और उससे प्यार में कमी पैदा होती है तो यह चीज़ भी आस्था को प्रभावित करती है और वंदना के थोड़ा या ज्यादा अंश को किसी और की ओर आकृष्ट करने के कारण उन सब चीजों में कमी आती हैं।

शिर्क एक ऐसा रोग है जो अल्लाह के व्यक्तितव में खामियां पैदा करता है, और जो शिर्क करेगा वह अनिवार्य रूप से अल्लाह के व्यक्तितव में खामी और कमी पैदा करने का मुजरिम होगा,चाहे वह ऐसा चाहे या न चाहे। और इसी लिए अल्लाह की प्रशंसा और उसके ईश्वरीय गुण का तक़ाज़ा है कि किसी मुशरिक को क्षमा न प्रदान करे,और उसे नरक का सदावासी बनाये,और इसी प्रकार उसे धरती का सबसे बुरा आदमी घोषित करे। अतः आप देखेंगे कि एक मुशरिक केवल अल्लाह का अपमान ही करता है,और उसकी शान् को घटाता ही है, यद्यपि वह समझता है कि ऐसा करके वह अल्लाह की इज्जत करता है।{इग़ासतुल्लहफान;पृष्ठ संख्या: 103,कुछ संक्षेप के साथ} और एक स्थान पर अल्लाह तआला ने फरमाया:" वास्तव में जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजते हो वह तुम्हें जीविका देने की क्षमता नहीं रखते हैं। अतः अल्लाह के पास जीविका की खोज करो "।{सुरह अंकबुत;17},सर्वप्रथम अल्लाह ने " रिज़्क " शब्द को नकरह (सामान्य) के रूप में प्रस्तुत किया,फिर उसे विशेषता (मारिफा) के द्वारा वयक्त किया। अतः पहले वाक्य से यह ज्ञात हुआ कि जीविका का कोई भी साधन उन तथाकथित पूज्य के पास उपलब्ध नहीं है,न वह किसी को रोज़ी ही दे सकते हैं यद्यपि थोड़ी ही क्यूं न हो। कुंयकि नकरह जब नकारत्मक रुप में आता है तो वह सामान्य की ओर इंगित करता है,और दुसरे बार " मारिफा" अर्थात विशेषता के साथ लाया जिस से यह आदेश मिलता है कि अल्लाह ही से हर तरह की चीज़ें मांगो, अल्लाह ही है जो जीविका प्रदान करने वाला है,उसके अतिरिक्त किसी अन्य में यह क्षमता नहीं है।

अल्लामा इब्ने क़ैयिम रह॰ का कहना है:" प्रथम उद्देश्य में मख़लुक तुम्हारे लाभ की इच्छा नहीं रखती है,बल्कि वह तो केवल तुम से लाभ प्राप्त करने के विषय में सोचती है। और अल्लाह तआला तुम्हें लाभ प्रदान करने का उद्देश्य रखता है,तुम से लाभ प्राप्त करने की उसकी इच्छा नहीं होती है। और वह लाभ ऐसा होता है जो निष्ठा पे आधारित होता है,उसमें किसी भी कष्ट तथा दुख का मिश्रण नहीं होता है,हालांकि मख़लुक की इच्छा लाभ पहुंचाने की इसके प्रतिकूल होती है;क्युंकि उसमें कष्ट भी होता है चाहे एहसान जतला कर ही हो।

अब इस बात पर विचार करो! इस पर विचार आपको मनुष्यों से आशा रखने की आदत को समाप्त कर दे गा ,और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी अन्य से उम्मीद रखने से रोक देगा। और इस तरह आप न उस से कुछ मांगोगे, न किसी कष्ट को दुर करने की विनती करोगे, न उस से अपने हृदय को जोड़ोगे। क्युंकि मख़लुक तुम से केवल लाभान्वित होना चाहती है,उसका उद्देश्य तुम्हें लाभान्वित करने का नहीं रहता है। और समस्त मानव जाति की एक दूजे के साथ

यही दशा रहती है, और यही दशा पुत्र की पिता के साथ, पति की पत्नी के साथ, ग़ुलाम की

मालिक के साथ, और पार्टनर की पार्टनर के साथ रहती है। अतः इनमें अच्छा और बेहतर वह है जो लोगों के साथ अल्लाह की प्रसन्नता के लिए व्यवहार करता है न कि उनकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए। लोगों पर उपकार करता है अल्लाह के लिए,लोगों के प्रति अल्लाह से डरता है,

और अल्लाह के साथ साथ उन से नहीं डरता है,लोगों पर उपकार करके अल्लाह से बदले की आशा रखता है,और उस आशा में लोगों का मिश्रण नहीं करता है,आदमी से अल्लाह के लिए प्रेम करता है और उस प्रेम में उनहें अल्लाह का शरीक नहीं करता है। जैसा कि अल्लाह तआला के मित्रों ने फरमाया:" हम तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता के लिए सिखलाते हैं, न हम तुम से बदला चाहते हैं और न ही कृतज्ञता "।{सुरह दहर; 9} ( इग़ासतुल्लहफान; 66)

जब हमारे समक्ष मनुष्य की विवशता स्पष्ट होगई तो कैसे उचित होगा कि उन से आवश्यकता की पूर्ति की विनती की जाये,और उस धनवान को छोड़ दिया जाए जिस के पास धरती तथा आकाश का शासन है?

और अल्लाह तआला ने स्वयं को परिभाषित किया है कि वह धनी है, रोज़ी रोटी देने वाला है, पुरस्कार प्रदान करने वाला है, प्रचुर मात्रा में देने वाला है, दानी है, मुहसिन है,लाभदायक है, पनाह देने वाला है, किसी का मुहताज नहीं है, उपकार करने वाला है, उसी से आशा बांधी जाती है, उसी में इच्छा रखी जाती है,वह शक्तिशाली है ,समस्याओं का समाधान करने वाला और आकाश तथा धरती को चलाने वाला है। अतः जो व्यक्ति इस तरह की मख़लुक की ओर केन्द्रित हुआ जिनमें इस प्रकार की विशेषताऐं नहीं हैं और उनसे सहायता की गुहार लगाई, और उस व्यक्तित्व को छोड़ दिया जिसके अच्छे नाम और बड़े काम हैं,तो उसने अपनी बुद्धि को बेच दिया और अपनी इच्छा का ग़ुलाम बन गया।

**तेइसवां कारण: ग़ैरुल्लाह से विनती करने के ग़लत होने की कारणों में से एक कारण यह भी है कि अल्लाह के अतिरिक्त अथवा अल्लाह के साथ जिनकी पुजा की जाती है वह अपने भक्तों के लिए सदा नहीं रहते हैं,बल्कि मिट जाते हैं और मिट्टी का अंश बन जाते हैं। और यही उनकी विवशता का कारण भी है, अतः इस से सिद्ध हुआ कि उनकी पुजा अवैध है, क्युंकि**

**यदि उनकी पुजा उचित और सत्यता पर आधारित होती तो वह अवश्य जीवित रहते। उन नेक बुजुर्गों की क़ब्रें कहाँ हैं जिन की अज्ञानता के युग में लोग पूजा करते थे? वह वृक्ष, पत्थर और पेड़ पौधे क्या हुए जिनसे एक शताब्दी पुर्व लोग बरकत और आशीर्वाद प्राप्त करते थे? वह या तो नष्ट हो गये, या फिर हो जायेंगे,जैसा कि इन से पहले वाले तबाह व बर्बाद हो गये अल्लाह के हुक्म और उसके आदेश से। अल्लाह तआला का फरमान है:" धरती पर उपस्थित सब कुछ नष्ट हो जायेगा, केवल तेरा रब ही बाक़ी रहेगा "।{ सुरह रहमान; 26}**

**और इब्राहीम अ॰ ने भी इस दार्शनिक तर्क की ओर इंगित किया था जब उन्होंने तारों को पूजने वाली अपनी जाति को एकेश्वरवाद का आमंत्रण दिया था, ताकि उन के लिए यह तथ्य स्पष्ट हो जाये कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की भक्ति एवं पुजा अवैध तथा हराम है।अल्लाह तआला का फरमान है:" तो जब उस पर रात छा गयी,तो उसने एक तारा देखा। कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया,तो कहा मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।**

फिर जब उसने चाँद को चमकते देखा तो कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहा: यदि मेरे पालनहार ने मेरा मार्गदर्शन नहीं किया  तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊंगा।

फिर जब प्रातः सूर्य को चमकते देखा तो कहा यह मेरा पालनहार है। यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया तो कहा: हे मेरी जाति के लोगो! नि:संदेह मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम साझी बनाते हो।

मैंने तो अपना मुख एकाग्र होकर उसकी ओर कर लिया है जिसने आकाशों तथा धरती की रचना की है। और मैं मिश्रणकारीयों में से नहीं हूँ। {सुरह अनआम; 76-79}

अतः इन आयतों में इब्राहीम अ॰ ने अपनी जाति को सावधान किया है और इस बात से अवगत कराया है कि जिनको अल्लाह के अतिरिक्त पूजते हो वह सब नष्ट हो जायेंगे और उनमें से किसी को भी शाश्वत जीवन प्राप्त नहीं है। और इस प्रकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस बात को प्रमाणित कर दिया कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी अन्य की भक्ति ग़लत तथा अवैध है।

जहाँ तक अल्लाह की बात है,तो स्पष्ट रहे कि वह जीवित है,संसार का संचालक है,सदावासी एवं शाश्वत है,न वह नष्ट होगा न उसका अंत होगा,जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:" प्रत्येक जो धरती पर है नाशवान है।

तथा शेष रह जायेगा आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का मुख (अस्तित्व) ।{ सुरह रहमान; 27}

अतः अल्लाह ही है जो पूजने योग्य है,शेष की पुजा अवैध है।

चौबीसवां कारण: मुर्दों को पुकारना इस दृष्टि से भी ग़लत है कि क़ुरआन व हदीस स्पष्ट रूप से इस बात को सिद्ध करते हैं कि मुर्दों का इस संसार से बिल्कुल संबंध नहीं है,बल्कि वह यहां की दशा तथा परिस्थितियों से बिल्कुल अंजान तथा अनभिज्ञ हैं,चाहे उनकी आत्मा " इल्लीईन " में हो अथवा " सिज्जीन " में। अतः जिस की परिस्थिति यह हो वह भला किसी की सहायता,या आवश्यकता की पूर्ति कैसे कर सकता है?अल्लाह तआला का फरमान है:" उस से बढ़कर कुपथ कौन होगा जो अल्लाह को छोड़ कर उनको पुकारता है जो अंतिम दिवस तक उसका उत्तर नहीं दे सकते, बल्कि वह तो उसकी प्रार्थना से भी अनभिज्ञ हैं "।

उपरोक्त बातों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मुर्दों को पुकारने वाला वास्तव में किसी को नहीं पुकारता है,बल्कि वह स्वयं को पुकारता है। क्योंकि मुमिन की ज़िन्दगी क़ब्र में उन चीजों का तक़ाज़ा नहीं करती है जिनकी वह सांसारिक जीवन में करती है,अर्थात पांचों त्वचा के द्वारा किसी चीज़ को अनुभव करने की इच्छा। बल्कि वह बरज़ख़ी जीवन में है जो निगाहों से ओझल है और उस जीवन के समान नहीं है जो संसार में होता है,बल्कि वह हर हालत में संसार में हो रहे घटनाओं से अपरिचित है, जैसा कि इन बातों की ओर क़ुरआन व हदीस में संकेत किया गया है।

पच्चीसवां कारण: उन लोगों के कृत्य का दुष्परिणाम एवं नकारत्मक प्रभाव जो मुर्दों अथवा पत्थरों एवं वृक्षों की पुजा करते हैं यह है कि उनकी आस्था बन जाती है कि मृतक लोग श्रेणी एवं सम्मान की दृष्टि से जीवित लोगों से बेहतर हैं,कयोंकि उन लोगों ने मुर्दों को जीवित अवस्था में नहीं पुकारा, लेकिन जब वह इस संसार को छोड़ चले तो उनकी पुजा आरंभ कर दी,और यह धर्म की शिक्षा,अक़्ल तथा समझदारी के भी विरुद्ध है कि मृत व्यक्ति जीवित व्यक्ति से अच्छे हैं। अल्लाह तआला का फरमान है:" अंधे और आँख वाले बराबर नहीं हो सकते,अंधेरा और प्रकाश बराबर नहीं हो सकते,छाँव और धुप बराबर नहीं हो सकते,और जीवित और मृत बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह जिसे चाहता है सुना देता है और आप मुर्दों को नहीं सुना सकते "।{सुरह फातिर; 19-22}

तो खेद है उन जीवित पर जो मृत शरीर के समक्ष शीश नवाते हैं,और उनकी प्रार्थना करते हुए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति चाहते हैं

छब्बीसवाँ कारण: और ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना और उनकी भक्ति के ग़लत होने का एक कारण यह भी है कि जिन की पुजा की जाती है वह प्रलय के दिन अपने भक्तों को रूसवा करेंगे और उन से विरक्ति तथा बराअत का एलान करेंगे, चाहे पुजा के कारण यह अपने भक्तों से राज़ी हों अथवा न हों।अब ईसा अलैहिस्सलाम को देख लें! वह स्वयं ईसाईयों से विरक्ति तथा बराअत का एलान करेंगे जो हमेशा उनको पूजते रहे,जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:" और जब अल्लाह प्रलय के दिन कहेगा: हे मरयम के पुत्र ईसा!क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे

तथा मेरी माता को पूज्य बना लो?वह कहेगा: तु पवित्र है,मुझ से यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ जिसका मुझे कोई अधिकार नहीं है?यदि मैंने कहा होगा तो तुझे उसका अवश्य ज्ञान हुआ होगा।तु मेरे मन की बात जानता है और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तु ही परोक्ष(ग़ैब) का अति ज्ञानी है। मैंने तो उनसे केवल वही कहा था जिस का तु ने आदेश दिया था कि अल्लाह की इबादत करो,जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उनकी दशा जानता था जबतक उनमें था और जब तुने मेरा समय पुरा कर दिया,तो तु ही उनको जानता था। और तु प्रत्येक वस्तु से सूचित है। {सुरह माइदा;116-117}

बल्कि जितने भी आराध्य एवं पूज्य हैं जिन की अल्लाह के अतिरिक्त पुजा की जाती है वह सब प्रलय के दिन अपने भक्तों से छुटकारा हासिल करेंगे, उन पर लानत भेजेंगे, उनका विरोधी बन जायेंगे, बल्कि भक्तों की आशा और उम्मीद के बिल्कुल प्रतिकूल व्यवहार करेंगे ।अल्लाह तआला का फरमान है:" और उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त कई पूज्य बना लिए हैं ताकि वह उनके सहायक हों। ऐसा कदापि नहीं होगा,वह सब उनकी पुजा का इनकार करेंगे और उनके विरोधी हो जायेंगे "।{ सुरह मरयम; 81-82} ,और दुसरे स्थान पर फरमाया :" और उस से अधिक कुपथ कौन होगा जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को पुकारता हो जो प्रलय तक उसकी प्रार्थना स्वीकार न कर सके और वह उसकी प्रार्थना से निश्चिन्त हो।

और जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उनके शत्रु बन जायेंगे और उनकी इबादत का इनकार कर देंगे"।{सुरह अहक़ाफ;5-6}अल्लामा इब्ने कसीर इस आयत की तफसीर में कहते है:" उनहें जितनी उन पुज्यों की आवश्यकता होगी, वह उतना ही उनसे दग़ा करेंगे "।

और अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के विषय में कहा है:" और कहा: तुम ने तो अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों को प्रेम का साधन बना लिया है अपने बीच सांसारिक जीवन में, फिर प्रलय के दिन तुम एक दूसरे का इनकार करोगे तथा धिक्कारोगे एक दूसरे को, और तुम्हारा आवास नरक होगा, और नहीं होगा तुम्हारा कोई सहायक "।{ सुरह अंकबुत; 25}

शैख़ अबदुर्रहमान बिन साअदी रह॰ ने इस आयत की तफसीर में कहा है :" हर पूज्य और पुजारी एक दूजे से दुरी,विरक्ति और अलाहदगी का ऐलान करेंगे, और जब लोगों को प्रलय के दिन एकत्रित किया जाएगा तो वह एक दूसरे के शत्रु और दुशमन बन जायेंगे, फिर पता नहीं तुम लोगों को क्या हो गया है कि ऐसे वयक्तिओं से संबंध स्थापित कर रहे हो जो अपने भक्तों से पृथकता बनायेंगे,उन पर लानत भेजेंगे,और उन सब का आवास- चाहे पूज्य हो या पुजारी- नरक होगा। उनहें कोई नहीं मिलेगा जो अल्लाह की यातना से उनहें मुक्त करा सके, न कोई ऐसा सामने आयेगा जो अल्लाह की सज़ा और उसकी यातना को टाल सके"।

और अल्लाह तआला का फरमान है :" जब यह दशा होगी कि जिस का अनुसरण किया गया वह अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे,और उनके आपस के सभी संबंध टुट जायेंगे "।{ सुरह बक़रह; 166}

शैख़ अबदुर्रहमान बिन साअदी रह • इस आयत की तफसीर में कहते हैं:" और उस समय अंधभक्त लोग संसार में आने की इच्छा वयक्त करेंगे ताकि अपने पुज्यों से विरक्ति एवं पृथकता का ऐलान कर सकें ,और इस लिए भी ताकि शिर्क व मिश्रण को छोड़ कर निष्ठापूर्वक अल्लाह की भक्ति कर सकें,लेकिन उनको अवसर प्रदान नहीं किया जायेगा। क्योंकि समय बीत गया, अब मुहलत और अनुमति का समय नहीं है,बल्कि यह उनकी ग़लतफहमी है। यदि उनको दुबारा भेज दिया जाए तो वह वही करेंगे जिस से उनको रोका गया है। यह तो केवल उनकी बातें हैं और अनुचित अभिलाषाएं हैं,और यह सब कुछ अपने पुज्यों से घृणा, रोष,और क्रोध के कारण है। वास्तव में गुनाह तो उन्ही का है,और इन पुज्यों में सबसे बड़ा इब्लीस है और वही समस्त बुराईयों की जड़ है,और इसके बावजूद वह अपने भक्तों से प्रलय के दिन निर्णय हो जाने के पश्चात कहेगा:" और शैतान कहेगा जब निर्णय कर दिया जायेगा: वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें सत्य वचन दिया था, और मैंने तुम्हें वचन दिया तो अपना वचन भंग कर दिया, और मेरा तुम पर कोई दबाव नहीं था, परंतु यह कि मैंने तुम को अपनी ओर बुलाया और तुम ने मेरी बात स्वीकार कर ली। अतः मेरी निन्दा न करो,स्वयं अपनी निन्दा करो "। {सुरह इब्राहीम; 22}

यद्यपि क़ब्र तथा अन्य वस्तुओं की पुजा करने वालों में से अधिक का तर्क यही है कि यह पूज्य एवं झुटे माअबुद उनहें अल्लाह के क़रीब कर देंगे और उनके लिए अल्लाह के यहाँ अनुशंसा एवं सिफारिश करेंगे, लेकिन वास्तविकता यह है कि वह न उनहें अल्लाह के क़रीब करेंगे, न उनकी अनुशंसा करेंगे, न प्रलय के दिन उनके काम आयेंगे। बल्कि इस के विपरीत वह उनसे विरक्ति तथा बराअत का एलान करेंगे। और उनके निकट होना भक्तों के लिए हानिकारक सिद्ध होगा। अल्लाह तआला का फरमान है: " और जब प्रलय स्थापित होगी तो अपराधी निराश हो जायेंगे,और उनके साझियों में से कोई उनका अभिस्तावक नहीं होगा,और वह अपने साझियों का इनकार करेंगे "। {सुरह रुम;13} ,अल्लामा इब्ने कसीर इसकी तफसीर में कहते हैं: " यानी उनके लिए यह पूज्य एवं झुटे माअबुद अनुशंसा एवं सिफारिश नहीं करेंगे,जिनकी यह निरंतर भक्ति करते रहे,बल्कि वह तो इनकार करेंगे,और उनके साथ भयावह धोखा करेंगे"। और दुसरे स्थान पर अल्लाह का यह फरमान है :" अल्लाह तआला कहेगा: तुम मेरे सामने उसी प्रकार अकेले आ गये जैसे तुम्हें प्रथम बार हमने पैदा किया था। तथा हमने जो कुछ दिया था,अपने पीछे छोड़ आये। और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे अभिस्तावकों को नहीं देख रहे हैं जिन के बारे में तुम्हारा भ्रम था कि तुम्हारे कामों में वह अल्लाह के साझी हैं। निश्चय तुम्हारे बीच के संबंध भंग हो गये हैं,और तुम्हारा सब भ्रम खो गया है "। { सुरह अनआम; 94}

और इसी प्रकार एक स्थान पर अल्लाह तआला ने फरमाया :" और जिस दिन उनको और जिनकी वह अल्लाह के अतिरिक्त वंदना करते थे वह

एकत्रित करेगा, फिर कहेगा: क्या तुम्हीं ने मेरे भक्तों को कुपथ किया है अथवा वह स्वयं कुपथ हो गये? वे कहेंगे: तु पवित्र है। हमारे लिए यह योग्य नहीं था कि तेरे सिवा कोई संरक्षक बनायें,परन्तु तु ने सुखी बना दिया उनको और उनके पूर्वजों को यहाँ तक कि वह शिक्षा को भुल गये,और वह थे ही विनाश के योग्य।

उनहोंने तो तुम्हें झुटला दिया तुम्हारी बातों में,तो तुम न यातना को फेर सकोगे और न अपनी सहायता कर पाओगे। और जो भी तुम में से अत्याचार करेगा हम उसे घोर यातना चखायेंगे "

{ सुरह फ़ुरक़ान; 17-19},अल्लामा इब्ने कसीर रह॰ का इस आयत की तफसीर के विषय में कहना है:" उनलोगों ने तुम्हारी बातों को झुटला दिया,अर्थात: उन पुज्यों ने तुम्हें झुटला दिया जिन्को तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर पूजते रहे,और तुम्हारी इस आस्था को भंग कर दिया कि वह तुम्हारे अनुशंसक और सिफारिशी हैं,और तुम्हें अल्लाह के क़रीब करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे। और न वह तुम्हारे लिए किसी यातना को दुर करने की क्षमता रखते हैं, न वह स्वयं की सहायता कर पायेंगे।

और शैख़ अमीन शंक़ीती रह॰ ने कहा है:" अल्लाह तआला ने इस आयत में वर्णित किया है कि वह प्रलय के दिन नास्तिकों एवं काफिरों को एकत्रित करेगा, और उनको भी इकट्ठा करेगा जिन्हें यह अल्लाह को छोड़ कर पूजते रहे, अर्थात सब को जमा करेगा, फिर उन माबुदों से कहेगा: क्या तुमने मेरे इन भक्तों को कुपथ कर रखा था?क्या तुमने उनहें बहका रखा था कि वह मुझे छोड़ कर तुम्हारी अर्चना तथा पुजा

करें,या फिर वह स्वयं गुमराह हो गये थे? अर्थात, उन लोगों ने कुफ़्र किया, और वह मुझे छोड़ कर स्वयं ही तुम्हारी पुजा करने लगे, हालांकि न तुम ने उनहें आदेश दिया था, न उनहें बहकाया था?

इस पर वह पूज्य कहेंगे: तु पवित्र है,तु हर तरह के मिश्रण तथा शिर्क से पाक है,और उन चीजों से भी बरी है जो तेरे सम्मानित वयक्तित्व के लिए उचित नहीं है। " और हमारे लिए यह उचित नहीं है कि तेरे अतिरिक्त किसी को संरक्षक बनाये " अर्थात, मख़लुक में से किसी के लिए भी उचित नहीं है कि तेरे अतिरिक्त किसी अन्य की भक्ति करें,न हम करें,न वह करें,बल्कि हम ने इस मिश्रण की ओर आमंत्रण भी नहीं दिया है,यह तो इन लोगों ने अपनी ओर से किया है,हम उन से बरी हैं,अलग हैं और स्वतंत्र हैं,और उनकी पुजा से भी हमारा कोई संबंध नहीं है। फिर आगे कहा:" लेकिन तुम ने उनको और उनके पूर्वजों को ढील दे दी", अर्थात उनकी आयु बढ़ा दी,यहाँ तक कि वह तेरे रसूलों पर अवतरित संदेशों और आकाशीय पुस्तकों को भुल गये जिन में एकेश्वरवाद की शिक्षा तथा तेरी ही भक्ति का आमंत्रण था। और विनाश और तबाही के शिकार हुए। इब्ने अब्बास का कहना है:" वह नष्ट और तबाह हुए "।

और हसन बसरी और मालिक ने ज़ुहरी से वर्णित किया:" उनमें कोई भलाई और लाभ नहीं है "। और अल्लाह तआला ने माबुदों के अपने भक्तों से दुरी के विषय में कहा है:" और जिस दिन वह उनहें पुकारेगा,तो कहेगा: कहाँ हैं मेरे साझी जिन्हें तुम समझ रहे थे?तो वह कहेंगे जिन पर यह बात सिद्ध हो चुकी है:" हमारे पालनहार! यही हैं जिन्हें हमने

बहका दिया,और हमने इन्हें बहकाया जैसे हम बहके,और तेरे समक्ष हम उनसे अलग हो रहे हैं,यह हमारी पुजा नहीं कर रहे थे"। { सुरह क़ससः 62-63}

अल्लामा इब्ने कसीर इसकी तफसीर में कहते हैं:"अल्लाह तआला उन शब्दों के विषय में सूचना देते हुए कहता है जिनके माध्यम से वह काफिरों तथा मुशरिकों को फटकार लगायेगा,अतः अल्लाह कहेगा: वह मेरे साझी कहाँ हैं जिन्हें तुम समझ रहे थे? अर्थात वह मूर्तियां, बुत और तथाकथित पूज्य कहाँ हैं जिन्हें तुम पूजते थे, क्या वह तुम्हारी अथवा स्वयं की रक्षा कर पायेंगे?

और अल्लाह तआला का यह कहना:" और वह लोग जिन पर बात सिद्ध हो चुकी है कहेंगे " का भावार्थ है कि शैतान,मरदुद और कुफ़्र के आमंत्रणकारी कहेंगे: हे रब! हमने इन्हें बहकाया जैसे हम बहके,हम उन से विरक्ति का ऐलान करते हैं,यह हमारी पुजा नहीं कर रहे थे। वह स्वयं गवाही देंगे कि उनहों ने अपने अनुयायियों को पथभ्रष्ट किया,फिर स्वयं ही कहेंगे कि इन लोगों ने हमारी पुजा नहीं की थी। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:" उन लोगों  ने अल्लाह को छोड़ कर कई पूज्य बना लिए हैं ताकि वह उनके सहायक हों, कदापि नहीं! वह उनकी पुजा का इनकार करेंगे और उनके विरोधी हो जायेंगे।

अल्लामा इब्ने क़ैयिम रह॰ का कहना है:" बंदों का मख़लुक पर भरोसा करना और उनपर तकिया करना एक तरह से हानि का कारण बनता है, बल्कि यह तो उनकी आशा के विपरीत होता है। अतः जहाँ से सहायता

की आशा रखता है वहीं से रुसवाई का सामना करता है। और जहाँ से प्रशंसा की उम्मीद रखता है वहीं से आवश्यक रूप से निन्दा का पात्र बन जाता है,और यह बात जिस तरह क़ुरआन व हदीस से प्रमाणित है उसी प्रकार अनुभव,परीक्षण एवं तजर्बा से सिद्ध है,अल्लाह तआला का फरमान है:" उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्य बना लिए ताकि उन्हें अपना संरक्षक बनायें,कदापि नहीं! वह उनकी पुजा का इनकार करेंगे और उनके विरोधी हो जायेंगे "। {सुरह मरयम;81-82}और इसी प्रकार अल्लाह तआला ने कहा:" और उनहोंने अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से पूज्य बना लिए,ताकि वह उनकी सहायता करेंगे। वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे,तथा (यातना) में वह उनकी उपस्थित सेना रहेंगे"।{सुरह यासीन ;73-74},अर्थात वह उन से घृणा वयक्त करेंगे, और उन से युद्ध करेंगे,जैसा कि फौजी क्रोधित होते हैं और अपने मित्रों की ओर से युद्ध करते हैं,हालांकि वह उनकी सहायता नहीं कर सकेंगे,बल्कि वह खुद उनपर बोझ होंगे। और अल्लाह तआला का फरमान है:" और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया,परंतु उनहोंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया। तो उनके वह पूज्य जिन्हें वह अल्लाह के अतिरिक्त पुकार रहे थे,उनके कुछ काम न आये जब आप के पालनहार का आदेश आ गया,और उनहोंने उनको हानि पहुंचाने के सिवा कुछ भी नहीं किया"। {सुरह हुद;101},और दुसरे स्थान पर फरमाया:" अतः आप अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को मत पुकारो अन्यथा आप दंडितों में से हो जाओगे "।{ सुरह शुअरा; 213} और एक स्थान पर कहा गया है:" अल्लाह तआला के साथ कोई

दूसरा पूज्य न बना लो,अन्यथा बुरा और असहाय होकर रह जाओगे"। {सुरह बनी इसराईल;22}

,वास्तविकता यह है कि मुशरिक अपने शिर्क से कभी सहायता की आशा रखता है,कभी प्रशंसा एवं आदर की अभिलाषा रखता है।लेकिन अल्लाह तआला ने सूचित किया है कि मुशरिक की योजना विफल हो जाती है और उसके खिलाफ़ पड़ती है। और उसके पास केवल रुसवाई और अपमान ही आता है। अतः हृदय की भलाई, उसकी सुधार, प्रसन्नता और सफलता अल्लाह की भक्ति और उसकी सहायता चाहने में है। और उसकी तबाही व बरबादी, और उसकी शीघ्र व विलंबित हानि मख़लुक की वंदना और उनसे सहायता चाहने में है"। इग़ासतुल्लहफान:63, कुछ संक्षेप के साथ}

मैं तो कहूँगा: और सत्य कहा है कहने वाले ने ( और जो साझी बनाता हो अल्लाह का तो मानो वह आकाश से गिर गया,फिर उसे पक्षी उचक ले जाय अथवा वायु का झोंका किसी दुर स्थान पर फेंक दे) {सुरह हज्ज;31}

सत्ताइसवाँ कारण: और अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से दुआ करने के ग़लत होने की तर्कों में से एक तर्क यह भी है जिसे अल्लाह ने क़ुरआन में वर्णित किया है कि मुशरिक नरक में जाकर इस बात को स्वीकार करेंगे कि ग़ैरुल्लाह से दुआ करना उनके लिए धोखा और भ्रम था। अल्लाह तआला का फरमान है:" वह कहाँ हैं जिन को तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते थे?वह कहेंगे कि वह हम से खो गये,तथा अपने

ही विरुद्ध साक्षी बन जायेंगे कि वस्तुतः वह काफिर थे "।{ सुरह आराफ; 37}

अट्ठाईसवाँ कारण: वह यह है कि क़ब्र वालों की पुजा तथा उन से विनती से यह समझ में आता है कि वह अल्लाह के समान और उसके बराबर हैं सुनने और जानने की दृष्टि से,और वह इस लिए कि मृतकों को पुकारने के लिए असंख्य लोग एकत्रित हो जाते हैं,और विभिन्न भाषाओं के माध्यम से उनहें पुकारते हैं, नाना प्रकार की वस्तुएं मांगते हैं,विभिन्न स्थानों से आते हैं,विभिन्न समय में आते हैं, और यदि भक्त जन ऐसी आस्था नहीं रखते कि वह दूर और नज़दीक सब की सुनते हैं,और यह कि सारे लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं,तो वह कदापि नहीं उनहें पुकारते। और इस आस्था में उन पुज्यों को अल्लाह के समान घोषित करना है सुनने और देखने की दृष्टि से,और यह पूर्णतः कुफ़्र है। नुऐम बिन हम्माद ख़िज़ाई रह॰ का कहना है:" जिस ने अल्लाह को उसके मख़लुक के साथ तशबीह दी उसने कुफ़्र किया,और जिस ने उन विशेषताओं व गुणों का इनकार किया जिसके साथ अल्लाह ने स्वयं को परिभाषित किया है  उसने भी कुफ़्र किया। और अल्लाह ने स्वयं को तथा अपने संदेष्टा को जिन चीज़ो से परिभाषित किया वह तशबीह नहीं है "।{ज़हबी ने इसे वर्णित किया है पृष्ठ संख्या 464पर}

और लालकाई ने अबदुर्रहमान बिन अबु हातिम से वर्णित किया है, कहते हैं कि इसहाक़ बिन राहवय ने कहा:" जिस ने अल्लाह का गुण बयान किया, और उन गुणों में से किसी भी गुण को उसकी मख़लुक के गुण

**के साथ जोड़ा,तो उसने कुफ़्र किया। क्योंकि वह उसके गुणों का स्पष्टीकरण है,और वह अल्लाह के आदेश के समक्ष माथा टेकना और रसूल के नियम के सामने स्वयं को समर्पित करना है"। शरहु उसुले इतेकादे अहलिस्सुन्नह ; 937}**

**अतः आवश्यक यह है कि अल्लाह तआला को सुनने और जानने की जितने गुण और विशेषता हैं उनमें अल्लाह को एक और अद्वितीय माना जाय, क्योंकि उसके समान कोई भी नहीं है,जैसा कि उसने अपनी किताब के माध्यम से हमें सूचित किया है।**

**उनतीसवाँ कारण: इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सृष्टि आपस में बराबर नहीं होती है,मख़लुक एक समान नहीं होते हैं,तो अपने सृष्टिकर्ता के साथ उनको बराबर घोषित करना कैसे उचित होगा,उन से सहायता चाहना और कठिन घड़ियों में उनकी पनाह हासिल करना जिस प्रकार अल्लाह की पनाह हासिल की जाती है कैसे दुरुस्त होगा?और अल्लाह तआला ने सुरह नहल में इस दार्शनिक तर्क को प्रस्तुत करते हुए कहा है:"अल्लाह तआला ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है: एक पराधीन दास है,जो किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता है,और दूसरा स्वाधीन व्यक्ति है जिसे हम ने अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है। और वह उसमें से छुपे और खुले व्यय करता है। क्या वह दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, बल्कि अधिकतर लोग यह बात नहीं जानते।**

**तथा अल्लाह ने दोनों व्यक्तिओं का उदाहरण दिया है। दोनों में से एक गूँगा है। वह किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता है,वह अपने स्वामी पर**

बोझ है। वह उसे जहाँ भेजता है कोई भलाई नहीं लाता। तो क्या वह,और जो न्याय का आदेश देता हो,और स्वयं सीधी राह पर चलता हो बराबर हो जायेंगे?{ सुरह नहल; 75-76}

अतः इन दोनों आयतों में अल्लाह ने दो उदाहरण प्रस्तुत किये हैं: पहला उदाहरण एक पराधीन दास का है जो किसी भी चीज़ की क्षमता नहीं रखता है, और स्वतंत्र स्वाधीन वयक्ति का है जो अपने माल में से खुले और छुपे हर दो प्रकार से व्यय करता है,क्या दोनों एक समान हो सकते हैं?उत्तर होगा: कदापि नहीं। हालांकि दोनों अल्लाह ही के बंदे हैं।

द्वितीय उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति का है जो गूँगा है,न बोल सकता है न सुन सकता है। और न किसी बात की क्षमता रखता है। अर्थात: न उसके पास थोड़ा माल है न ज़यादा,बल्कि वह अपने मालिक पर बोझ है,यानी स्वयं की ही सेवा से इस दर्जा असमर्थ है कि मालिक ही उसकी सेवा करता है। तो क्या यह और वह जो समझदार है, इन्साफ का आदेश देता है, और खुद सत्य मार्ग पर अग्रसर है, और उसकी बात में सच्चाई और काम में अच्छाई है बराबर हो सकते हैं?उत्तर होगा: बिल्कुल नहीं। जब मख़लुक आपस में बराबर और एक समान नहीं हैं,तो उनहें उनके ख़ालिक के साथ बराबर बनना कैसे समझदारी वाली बात होगी? कैसे उचित होगा कि उन से सहायता प्राप्त की जाय, जैसा कि अल्लाह तआला से प्राप्त करते हैं? और यह भी कैसे स्वीकार्य होगा कि उनके दामन में पनाह ली जाये जैसा कि अल्लाह तआला के यहाँ पनाह लेते हैं,मानो

उनकी विशेषताएं अल्लाह की विशेषताओं और उनकी शक्ति अल्लाह की शक्ति के समान हो? अल्लाह तआला इन बातों से बिल्कुल पाक है।

और कुछ विश्लेषकों का कहना है कि दूसरा उदाहरण वास्तव में अल्लाह और उन तथाकथित पुज्यों का उदाहरण है जिन की अल्लाह के अतिरिक्त पुजा की जाती है। अतः अल्लाह ने उन पुज्यों का जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त पुकारा जाता है- चाहे मुर्ति हो या मृतक- उदाहरण प्रस्तुत किया है उस गुंगे दासी के साथ जो किसी भी चीज़ की क्षमता नहीं रखता है, और अपना उदाहरण प्रस्तुत किया है उस स्वाधीन व्यक्ति के साथ जो इन्साफ का आदेश देता है और सीधी राह पर चलता है। और दोनों उदाहरण सत्यता पर आधारित हैं और उद्देश्य की ओर इंगित करते हैं। और यह अल्लाह और उसके मख़लुक के बीच अंतर का बयान है और मख़लुक का किसी भी प्रकार की पुजा व अर्चना का  हक़ नहीं रखने का ऐलान है,चाहे वह मख़लुक कितनी ही बड़ी क्युं न हो।

और जब अल्लाह तआला इन दोनों उदाहरणों से फारिग़ हुआ तो कहा:" और अल्लाह ही के पास हैं आकाश तथा धरती की निहित बातें"। अतः इस आयत में मुशरिकों के लिए फटकार है जब उन्होंने ऐसे व्यक्तिओं की पुजा शुरू कर दी जो मख़लुक की आवश्यकताओं का कम ज्ञान रखते हैं और उस व्यक्तित्व की वंदना को छोड़ दिया जो आकाश तथा धरती के ग़ैब का जानकार है।

इन बातों का सारांश यह है कि जिस प्रकार आदमी एक बराबर नहीं होता है,बल्कि कोई छोटा कोई बड़ा होता है और सबको एक बराबर नहीं किया

जा सकता है,उसी प्रकार बंदों को अल्लाह के बराबर नहीं किया जा सकता है। और जिस प्रकार जीवित और मृत बराबर नहीं हो सकते हैं उसी प्रकार उन मृत लोगों को अल्लाह के बराबर नहीं किया जा सकता है, न उनसे से कुछ लेने के लिए संपर्क स्थापित किया जा सकता है,न कोई संबंध बनाया जा सकता है, बल्कि मृतकों से आवश्यकता की पूर्ति हेतु गुहार लगाना सबसे बड़ी मूर्खता और परले दर्जे की बेवकूफ़ी है।

तीसवॉ कारण: ग़ैरुल्लाह से विनती करने का दुष्परिणाम यह होता है कि जो इबादत अल्लाह के लिए ही ख़ास है उसका रुख़ ग़ैरुल्लाह की ओर हो जाता है। जैसे भय, इच्छा, आशा, उम्मीद, खुशुअ व ख़ुज़ुअ पर आधारित इबादत जो केवल अल्लाह के लिए है,इसे ग़ैरुल्लाह की ओर मोड़ना। उपरोक्त चीजें इबादत हैं,और अल्लाह ने इन इबादतों को अपने ही लिए सीमित करने का आदेश दिया है,अतः इन इबादतों में से किसी एक को भी ग़ैरुल्लाह के लिए व्यवहार में लाना मिश्रण तथा शिर्क है। अल्लाह तआला का फरमान है:" और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ,और हमारे आगे झुके हुए थे "। {सुरह अंबिया;90},और दुसरे स्थान पर कहा:" अतः जब अवसर मिले तो आराधना में प्रयास करो। और अपने रब की ओर ध्यान मग्न हो जाओ"।{ सुरह शर्ह; 7-8}

और इसी प्रकार दुआ अल्लाह से भय,ख़ौफ और आशा को भी सम्मिलित है जो अल्लाह के पास है।और यह भी इबादत है जिसका अल्लाह ने आदेश दिया है और इस के पालनकर्ता की प्रशंसा करता है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है:" मुझ ही से डरो यदि तुम मुमिन हो "।

{सुरह आले इमरान: 175},और दूसरी जगह फरमाया:" और उसकी कृपा की आशा करते हैं "। { सुरह इसरा:57}

अतः इन इबादतों का दुआ का अभिन्न अंग होना इस बात की ओर इंगित करता है कि दुआ केवल अल्लाह के लिए ही होनी चाहिए, और उसका कोई भी अंश ग़ैरुल्लाह की ओर नहीं मोड़ना चाहिए।

इकतीसवाँ कारण: और मख़लुक से दुआ करने के ग़लत होने की तर्कों में से एक तर्क यह भी है कि संदेष्टा और जो उनके सत्य एवं निष्ठावान अनुयायी हैं वह बिल्कुल पसंद नहीं करते हैं कि लोग इबादत तथा दुआ का कोई भी अंश उनकी ओर फेरें।न उनके जीवन में न उनके मरणोपरांत। न उन से दुआ करें, न उन से विनती करें, न उन के लिए बली चढायें, न उनके लिए नज़र् मानें, न उनके लिए सजदह करें और न इबादत से संबंधित कोई अन्य काम। और उसके उदाहरणों में से एक यह भी है कि जब मआज़ बिन जबल मुल्के शाम से वापिस आये तो अल्लाह के रसूल के लिए सजदह करने लगे,आप स॰ ने पुछा कि यह क्या है मआज़?तो उनहोंने उत्तर दिया:"जब मैं शाम गया तो देखा कि शामवासी अपने सरदारों और धार्मिक गुरूओं के समक्ष शिश नवाते हैं,तब मैंने हृदय में ठान लिया कि हम भी आपके साथ ऐसा ही करेंगे "। इस पर आप स॰ ने कहा:" तुम लोग ऐसा मत करो! क्योंकि यदि मैं किसी को ग़ैरुल्लाह के लिए सजदह का आदेश देता, तो पत्नी को आदेश देता की अपने पति को सजदह करे "।{ इब्ने माजा शरीफ़; 1853}

और ऐसा अधिकतर नबी स॰ के समक्ष हुआ और आप पुरी सख़्ती के साथ इस हरकत की निन्दा करते रहे "।{ दारमी शरीफ़; नमाज़ की किताब, तिरमिज़ी शरीफ़;हदीस संख्या,1159} और अंबिया के उन लोगों से जो उनकी पुजा तथा आराधना करते हैं क्रोध और घृणा के उदाहरणों में से एक उदाहरण वह है जिस को अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम के संबंध में वर्णित किया है:" और जब अल्लाह (प्रलय के दिन) कहेगा;हे मरयम के पुत्र ईसा! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे तथा मेरी माता को पूज्य बना लो?वह कहेगा: तु पवित्र है, मुझ से यह कैसे संभव है कि ऐसी बात कहूँ जिसका मुझे कोई अधिकार नहीं?यदि मैंने कहा होगा,तो तुझे उसका अवश्य ज्ञान हुआ होगा। तु मेरे मन की बात जानता है और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तु परोक्ष(ग़ैब) का अति ज्ञानी है। मैंने तो उनसे केवल वही कहा था जिस का तु ने आदेश दिया था कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है "।{ सुरह माइदा; 116-117}

और इधर हज़रत अली को देखिये! कुछ ज़िन्दीक़ों

को उनके पास लाया गया- ज़िन्दीक़ वह लोग हैं जिन्होने हज़रत अली की शान् को बढ़ा चढ़ा कर पेश किया,यहाँ तक कि उनकी पुजा करने लगे- तो हज़रत अली ने उनहें आग में जलाने का आदेश दिया "। {फतहुल बारी;6922},अल्लामा इब्ने तैमिया ने हज़रत अली के उस व्यवहार पर जो उनहोंने ज़िन्दीक़ों के साथ किया और उन हदीसों पर जो नबी स॰ कि तरफ से अतिशयोक्ति और मुबालग़ा करने वालों पर फटकार के विषय

**में आई हैं,तालीक़ चढ़ाते हुए कहा :" यह संदेष्टाओं और अल्लाह के भक्तों की शान् है, और इस शान् में अतिशयोक्ति और मुबालग़ा आराई अनुचित ढंग से वही कर सकता है जो धरती पर अहंकार को पसंद करता हो और फितना व फसाद फैलाना चाहता हो,जैसे फिरऔन,उसकी विशेषता रखने वाले लोग और पथभ्रष्टता और गुमराही के वह सरदार जिनका उद्देश्य धरती में अहंकार स्थापित करना,फसाद फैलाना,फितना का बीज बोना,नबियों और वलियों के विषय में भ्रम पैदा करना,उनहें अपना पूज्य बनाना और उनकी पुजा में अन्य को मिश्रित एवं सम्मिलित करना है "। {मजमुउल फतावा;27/81} और इमाम बैहक़ी ने " दलाइलुन्नबूव्वत" के अंदर इब्ने अब्बास से रिवायत किया है,कहते हैं:"अबु राफे क़ुरज़ी ने कहा जिस समय उसके पास ईसाई तथा इसाईयों के महापुरुष और विद्वान एकत्रित हुये,और अल्लाह के रसूल ने उनहें इसलाम का आमंत्रण दिया: हे मुहम्मद! क्या आप चाहते हैं कि हम आप की उसी प्रकार पुजा करें जिस प्रकार ईसाई लोग ईसा बिन मरयम की पुजा करते हैं?**

**एक नजरानवासी ईसाई जिसे रिब्बीस कहा जाता है बोला: हे मुहम्मद! तुम्हारा यही उद्देश्य है और तुम इसी की ओर आमंत्रित कर रहे हो "। तब अल्लाह के रसूल ने कहा: मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ कि मैं ग़ैरुल्लाह की इबादत करुँ अथवा उनकी ओर किसी को आमंत्रित करुँ,न अल्लाह ने मुझे इसके लिए अवतरित किया है न मुझे इसका आदेश दिया है। अतः इस प्रसंग में अल्लाह ने निम्नलिखित आयतों को उतारा:" किसी पुरुष जिस के लिए अल्लाह ने पुस्तक, निर्णयशक्ति और नुबूव्वत दी हो उसके लिए उचित नहीं है कि लोगों से कहे कि अल्लाह तआला**

को छोड़ कर मेरे दास बन जाओ। अपितु तुम अल्लाह वाले बन जाओ। इस कारण कि तुम पुस्तक की शिक्षा देते हो। तथा इस कारण कि उसका अध्ययन स्वयं करते रहते हो। {सुरह आले इमरान; 79} ( दलाइलुन्नबूव्वत; 4/5/384)

बल्कि मख़लुक की इबादत में तो मख़लुक ही का अपमान है,कयोंकि उनहें उचित स्थान से उठाकर अनुचित स्थान पर पहुंचा दिया गया। आप का उस आदमी के विषय में क्या विचार है जो अपने मित्र से कहता है: आप हमारे शासक एवं स्वामी हैं! निश्चित रूप से वह मित्र महसूस करेगा कि उसका दोस्त उस से मज़ाक़ कर रहा है और उसकी शान् घटा रहा है। इसी प्रकार वह व्यक्ति जो बुजुर्गों की पुजा करता है, वास्तव में उनकी इज्ज़त घटा रहा है, और उनका अपमान कर रहा है। और उनका सम्मान केवल वही करता है जो उनका अनुसरण और उनकी शिक्षा का पालन करता है पुण्य कार्य करने में और उनके लिए दुआ करने में।न कि वह व्यक्ति उनका सम्मान करने वाला माना जायेगा जो उनकी पुजा करेगा,और उनहें रब का दर्जा देगा। और अल्लाह की ज़ात इन चीजों से बरी और पवित्र है।

बत्तीसवाँ कारण : और वह यह है कि नबी स॰ अपनी प्रशंसा तथा सम्मान में अतिशयोक्ति करने से लोगों को रोकते थे। अतः उसकी क्या स्थिति होगी जो आपको अथवा आप के अतिरिक्त किसी अन्य को अल्लाह की इबादत में मिश्रित एवं शरीक करता हो

अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि उनहोंने उमर रज़॰ को मिम्बर पर कहते हुए सुना: मैंने नबी स॰ को फ़रमाते हुए सुना: मेरे प्रति अतिशयोक्ति मत करो जैसा कि ईसाईयों ने इब्ने मरयम के विषय में किया। मैं उसका बंदा हुँ, अतः मुझे अल्लाह का बंदा तथा उसका संदेष्टा कहो "।{बुख़ारी शरीफ़; 2445}

बल्कि नबी स॰ अतिशयोक्ति तथा मुबालग़ा के छोटे से छोटे प्रकार से भी रोकते थे, क्योंकि नबी स॰ ने जब बैठ कर नमाज़ पढ़ाई, तो आप के सहाबा ने आप के पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ी,इस पर आप स॰ ने उनहें मना किया,और कहा: तुम अभी वह काम कर रहे थे जो रोम और फारस वाले करते हैं, वह अपने बादशाहों के समक्ष खड़े होते हैं और बादशाह बैठे रहते हैं। तुम ऐसा मत करो "।{मुस्लिम शरीफ़;928}इस हदीस में हम देखते हैं कि इमाम के बैठने की स्थिति में नबी स॰ मुक़तदियों को भी बैठने का आदेश देते हैं,हालांकि ऐसा करने से नमाज़ के रुक्न में ख़लल पड़ता है। लेकिन नबी स॰ ने इस से रोका ताकि काफिर जो अपने विद्वानों और पूर्वजों के साथ सम्मान की दृष्टि से जो व्यवहार करते हैं उसकी समानता से मुसलमान सुरक्षित रहें। जब बात ऐसी है तो फिर किसी मृत व्यक्ति को इबादत में शरीक करना कैसा होगा?

और हज़रत अनस रज़॰ से वर्णित है,कहते हैं:" सहाबा के नज़दीक नबी स॰ से अधिक कोई प्यारा औरा महबूब नहीं था,और आगे कहते हैं: और वह जब नबी स॰ को देखते थे तो खड़े नहीं होते थे, क्योंकि उनहें पता था कि आप इस व्यवहार को पसंद नहीं करते हैं "।{ तिरमिज़ी शरीफ़;

2754}, तो जब नबी स॰ अपने लिए सम्मान और आदर की दृष्टि से खड़ा होने से रोक रहे हैं,फिर किसी को आप से दुआ करते हुए देख लें जैसा कि लोग अल्लाह से करते हैं, तो उस पर क्या प्रतिक्रिया वयक्त करेंगे? और अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर रज़॰ से वर्णित है, कहते हैं:" मैं बनु आमिर के कारवां के साथ रसूल स॰ के पास गया, फिर हम बोले: आप हमारे सरदार हैं ,आप ने कहा: सरदार अल्लाह है जो अति सम्मानित एवं प्रतिष्ठित है"। तो हमने कहा: आप हमारे उत्तम लोगों से भी उतम हैं और बड़ों से भी बड़े हैं "। तो आपने कहा: तुम जो कहते हो वह कहो, या उसी में से कुछ कहो, और तुम्हें शैतान कहीं मेरे प्रति बहका न दे "। {अबु दाऊद शरीफ़: 4806}अतः इस हदीस और इसी प्रकार की अन्य हदीसों में हम देखते हैं कि नबी स॰ एकेश्वरवाद की सीमा की रक्षा तथा अनेकेशवर के मार्गों पर बंध बांधते आ रहे हैं, क्योंकि आपने अपने साथियों को अपनी उस प्रशंसा से भी रोक दिया जो आप के लिए उचित थी, जैसे आप मनुष्यों के सरदार हैं,और लोगों मे उत्तम और श्रेष्ठ हैं,लेकिन जब इस तारीफ और प्रशंसा से आप के व्यक्तित्व में अतिशयोक्ति और ग़ुलु की आशंका थी तो आप ने इस से मना कर दिया,और इस व्यवहार की गणना शैतान के बहकावे में किया जो आदम की संतान को बहकाता है।और इस में हमारे लिए तर्क की बात यह है कि जब नबी स॰ की शान् में अतिशयोक्ति और ग़ुलु धर्म के विपरीत है,तो फिर आप को तथा किसी अन्य को सहायता के लिए पुकारना तथा दुआ करना प्राथमिक रूप से अवैध होगा। क्योंकि मख़लुक से दुआ उसकी बढ़ा चढ़ा कर प्रशंसा करने

से भी बड़ा ग़ुलु और अतिशयोक्ति है, बल्कि वह तो अतिशयोक्ति और ग़ुलु का सबसे बड़ा प्रदर्शन है।

तैंतीसवाँ कारण: और मख़लुक से दुआ करना इस दृष्टि से भी अवैध है कि जिन संदेष्टाओं,बुज़ुर्गों और फ़रिश्तों को पुकारा जाता है वह स्वयं ही अल्लाह के दासी और ग़ुलाम हैं,वह ख़ुद ही पुणित कार्य के माध्यम से अल्लाह का सामीप्य और उसकी निकटता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं,और जो ग़ुलाम हो वह कभी इस बात की क्षमता नहीं रखता है कि उसकी पुजा की जाये,या लोग उसकी क़ुरबत तलाश करें। इस प्रसंग में अल्लाह का फरमान है:" आप कह दें कि उनकों पुकारो जिन को तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूज्य समझते हो,न तो वह तुम से दुख दूर कर सकते हैं और न ही तुम्हारी दशा बदल सकते हैं। वास्तव में जिनको यह लोग पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामीप्य प्राप्त करने का साधन खोजते हैं कि कौन अधिक समीप है?और उसकी दया की आशा रखते हैं। और उसकी यातना से डरते हैं। वास्तव में आप के पालनहार की यातना डरने योग्य है "। { सुरह बनी इसराईल; 56-57}, अर्थात् जिन को तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो चाहे फ़रिश्ते हों, ईसा अलैहिस्सलाम हों या कोई अन्य;यह सब स्वयं ही अल्लाह के आदेशों का पालन करके उस के समीप होने का जतन करते हैं। और हर वह नेकियाँ कर रहे हैं जो उन्हें अल्लाह के निकट कर दें। और आपस में प्रतियोगिता भी कर रहे हैं,ताकि जान लें कि इबादत और भक्ति के माध्यम से अल्लाह के सबसे निकट कौन है?(और उसकी दया की आशा रखते हैं) अर्थात, जिस प्रकार उनके भक्त अल्लाह के दया की आशा रखते हैं उसी

प्रकार यह पूज्य भी रखते हैं।( उसकी यातना से डरते हैं) जैसा कि अन्य लोग डरते हैं। (तेरे रब की यातना डरने योग्य है) अर्थात,अल्लाह इस योग्य है कि उस से उसका बंदा डरे और भयभीत हो,चाहे वह संदेष्टा हों अथवा फ़रिश्ते"। {ज़ुबदतुत्तफसीर में इस आयत की तफसीर देखें}

और नबी स॰ हमेशा इस आस्था पर ज़ोर देते थे कि आप अल्लाह के बंदे और उसके संदेष्टा हैं,ताकि आप के अनुयायी आप की पुजा में लीन न हो जायें। आप अपनी तक़रीर का आरंभ अपने इस कथन से करते थे:" मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई अन्य पूज्य नहीं हैं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद स॰ अल्लाह के बंदे और उसके संदेष्टा हैं। और अल्लाह तआला ने क़ुरआन की विभिन्न आयतों में नबी स॰ को अपना बंदा बतलाया है। अतः अल्लाह कहता है:" पवित्र है वह ज़ात जिस ने रात्रि में अपने बंदे को यात्रा कराई "। और कहा:" और अपने बंदे की ओर वह्य की जितना कि किया "। और एक स्थान पर फरमाया: "और यह कि जब अल्लाह का भक्त खड़ा हुआ उसे पुकारता हुआ,तो समीप था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते "। { सुरह जिन्न ;19}

और यह ज्ञात रहे कि भक्तों की कभी अर्चना एवं पुजा नहीं की जाती है,जिस प्रकार संदेष्टाओं को नहीं झुटलाया जाता है। और जब यह स्थिति नबी स॰ की है,तो स्पष्ट है कि आप से कम मर्तबा वाले की पुजा तो कदापि नहीं की जा सकती है,जैसे औलिया और सालेहीन चाहे क़ब्र में हों अथवा कब्र से बाहर।

चौतीसवाँ कारण: जिन संदेष्टाओं और नेक वयक्तिओं की भक्ति की जाती है वह सब स्वयं ही जीवित लोगों के मुहताज एवं आश्रित हैं। उनकी दुआओं और इस्तिग़फार की उन मृत लोगों को आवश्यकता है। क्योंकि मृतक के नेक कार्य की श्रृंखला समाप्त हो जाती है,जैसा कि आप स॰ ने कहा:" जब मनुष्य मर जाता है तो उस के कार्य की श्रृंखला समाप्त हो जाती है, तीन चीजें हैं जिनका पुण्य प्राप्त होता रहता है: सदक़ए जारीया, या फिर इल्म जिस से लोग लाभान्वित हों, या फिर नेक संतान जो उसके हक़ में दुआ करे। { मुस्लिम शरीफ़; 1631}

अतः यह मुहम्मद साहब हैं- मनुष्य में उत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ और अल्लाह तआला के सबसे करीबी- हमसे अपने ऊपर दरुद भेजने का आह्वान करते हैं,चाहे जीवित हों या मृत,और आप पर दरुद भेजना आप पर रहमत की वर्षा की दुआ करना है। आप स॰ का फरमान है:" जब तुम मुअज़्ज़िन को अज़ान देते हुए सुनो, तो वही शब्द कहो जो वह कहता है,फिर मेरे ऊपर दरुद भेजो,क्योंकि जो मेरे ऊपर एक बार दरुद भेजता है, अल्लाह उस पर इस दरुद के कारण दस रहमतें नाज़िल करता है। फिर मेरे लिए माध्यम(वसीला) का सवाल करो,कयोंकि वह स्वर्ग में एक स्थान है और वह केवल अल्लाह के बंदों में से किसी एक को मिलेगा,और मुझे आशा है कि वह मैं ही हुँ। अतः जिसने मेरे लिए माध्यम को माँगा उसके लिए अनुशंसा अनिवार्य हो गई "।{मुस्लिम शरीफ़; 384}

और इसी प्रकार नबी स॰ ने हमें शिक्षा दी है कि हम आप के लिए तथा आकाश व धरती में उपस्थित समस्त नेक बंदों के लिए अल्लाह तआला

से दुआ करें, जैसा कि " तहियात " के दौरान " तशह्हुद " में दुआ करने का आदेश दिया है। तहियात के शब्दों का अर्थ निम्नलिखित है: सलामती हो आप पर हे नबी! औरअल्लाह की रहमत हो और उसकी बरकत हो, हमारे ऊपर सलामती हो, और अल्लाह के नेक बंदों पर। फिर तशह्हुद के अंत में दरुद पढ़ते हैं जो सबको पता है।

और उसी में से यह भी है कि नबी स॰ ने अपनी उम्मत को उपदेश दिया कि सामान्य स्थिति में मृतकों के लिए रहमत और मग़फिरत की दुआयें करते रहें ,और अंतिम संस्कार (नमाज़े जनाज़ह) में,और विशेष रूप से दफन करने के पश्चात। अबु हुरैरह रज़॰ से वर्णित है,कहते हैं: अल्लाह के रसूल जब जनाज़ह की नमाज़ पढ़ते थे तो इन शब्दों का उच्चारण करते थे: हे अल्लाह हमारे जीवित तथा मृतक को क्षमा कर दे,हमारे उपस्थित तथा अनुपस्थित को, हमारे छोटे तथा बड़ो को,हमारे नर तथा नारी को।हे अल्लाह तु हम में से जिस को भी जीवित रख उसे इसलाम पर जीवित रख, और हम में से जिस को भी मृत्यु दे ईमान पर मृत्यु दे। हे अल्लाह हमें उसके पुण्य से वंचित मत रख,और उसके पश्चात् हमें पथभ्रष्ट मत कर। {अबु दाऊद शरीफ़; 3201}

और हज़रत उस्मान रज़॰ से वर्णित है:" नबी स॰ जब मृतक के दफन से फारिग़ होते तो वहां खड़े हो जाते,और कहते: अपने भाई के लिए क्षमा की प्रार्थना करो, और उस के लिए स्थिरता की दुआ करो, क्योंकि अब उस से प्रश्न पुछा जायेगा "।{ अबु दाऊद शरीफ़; 3221}

जब यह बात सिद्ध हो गई कि मृतक जीवित के मुहताज हैं,तो यह कैसे उचित होगा कि मृतकों से सांसारिक लाभ एवं धार्मिक हित तथा कल्याण की कोई चीज़ मांगी जाये?

35वाँ कारण; और मृतकों से दुआ करना इस दृष्टि से भी अवैध है कि नबी स॰ ने ऐसे वयक्तिओं की प्रशंसा की है जिन्होंने आप से सांसारिक लाभ एवं कल्याण की कोई चीज़ नहीं माँगी। और मांगने वाले पर उसे प्राथमिकता भी दी है। बल्कि बहुतों की तो आपने निन्दा और आलोचना भी की है जिसने आप से उचित चीजों का सवाल किया और आप उसे देने की क्षमता भी रखते थे। बल्कि लोगों को किसी से मांगने से मना करते थे,ताकि उनका प्रशिक्षण और तरबीयत पुरे तौर पर अल्लाह के साथ संबंध स्थापित करने पर कर दें। अतः उस व्यक्ति के विषय में क्या कहा जायेगा जो नबी स॰ अथवा किसी और की ओर सहायता प्राप्त करने के लिए ध्यान केंद्रित करता है जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी क़ादिर नहीं है?

बुख़ारी तथा मुस्लिम में अबु सईद ख़ुदरी से एक रिवायत वर्णित है कि अंसार के कुछ लोगों ने नबी स॰ से कुछ माँगा और आप ने दे दिया,फिर उन लोगों ने माँगा फिर आप ने दिया, फिर माँगा फिर आप ने दिया, यहाँ तक कि आप के पास जो कुछ भी था समाप्त हो गया, फिर आप ने कहा: मेरे पास ख़ैर की जो चीज़ भी होगी वह मैं तुम लोगों से बचा कर नहीं रखुंगा। और जो आदमी सवाल से बचेगा उसे अल्लाह बचायेगा,और जो व्यक्ति धैर्य रखेगा अल्लाह उसे धनवान कर देगा। और

जो वयक्ति धैर्य का प्रयास करेगा अल्लाह उसे धैर्य की तौफ़ीक़ देगा,और किसी भी व्यक्ति को धैर्य से बढ़कर उत्तम  उपहार नहीं दिया गया है "।{ बुख़ारी शरीफ़; 1469/ मुस्लिम शरीफ़; 1053}

और इब्ने मसऊद से वर्णित है, कहते हैं:"अल्लाह के रसूल ने फरमाया: जिस के यहाँ भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हुई, और उसे लोगों के सामने पेश किया, तो उसकी भुखमरी कभी समाप्त नहीं होगी, और जिस के यहाँ भुखमरी आई और उसे अल्लाह के समक्ष रखा,तो संभव है कि अल्लाह उसे जल्द या देर से जीविका प्रदान कर दे:।{तिरमिज़ी शरीफ़ ;2326/अबु दाऊद शरीफ़; 1452}

औफ बिन मालिक अशजई से वर्णित है कहते हैं:" हम नौ,या आठ या सात आदमी नबी स॰ के पास थे,तो आप स॰ ने कहा:तुम लोग अल्लाह के रसूल से बैअत क्युं नहीं करते? हालांकि हम लोग जल्दी ही बैअत किये हुए थे।

हम ने कहा:" ऐ अल्लाह के रसूल हम ने तो आप से बैअत कर ली।

फिर आप ने कहा: क्या तुम लोग अल्लाह के रसूल से बैअत नहीं करोगे?

हम ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल हम ने तो आप से बैअत कर ली।

फिर आप ने कहा: तुम लोग अल्लाह के रसूल से बैअत क्युं नहीं करते?

रावी का बयान है: फिर हम लोग हाथ फैला दिए, और बोले: हमने बैअत कर ली ऐ अल्लाह के रसूल, अब हम किस बात पर आप से बैअत करें?

आप ने कहा: इस बात पर कि तुम लोग अल्लाह की इबादत करोगे, और उस के साथ किसी को साझी नहीं बनाओगे। पाँच समय की नमाज़ पढ़ोगे, और आदेश का पालन करोगे, - और कुछ निहित शब्द भी कहे-, और लोगों से कुछ भी न मांगोगे।

अतः मैंने उनमें से कुछ लोगों को देखा कि उनके कोड़े हाथ से गिर जाते हैं,लेकिन वह किसी से भी उठा कर देने की विनती नहीं करते हैं "।{मुस्लिम शरीफ़; 1043}

और जब हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ की ऊँटनी का नकील गिरा;तो उनहोंने अपनी ऊँटनी को रोका और नकील उठाया,लोगों ने आप से कहा: आपने हमें आदेश क्युं नहीं दिया कि हम उठाकर दे देते? उनहोंने उत्तर दिया:मेरे महबूब मुहम्मद साहब ने मुझे आदेश दिया है कि मैं किसी से कुछ न माँगू "।{ इसे अहमद ने रिवायत किया है;1/11,और मुसनद के शोधकर्ताओं ने उसे " हसन लि ग़ैरिही " कहा है}

छत्तीसवाँ कारण: और ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करना इस दृष्टि से भी अवैध है कि बंदा जितना अधिक एकेश्वरवादी होगा,अल्लाह के समक्ष झुकेगा,और उसका मुहताज होगा,उतना ही ज़्यादा अल्लाह के क़रीब होगा,उसके यहाँ सम्मानित होगा और उसके यहाँ एहतराम का मुस्तहिक़ होगा। अल्लामा इब्ने तैमिया का कहना है:" बंदा जितना ज़्यादा अल्लाह तआला के लिए विनम्रता अपनायेगा, उस पर आश्रित होगा, और उसके सामने शीश नवायेगा, उतना ही अल्लाह के निकट होगा,उसकी दृष्टि में सम्मानित होगा और उसके यहाँ एहतराम का मुस्तहिक़ होगा। अतः मख़लुक में

सबसे बड़ा वह है जो अल्लाह के आगे सबसे ज़्यादा झुकने वाला है,और जहाँ तक मख़लुक की बात है,तो जैसा कि कहा गया है:" जिस के सामने चाहो ज़रुरत बयान करो,तुम उसका ग़ुलाम बन जाओगे,और जिस से चाहो बेनयाज़ी बरतो,तुम उसके बराबर बन जाओगे, और जिस के साथ चाहो उपकार करो, तुम उसका शासक और अमीर बन जाओगे ",अतः प्रतिष्ठा की दृष्टि से मख़लुक में वही व्यक्ति सबसे बड़ा है जो किसी के पास हाथ न फैलाता हो किसी भी चीज़ के लिए। यदि तुम उन पर उपकार करो बिना किसी लाभ और लालच के तो तुम उनके यहाँ बहुत बड़े बन जाओगे,और जब तुम उनकी ओर आवश्यकता की चादर फैलाओगे- चाहे पानी के एक घोंट ही के लिए सही- तो उनकी ओर आवश्यकता के अनुपात में तुम्हारी इज़्ज़त भी उनकी नज़र में घट जायेगी।और यह अल्लाह की बुद्धिमत्ता,चतुराई और उसकी कृपा में से है ताकि दीन पुरे के पुरे तौर पर उसी का हो जाय, और कोई उसके साथ शिर्क न करे "।{मजमुउल फतावा;1/11}

और अल्लामा इब्ने तैमिया ने आगे कहा है:" और कोई भी व्यक्ति जो अपना हृदय मख़लुक के साथ स्थापित करे इस आशा के साथ कि वह उसकी सहायता करेगी,या उसे जीविका प्रदान करेगी, या उसका मार्गदर्शन करेगी; तो उसका हृदय उसी की ओर केन्द्रित हो जाता है, और उसी के हिसाब से उसमें दासता और ग़ुलामी पैदा हो जाती है,यद्यपि ऊपरी स्तर पर उनका अमीर,शासक और उनका संचालक ही क्युं न हो। एक बुद्धिमान व्यक्ति वास्तविकता पर नज़र रखता है, वह चीज़ों के ज़ाहिरी पहलू पर ध्यान केंद्रित नहीं करता।इसी लिए किसी व्यक्ति का दिल जब किसी

औरत पर आ जाये चाहे वह उस के लिए हलाल ही क्युं न हो; उस मर्द का दिल उस औरत का ग़ुलाम बन जाता है,और वह औरत उस पर हकुमत करने लगती है, और जैसे चाहती है मर्द को घुमाती है। हालांकि वह मर्द देखने में उस औरत का सरदार होता है, क्योंकि वह पति होता है, लेकिन वास्तव में वह उस औरत का ग़ुलाम एवं सेवक होता है। विशेषतः जब वह पति की विवशता और उस के साथ अनंत और असीम प्यार का आभास कर ले,और पति के पास उस पत्नि का कोई विकल्प न हो, तो ऐसी स्थिति में मर्द पर ऐसे शासन चलाती है जैसे कोई अत्याचारी शासक अपने पीड़ित नौकर पर चलाता है जो उस शासक से बच निकलने की क्षमता नहीं रखता है। बल्कि सबसे बड़ी बात यह है कि दिल की दासता और ग़ुलामी शरीर की ग़ुलामी से बढ़कर है,और दिल को दासी बनाना शरीर को दासी बनाने से बड़ा है। क्योंकि जिस के शरीर को दास बना लिया गया और उसे चुरा लिया गया,तो कोई फरक़ नहीं पड़ेगा यदि उसका हृदय आराम तथा संतुष्टि की स्थिति में हो,बल्कि वह हर माध्यम अपनायेगा उस से निकलने के लिए। लेकिन जब हृदय- जो बादशाह है- दास बन जाय, और ग़ैरुल्लाह की ओर केन्द्रित हो जाय तो यही रुसवाई और वास्तविक दासता है,और उन चीजों की पुजा है जिसका दिल दासी है"। { मजमुउल फतावा; 10/185-186} और अल्लामा इब्ने तैमिया ने आगे कहा:" और कोई भी हृदय समस्त मख़लुक से बेनयाज़ नहीं हो सकता है,मगर यह कि वह अल्लाह से सहायता प्राप्त करे जो उसका मालिक है, और केवल उसी की इबादत करे, और उसी से मदद की गुहार लगाये, और उसी पर भरोसा करे, और उन्हीं चीज़ों से प्रसन्न

हो जिस से अल्लाह प्रेम करता है और खुश होता है।और उन्ही चीजों से घृणा वयक्त करे जिस से अल्लाह घृणा करता है और नापसंद फरमाता है। और मित्र भी उसी को बनाता है जिस से अल्लाह मित्रता स्थापित करता है और शत्रुता उसी से बनाता है जिस को अल्लाह शत्रु समझता है। और मुहब्बत केवल अल्लाह से करता है। और किसी से घृणा करता है तो अल्लाह के लिए, और किसी को देता है तो भी अल्लाह के लिए, और किसी को देने से इनकार करता है तो भी अल्लाह के लिए। अतः उसके दीन में अल्लाह के लिए निष्ठा जितनी शक्तिशाली होगी,उसकी बंदगी उतनी ही मुकम्मल होगी,और वह मख़लुक से उतना ही बेनयाज़ रहेगा। और अल्लाह तआला की बंदगी में जितना कमाल पैदा होगा,उतना ही अल्लाह तआला उसको अहंकार तथा शिर्क से पाक रखेगा "।{ मजमुउल फतावा; 10/198}

और उपरोक्त बातों से यह ज्ञात हुआ कि ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करने का परिणाम केवल अपमान,रुसवाई,तौहीन और दुनिया तथा आख़िरत की बरबादी होता है। और जो व्यक्ति अल्लाह की बंदगी में निष्ठावान होता है,तो जान ले कि अल्लाह शक्तिशाली है,और वह इस लिए कि अल्लाह तआला ने इसलाम धर्म को नियम के रुप में प्रस्तुत किया ताकि लोगों को मनुष्य की भक्ति से निकाल कर मनुष्य के पालनहार की इबादत की ओर मोड़ दे,और मख़लुक की दासता से मुक्त कराकर ख़ालिक की ग़ुलामी की ओर लाये,और यह सबसे बड़ा सम्मान है। अतः जिसने ग़ैरुल्लाह की इबादत की,उसके समक्ष शिश नवाया, उसे कोई सम्मान नहीं मिलेगा,फिर आख़िरत में वह तबाह होगा जब उसका पूज्य उस से विरक्ति तथा

बराअत का एलान करेगा। और जिस ने अल्लाह की भक्ति की,तो उसने स्वयं को लोगों की ओर से रुसवाई से इस संसार में बचा लिया,और आख़िरत में नजात पाने वालों के साथ वह भी होगा। अतः इबादत के समस्त प्रकारों को अल्लाह के लिए ख़ास करने से दुनिया तथा आख़िरत में सम्मान मिलता है,और कहने वाले ने सत्य कहा है:" जो इज़्ज़त का इच्छुक हो तो जान ले कि सारी इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए है "।{सुरह फातिर;10 ,इस आयत की तफसीर में अल्लामा शंक़ीती के कथन का अध्ययन करें}

और इबादत को अल्लाह के लिए ख़ास करने का दुसरा लाभ यह है कि अल्लाह अपने भक्तों के लिए काफ़ी और पर्याप्त हो जाता है। और वह इस प्रकार है कि बंदा जब अपनी भक्ति में निष्ठावान होता है,तो अल्लाह उसके लिए पर्याप्त हो जाता है,और उसे हर प्रकार की कठिनाई और कष्ट से मुक्त करता है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:( क्या अल्लाह अपने बंदों के लिए पर्याप्त नहीं है),अतः बंदगी में जितनी बृद्धि होगी,उतनी ही अल्लाह की किफायत और बचाव में बढ़ोतरी होगी। और जहाँ तक उन लोगों की बात है जो अपनी आवश्यकता को अपने ही समाम मख़लुक के समक्ष प्रस्तुत करते हैं,तो ऐसे लोग हमेशा मुहताज,निर्धन और आश्रित रहते हैं,उनकी आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो पाती है। और अरबों का यह स्वभाव था कि जब किसी वादी में प्रवेश करते,अथवा किसी विचित्र स्थान पर पहुंचते,तो उस जगह के जिन से पनाह तलब करते ताकि उनहें कोई कष्ट न पहुंचे। जब जिन्नातों ने यह स्थिति देखी, तो उनके भय और डर में और बृद्धि कर डाली, जैसा कि

अल्लाह तआला ने कहा:" और वह यह कि मानव जाति के लोग जिन्नातों के मर्दों से पनाह तलब करने लगे,अतः जिन्नातों ने उनहें और भयभीत किया "। और यह एकेश्वरवाद की तर्कों में से है ताकि दीन पूर्ण रूप से अल्लाह के लिए हो जाय,और उसकी भक्ति में कोई किसी को मिश्रित न करे।

सैंतीसवाँ कारण: और ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करना इस कारण भी ग़लत है कि संदेष्टा लोग इस तरह के लोगों से दूरी बना कर रखते थे,अतः इब्राहिम अ॰ ने अपनी क़ौम से कहा:" और मैं तुम सब को तथा जिन को तुम पूजते हो अल्लाह के सिवा छोड़ता हूँ,और प्रार्थना करता हूँ अपने पालनहार से। मुझे विश्वास है कि मैं अपने रब से प्रार्थना करके असफल नहीं हूंगा"।{सुरह मरयम;48} ,इस आयत में इस बात की ओर संकेत है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सर्वप्रथम उन लोगों से पृथकता की बात कही, फ़िर उनके पुज्यों से दुरी बनाने का एलान किया।

अल्लामा इब्ने कसीर रह॰ ने अल्लाह तआला के इस फरमान( और कौन होगा जो इब्राहीम के धर्म से विमुख हो जाये परंतु वही जो स्वयं को मूर्ख बना ले?) के विषय में कहा है :" अल्लाह तआला काफिरों के शिर्क व बिदअत पर आधारित कार्यों की निन्दा करता है,जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के नियम एवं सिद्धान्त के विरुद्ध हैं,और इब्राहीम अलैहिस्सलाम दीने हनीफ़ के पेशवा हैं,क्योंकि उनहोंने एकेश्वरवाद को अनेकेश्वरवाद से पाक किया।न उनहोंने अल्लाह के साथ किसी को पुकारा,न एक क्षण के लिए अल्लाह की इबादत में किसी को शरीक किया। और अल्लाह तआला के

अतिरिक्त समस्त पुज्यों से विरक्ति तथा बराअत का एलान किया। और इस विषय में अपनी जाति का विरोध भी किया। अतः इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने कहा:" हे मेरी जाति के लोगो! नि:संदेह मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम साझी बनाते हो।

मैंने तो अपना मुख एकाग्र होकर उसकी ओर कर लिया है जिसने आकाशों तथा धरती की रचना की है। और मैं मुशरिकों में से नहीं हूँ "।{सुरह अनआम; 78-79},और एक स्थान पर फरमाया:" और उस समय को याद करो जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने पिता तथा अपनी जाती से कहा :निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो। उसके अतिरिक्त जिसने मुझे पैदा किया है। वही मुझे राह दिखायेगा"।{ सुरह ज़ुखरुफ; 26-27} ,और एक स्थान पर और फरमाया:" और इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिए हुआ कि उस ने उसको इसका वचन दिया था। और जब उस के लिए स्पष्ट हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उस से विरक्त हो गया। वास्तव में इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय वाला और सहनशील था "।{सुरह तौबा;114},और एक स्थान पर और कहा:" वास्तव में इब्राहीम एक समुदाय था,अल्लाह का आज्ञाकारी और एकेश्वरवादी था। और मिश्रणवादियों में से नहीं था। उसके उपकारों को मानता था,उस ने उसे चुन लिया,और उसे सीधी राह दिखा दी। और हम ने उसे संसार में भलाई दी, और वास्तव में वह सदाचारियों में से होगा "। {सुरह नहल; 120-122}

और इसी प्रकार के लोगों के विषय में अल्लाह ने फरमाया:(और इब्राहीम के धर्म से कौन विमुख होगा?)।अर्थात उसके मार्ग से भटकेगा,उसके सिद्धान्त को छोड़ेगा,उसके विरुद्ध जायेगा और उस से मुंह मोड़ेगा ।(परन्तु वह जो मुर्ख होगा) यानी जो अपने नफ्स पर अत्याचार करेगा अपनी मूर्खता तथा ग़लत विचार के कारण। और सत्य को त्याग कर झुट को अपनाने के कारण। यहाँ तक कि वह उस महान व्यक्ति के मार्ग से विमुख होता है जिसे दुनिया में मार्गदर्शन और हिदायत के लिए चयनित किया गया है। जो बचपन से लेकर अल्लाह का मित्र बनने तक इस पवित्र कार्य में संलग्न रहा। और आख़िरत में वह सदाचारियों में से होगा। अतः जो उसके मार्ग से विमुख हुआ, उसके पथ से हटा, और उसकी जाति से दुरी बनाता है, उस से बढ़कर मूर्ख कौन होगा? अथवा इस से बढ़कर अत्याचार और क्या होगा?जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:"वास्तव में शिर्क सबसे बड़ा पाप है "।{तफसीरूल कुरआनिल अज़ीम; सुरह बक़रह:130}

और अल्लाह तआला ने क़ुरआन के दुसरे स्थान पर सुरह कहफ में मुशरिकीन और उनके पुज्यों के मध्य दुरी को बयान किया है,अतः कहफ वालों के विषय में कहा है:" और जब तुम उनसे विलग हो गये, तथा अल्लाह के अतिरिक्त उनके पुज्यों से, तो अब अमुक गुफा की ओर शरण लो, अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी दया फैला देगा, तथा तुम्हारे लिए तुम्हारे विषय में जीवन के साधनों का प्रबंध करेगा "।{ सुरह कहफ; 16},और वास्तव में यही एकेश्वरवाद की हक़ीक़त तथा सत्य विश्वास की पहचान है।

और नबी स॰ को देखिये, जब आप मक्का को प्राजित करते हैं,तो उन समस्त बुतों को तोड़ देते हैं जिन की अल्लाह के अतिरिक्त पुजा की जाती थी, और इसी प्रकार उन मूर्तियों को भी जो काबा के भीतर रखी गई थीं,और जो काबा के परिवेश में थीं इत्यादी। और अल्लाह के रसूल के इस कार्य और मार्गदर्शन का सहाबा ने भी पालन किया।

अड़तीसवाँ कारण: उपकार करने वाले का अधिकार और हक़ यह है कि उसका आभार प्रकट किया जाये,और उसका शुक्रिया अदा किया जाये,और अल्लाह का शुक्रिया केवल उसकी निष्ठापूर्वक इबादत ही से अदा किया जा सकता है,जिस में किसी को भी साझी न बनाया गया हो। जैसा कि मआज़ बिन जबल की हदीस में वर्णित है कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:" अल्लाह तआला का अधिकार बंदों पर यह है कि वह उसकी इबादत करें और उसमें किसी को साझी न ठहराये "।{बुख़ारी शरीफ़; 2856/मुस्लिम शरीफ़30},अतः जिस ने ग़ैरुल्लाह की भक्ति की,उसने उसका आभार प्रकट किया और अल्लाह की अपने ऊपर नेमतों का इनकार किया।

और अल्लाह के नबी यहया बिन ज़करिया अलैहिस्सलाम ने उस मुशरिक का उदाहरण जो इबादत को ग़ैरुल्लाह की ओर मोड़ता है  एक ऐसे व्यक्ति के साथ प्रस्तुत किया है जो परिश्रम करता है,और अनाज को मालिक के अलावा किसी और के सुपुर्द करता है।हज़रत हारिस अशअरी से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल ने हज़रत ज़करिया के विषय में कहा कि उनहोंने ग़ैरुल्लाह की भक्ति करने वालों का उदाहरण प्रस्तुत किया,अतः हज़रत

ज़करिया ने कहा:" उस व्यक्ति का उदाहरण ऐसे व्यक्ति की तरह है जिस ने अपनी शुद्ध संपत्ति सोना अथवा चाँदी के बदले एक ग़ुलाम ख़रीदा, वह ग़ुलाम काम करने लगा और ग़ल्ला अपने मालिक के अतिरिक्त किसी अन्य को देने लगा,तो आप में से किस को अच्छा लगेगा कि उसके पास इस स्वभाव का ग़ुलाम रहे?और यह सत्य है कि अल्लाह ने तुम्हारी रचना की,तुम्हें जीविका प्रदान किया,अतः तुम उसी की पुजा करो और उसकी भक्ति में किसी को मिश्रित न करो "।{तिरमिज़ी शरीफ़;2863}

उनचालिसवाँ कारण: ग़ैरुल्लाह से विनती के अवैध होने और उसे कुफ्रीया अमल होने की तर्कों में से एक तर्क यह भी है कि जब नबी स.के देहान्त के पश्चात् अरब के कुछ व्यक्तिओं ने ज़कात अदा करने से इनकार कर दिया, तो हज़रत अबु बकर ने उनसे युद्ध किया जैसे किसी धर्म से विमुख व्यक्ति से करते हैं। तो भला उस व्यक्ति के प्रति आप की क्या प्रतिक्रिया होती जो इबादत को उसके वास्तविक स्थान से उठाकर अनुचित जगह ले जाता है,अर्थात ग़ैरुल्लाह से दुआ करता है?

अबु हुरैरह रज़ . से वर्णित है,कहते हैं:" जब अल्लाह के रसूल की मृत्यु हुई और अबु बकर सिद्दिक़ ख़लीफ़ा हुए,और अरब के कुछ लोग धर्म परिवर्तन करने लगे( हज़रत अबु बकर उन से युद्ध की योजना बनाने लगे) तो हज़रत उमर ने कहा: आप किस आधार पर लोगों से युद्ध करेंगे,हालांकि अल्लाह के रसूल ने फरमाया है:मुझे लोगों से उस समय तक युद्ध करने को कहा गया है जब तक कि वह इस बात की गवाही

न देदें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है,अतः जो व्यक्ति इन शब्दों का उच्चारण करेगा उसकी जान और संपत्ति मेरी ओर से सुरक्षित रहेगी,परन्तु किसी का हक़ हो ( तो वह लिया जायेगा) और उसका हिसाब अल्लाह के दायित्व में होगा?

तब हज़रत अबु बकर सिद्दिक़ ने कहा: अल्लाह की क़सम मैं उस व्यक्ति से युद्ध करूँगा जो नमाज़ और ज़कात में अंतर करेगा, क्योंकि ज़कात माल का हक़ है, और अल्लाह की क़सम यदि वह उस रस्सी को भी रोक लें जो रसूल स॰ के जीवन में दिया करते थे, तो मैं उसके रोकने पर उन से युद्ध करूँगा। हज़रत उमर ने कहा: अल्लाह की क़सम,सत्य यह है कि अल्लाह ने अबु बकर का सीना खोल दिया है,अब मुझे समझ में आया कि वास्तविकता यही है "।{ बुख़ारी शरीफ़; 1399,1400}

और इसी आधार पर मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब रह॰ ने कहा है:" जब ज़कात का रोकना कलमे का हक़ रोकने जैसा है;तो फिर भला क़ब्रों की पुजा, जिन्नातों के लिए बली,और  वलियों से दुआ इत्यादि जो मुशरिकों का धर्म और आस्था है के विषय में क्या कहा जायेगा?।{अद्दुरर अस्सुन्नीयह;2/48}

चालीसवॉ कारण: इस तथ्य में कोई संदेह नहीं है कि मुर्दों से दुआ करना तथा सहायता हेतु उनकी ओर ध्यान केंद्रित करना संदेष्टाओं की क़ब्रों को भक्ति- स्थान बनाने से भी बड़ा पाप है। और यह नबी स॰ के हवाले से सिद्ध हो चुका है कि आप उन लोगों पर लानत भेजते थे जो अपने संदेष्टाओं की क़ब्रों को सजदहगाह बनाते थे, यानी वहाँ पर नमाज़ पढ़ते

थे, और अल्लाह को पुकारते थे। अतः जो व्यक्ति उन क़ब्रों को सजदहगाह बनाता है, उस में अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ता है और उस जगह पर अल्लाह से दुआ करता है तो मलऊन क़रार पाता है,तो फिर वह व्यक्ति जो वहां के लिए यात्रा करता है, ताकि उस स्थान पर ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करे, उस के समक्ष अपना दुःख व्यक्त करे  और उसके आगे शीश नवाये, तो ऐसा व्यक्ति तो अधिक लानत और अभिशाप का पात्र ठहरेगा। और यह भी एक तर्क है ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करने के ग़लत होने पर।

इक्तालीसवाँ कारण: यह बात उचित नहीं है कि किसी ग़ुलाम के एक से अधिक मालिक हों जो उस पर शासन करते हों। क्योंकि कई मालिकों के आदेश एवं निषेध उसके लिए संदेह तथा दुविधा की स्थिति उत्पन्न कर देंगे। अतः प्राथमिकता की बात यह है कि उसके लिए एक ही मालिक हो जिस की वह सेवा करे,एक ही पूज्य हो जिस की वह पुजा करे। अल्लाह तआला का फरमान है:" अल्लाह तआला ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है एक व्यक्ति का जिस में बहुत से परस्पर विरोधी साझी हैं। तथा एक व्यक्ति पुरा एक व्यक्ति का दास है। तो क्या इस दशा में दोनों समान हो जायेंगे?{सुरह ज़ुमर;29},अर्थात् क्या वह व्यक्ति जिस का एक ही मालिक हो उसी व्यक्ति के समान होगा जिस के कई सरदार हों? इसी प्रकार वह मिश्रणवादी जो अल्लाह के साथ अन्य को साझी बनाता है,और वह निष्ठावान मुसलमान जो केवल अल्लाह ही की इबादत करता है,दोनों बराबर नहीं हो सकते हैं। अतः उसकी तुलना इस से कैसे संभव है?

और जब यह बात स्पष्ट होगई,तो आगे अल्लाह ने कहा:" समस्त प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है "। यानी अल्लाह तआला की प्रशंसा है मुशरिकों पर तर्क को स्थापित करने पर। ( बल्कि अधिकतर लोग नहीं जानते हैं) अर्थात: ज्ञान के अभाव के कारण शिर्क की खाई में गिर गये। {तफसीर इब्ने कसीर; सुरह ज़ुमर,आयत न॰ 29}

बयालीसवाँ कारण:यह सत्य है कि इनसान अपने लिए यह पसंद नहीं करेगा कि उसके ग़ुलामों में से कोई उसकी संपत्ति तथा जायदाद में भागीदार हो, तो फिर वह अल्लाह के लिए कैसे पसंद करता है कि वह अपने बंदों में से किसी को उन चीजों में शरीक करे जिस का वह अकेले मालिक है, और वह उसकी प्रार्थना तथा वंदना है जिस में कोई उसका साझी नहीं है?अल्लाह तआला का फरमान है:"सुन लो! शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिए है "। और दुसरे स्थान पर फरमाया:"और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर जीविका में प्रधानता दी है,तो जिन्हें प्रधानता दी गयी है वे अपनी जीविका अपने दासों की ओर फेरने वाले नहीं हैं कि वह उस में बराबर हो जायें,तो क्या वह अल्लाह के उपकारों को नहीं मानते?{सुरह नहल ;71}और दूसरे स्थान पर कहा:" क्या तुम्हारे दासों में से तुम्हारा कोई साझी है उस में जो जीविका हम ने तुम को प्रदान की है, तो तुम उसमें उसके बराबर हो?{ सुरह रूम; 28}

अल्लामा इब्ने क़ैयिम ने कहा है:" सबसे बड़ा अत्याचार यह है कि बंदा अल्लाह का अधिकार किसी अन्य को समर्पित कर दे,या फिर उस अधिकार में अल्लाह के साथ औरों को भी शरीक करे,और विशेष रूप से वह व्यक्ति

जो शरीक बनाता है जब अपने मालिक का दास तथा ग़ुलाम हो,तो यह और घोर पाप बन जाता है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है:" और उस ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है स्वयं तुम्हारा:क्या तुम्हारे दासों में से तुम्हारा कोई साझी है उस में जो जीविका हम ने तुम को प्रदान की है,तो तुम उसमें उसके बराबर हो,उन से डरते हो जैसे अपनों से डरते हो?इसी प्रकार हम वर्णन करते हैं आयतों का उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं "।{ सुरह रूम; 28} ,अर्थात् जब तुम में से कोई नहीं पसंद करता है कि उस का ग़ुलाम उस की जीविका में साझीदार हो, तो तुम मेरे बंदों में से मेरा शरीक क्योंकर बनाते हो, हालांकि मैं समस्त चीजों का बिना साझी के स्वामी हूँ, और वह स्वामित्व तथा खुदाई है जो मेरे अतिरिक्त किसी अन्य के लिए उचित नहीं है, और न कोई उस का योग्य है?और जिस ने भी ऐसी आस्था रखी, उसने मेरा उचित सम्मान नहीं किया,न मेरे व्यक्तित्व के अनुसार मेरा आदर किया,न मुझे उन चीज़ों में एकता जाना जिस में मैं एकता तथा अद्वितीय हूँ,और सृष्टि में कोई मेरा साझी नहीं है।

और उस व्यक्ति ने भी अल्लाह का उचित आदर नहीं किया जिस ने अल्लाह के साथ-साथ औरों की भी भक्ति की,जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है:" हे लोगो! एक उदाहरण दिया गया है इसे ध्यान से सुनो,जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो,वह सब एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि सब इस के लिए एकत्रित हो जायें। और यदि उन से मक्खी कुछ छीन ले तो उस से वापिस नहीं ले सकते। मांगने वाले निर्बल, और जिन से माँनगा जाय वह दोनों ही निर्बल हैं। उनहोंने

अल्लाह का आदर किया ही नहीं जैसे उसका आदर करना चाहिए। वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है "।{ सुरह हज्ज; 73-74} ( अद्दाअ व अद्दवा;212-213)

फिर आगे कहा:" इस में सूक्ष्म संकेत है उस रहस्य की ओर जिस के कारण शिर्क अल्लाह की दृष्टि में सबसे बड़ा पाप है,और अल्लाह तआला मुशरिक को इस से तौबा किये बिना क्षमा प्रदान नहीं करेगा। और यह बात भी है कि शिर्क के कारण मुशरिक सदैव के लिए नरक में रहेगा। और शिर्क ग़लत केवल इस लिए नहीं है कि अल्लाह ने उस से रोका है,बल्कि अल्लाह के व्यक्तित्व के लिए असंभव है कि अपने अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा के लिए अपने बंदों को अनुमति दे,जिस प्रकार उस के लिए यह संभव नहीं है कि अपनी निपुणता,विशेषता और क्षमता के विरूद्ध कोई बात बर्दाश्त करे। और उस व्यक्तित्व के विषय में यह कैसे गुमान किया जा सकता है जो अपनी प्रतिष्ठा,सम्मान और शासन में अद्भुत एवं अद्वितीय है कि अपनी ज़ात में मिश्रण तथा शिर्कत की अनुमति दे, या उसे पसंद करे? अल्लाह तआला इन चीजों से पूर्णतः पवित्र है:।{ अद्दाअ व अद्दवा; पृष्ठ संख्या: 217- 219}

तैंतालीसवाँ कारण:हृदय का सुधार केवल उसी समय संभव है जब बंदा इबादत के समस्त प्रकार को अल्लाह ही के लिए ख़ास करे, और विशेष रूप से दुआ को अल्लाह ही के लिए ख़ास करना परम् आवश्यक है। और जब बंदा ग़ैरुल्लाह से संबंध स्थापित करेगा और उस से धार्मिक सीमा लांघ कर प्यार करेगा,तो यह व्यवहार और कृत्य उसे हानि

पहुंचायेगा। अल्लामा इब्ने रजब हंबली ने " जामिउल उलूम वल हिकम " में कहा है:" हृदय का सुधार तथा शुद्धता केवल उसी समय संभव है जब उस में अल्लाह की पहचान,उसकी प्रतिष्ठा,उसका प्रेम, उस का भय, उस का डर, उस से आशा और उस पर भरोसा बैठ जाये।और उन चीजों से हृदय को संतुष्टि प्राप्त हो। और यही एकेश्वरवाद की वास्तविकता है,और " लाइलाह इल्लल्लाह " का भावार्थ एवं सारांश भी यही है। हृदय में शुद्धता आ ही नहीं सकती है जब तक कि उस का पूज्य जिस को वह पुजता है, पहचानता है, प्यार करता है और डरता है वह अल्लाह  हो जिस का कोई साझी और सहायक नहीं है। और यदि आकाश तथा धरती में अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य होता,तो इस कारण आकाशों तथा धरती में उपद्रव तथा फसाद पैदा हो जाता। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है:" यदि उन दोनों में अल्लाह के अतिरिक्त अन्य पूज्य होते तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़ गयी होती,अतः पवित्र है अल्लाह,सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो यह बता रहे हैं "।{सुरह अंबिया;22},इस से ज्ञात हुआ कि एक ही साथ दोनों संसार में सुधार उसी समय हो सकता है जबकि धरती वालों की समस्त गतिविधियां अल्लाह ही के लिए ख़ास हो जायें,और शरीर की हरकत दिल और उसकी चाहत की हरकत के अनुसार होती है।अतः यदि हृदय की हरकत और उसकी इच्छा अल्लाह के आदेश के अनुसार होगी;तो वह ठीक और सीधा रहेगा,और शरीर की पूरी गतिविधियां ठीक रहेंगी,और यदि हृदय की हरकत और उसकी इच्छा ग़ैरुल्लाह के निर्देशानुसार होगी,तो वह ख़राब

हो जायेगा,और हृदय की हरकत की ख़राबी के अनुपात में शरीर की हरकत भी असंतुलित हो जायेगी।

अल्लामा इब्ने क़ैयिम रह .ने कहा है:" बंदों का ग़ैरुल्लाह से हृदय जोड़ना हानिकारक है जब उस में निर्धारित सीमा को पार किया जाये। और उस संबंध से अल्लाह के आदेशों के पालन में कोई सहायता न ली जाये। जब खाना,पानी,विवाह और वस्त्र से आवश्यकता से अधिक लाभ उठाया जाये तो यह कष्टदायक और हानिकारक सिद्ध होता है। और यदि कोई ग़ैरुल्लाह से असीम प्यार करने लगे,तो यह अनिवार्य रूप से उसे कष्ट पहुंचायेगा और उस से दुरी बनायेगा,और यदि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए महब्बत करे तो उसकी यह महब्बत उसे हानि पहुंचायेगी,और महबूब के कारण या तो दुनिया और या आख़िरत में यातना से दो-चार होगा। और अधिक संभावना तो यह है कि दोनों जगह उसे यातना दी जायेगी। अल्लाह तआला का फरमान है:" और जो लोग सोना- चाँदी एकत्रित कर के रखते हैं और उस मे से अल्लाह की राह में दान नहीं करते हैं,उनहें दुखदायी यातना की शुभ सूचना सुना दो । जिस दिन उसे नरक की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उस से उनके माथों तथा पार्शवों और पाठों को दाग़ा जायेगा, यही है जिसे तुम एकत्रित कर रहे थे, तो अब अपने संचित किये धनों का स्वाद चखो "।{ सुरह तौबा; 34-35} और दूसरे स्थान पर कहा:" अतः आप को उनके धन तथा उनकी संतान चकित न करे। अल्लाह तो यह चाहता है कि उनहें इनके द्वारा सांसारिक जीवन में यातना दे, और उनके प्राण इस दशा में निकले कि वह काफिर हों "।{ सुरह तौबा;55}

चौवालीसवाँ कारण: और मख़लुक से दुआ करना इस दृष्टि से भी अवैध है कि जो लोग ऐसा करते हैं वह न तो अपने कार्य के प्रति निश्चित होते हैं,और न उस पर स्थिर रहते हैं। बल्कि आप देखेंगे कि विभिन्न पुज्यों के यहाँ चक्कर लगाते रहते हैं। कभी एक मुर्दे को पुकारते हैं तो कभी दूसरे को, और कुछ लोग तो खुशहाली के समय ग़ैरुल्लाह की प्रार्थना करते हैं,लेकिन जब कठिनाई आती है तो अल्लाह को पूरी निष्ठा के साथ पुकारने लगते हैं,और अपने सरदारों तथा माबुदों को भूल जाते हैं जैसा कि पहले युग के मुशरिकीन किया करते थे जिन के विषय में अल्लाह ने फरमाया है:"जब वह कश्ती में सवार होते थे तो पुरी निष्ठा के साथ अल्लाह को पुकारते थे, लेकिन जब अल्लाह उनहें रक्षा प्रदान कर देता तो फिर शिर्क करने लगते "।

और इस नफसानी धोखा से अवगत होने के बावजूद भी वह ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करते रहते थे। और इसका मुख्य कारण अंधभक्ति,निर्धन स्थिति और अल्लाह से कमजोर संबंध का होना था। और यह स्पष्ट है कि जब निर्धन और अभावग्रसत व्यक्ति कमज़ोर ईमान अथवा ईमान से वंचित हो;तो केवल अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु सोचता है,और उसके लिए किसी भी माध्यम को अपनाने से दरेग़ नहीं करता है, चाहे वह माध्यम धार्मिक दृष्टि से उचित हो अथवा अनुचित।

और विभिन्न माबुदों के दर पर उपस्थित होना और विचलित अवस्था में रहना ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना के ग़लत होने का तर्क एवं प्रमाण है। हालांकि जो व्यक्ति निरंतर अल्लाह तआला की इबादत करता है और उसी से

दुआ मांगता है वह इस तरह गुमराही में नहीं फंसता है,बल्कि वह अपने कार्य से संतुष्ट रहता है। अगर अल्लाह ने उसकी विनती स्वीकार कर ली तो सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है कि उस व्यक्ति की इच्छा की पूर्ति हुई,और यदि उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं होती है तो उसके बदले में अल्लाह उसको आख़िरत में नवाज़ता है,या फिर दुनिया में उसकी कोई बला टाल देता है। और अल्लाह के रसूल की एक हदीस भी इस बात का समर्थन करती है:" कोई भी मुसलमान जब दुआ करता है और उसमें पाप तथा संबंध विच्छेद की बात नहीं होती है, तो उस दुआ को अल्लाह तीन रूप में स्वीकार करता है: या तो जल्द उसकी मुराद पूरी कर देता है, या फिर उसे आख़िरत के लिए संचित कर लेता है, या फिर उसी प्रकार की कोई बला उसके सर से टाल देता है।

सहाबा ने कहा: हम अधिक मात्रा में दुआ करेंगे।

आप ने कहा: अल्लाह अधिक देने वाला है"।{ अहमद शरीफ़:3/18, इसकी सनद को विद्वानों ने अच्छी कहा है}

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है एकेश्वरवाद की ओर मार्गदर्शन करने वाली नेमत पर।

शैख़ मुहम्मद अमीन शंक़ीती रह . ने अल्लाह के इस फरमान:" और जब सागर में तुम पर कोई आपदा आ पड़ती है,तो अल्लाह के अतिरिक्त जिन को तुम पुकारते हो उसे भुल जाते हो"।{सुरह बनी इसराईल; 67} की तफसीर में कहा है:" इस आयत में अल्लाह ने स्पष्ट किया है कि काफिरों

को जब सागर में कोई कठिनाई पहुँचती है,अर्थात् उन की सवारी पर हवा का भयावह आक्रमण होता है,और भंवर उनहें चोरों ओर से अपनी चपेट में ले लेता है जैसे कोई पहाड़ खड़ा हो,और वह सोचने लगते हैं कि इस से छुटकारा पाने का अब कोई माध्यम नहीं है। ( उन से गुम हो जाते हैं) अर्थात उनके मस्तिष्क और हृदय से वह सारे पूज्य ग़ायब हो जाते हैं जिन की वह अल्लाह के अतिरिक्त पुजा करते थे,अतः उस भयावह आपदा में केवल अल्लाह ही को पुकारते हैं, क्योंकि उनहें पता होता है कि इस प्रकार की दुखद अवस्था से केवल अल्लाह ही सुरक्षा दे सकता है। और इसी तथ्य को दृष्टि में रखते हुए पुजा और भक्ति को इस हृदयविदारक स्थिति में जो उन पर चारों ओर से व्याप्त होती है अल्लाह ही के लिए ख़ास करने लगते हैं। और जब अल्लाह उनहें रक्षा प्रदान कर देता है,और मार्ग प्रशस्त कर देता है और वह सुरक्षित रुप से थल तक पहुंच जाते हैं तो फिर कुफ़्र वाली उसी अवस्था में लौट जाते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने कहा:" और जब तुम्हें बचा कर थल तक पहुंचा देता है तो मुख फेर लेते हो। और मनुष्य है ही अति कृतध्न "।{सुरह बनी इसराईल; 67}

और इस आयत में वर्णित अर्थ को अल्लाह तआला ने बहुत सारी आयतों में स्पष्ट रुप से बयान किया है ---

फिर अल्लाह तआला ने इस स्थान पर जिस के विषय में हमारा वार्तालाप चल रहा है काफिरों की घटिया सोच और मूर्खता पे आधारित बुद्धि का वर्णन किया है, और यह कि जब वह अपने स्थान पर पहुंच जाते हैं और

समुन्दर की ख़तरनाकी से मुक्ति मिल जाती है तो अपनी कुफ़्र वाली उसी अवस्था में लौट जाते हैं और स्वयं को अल्लाह की यातना से सुरक्षित समझते हैं  हालांकि अल्लाह सक्षम है कि थल तक पहुंचने के बाद उनहें नष्ट कर दे या तो थल के जल से मिले हुए भाग को धंसा करके कि धरती उनहें अपने भीतर दबोच लेया फिर उन पर आकाश से पत्थर की वर्षा करके जो उनहें मृत्यु के घाट उतार दे,या फिर उनहें दोबारा सागर में लौटा कर जिसके बेक़ाबु भंवर उनहें डूबो दे। जैसा कि अल्लाह तआला ने उनकी सुरक्षा और थल तक पहुंचने के बाद कुफ़्र वाली हरकत पर निन्दा करते हुए कहा है:" क्या तुम निर्भय हो गये हो कि अल्लाह तुम्हें थल ही में धंसा दे?अथवा तुम पर पथरीली आँधी भेज दे?फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ।{ सुरह बनी इसराईल; 68} यानी वर्षा अथवा हवा भेज दे जिस में पत्थर हो। और इसी आयत में आगे कहा:" या तुम निर्भय हो गये हो कि फिर उस सागर में तुम को दूसरी बार ले जाये,या तुम पर वायु का प्रचण्ड झोंका भेज दे,उस कुफ़्र के बदले जो तुम ने किया है। फिर तुम अपने लिए उसे नहीं पाओगे जो हम पर इसका दोष धरे"।अर्थात तुम अपने कुफ़्र के कारण तबाही और यातना के भागी होगे। शैख़ अमीन शंक़ीती की बात पुरी हुई।

पैंतालिसवाँ कारण: ग़ैरुल्लाह का भक्त अपने पूज्य से क्षणिक तथा औपचारिक प्रेम करता है,जुंही महब्बत का यह बंधन टूटता है किसी और माबुद की ओर ध्यान मग्न हो जाता है। या फिर उन माबुदों को जब कोई घटना या मृत्यु अपनी चपेट लेती है तो फिर भक्त उन से दुर हो जाते हैं। और जहाँ तक अल्लाह के भक्तों की बात है,तो वह उस से

हमेशा महब्बत करते हैं,बल्कि उनकी महब्बत और अल्लाह से संबंध और प्रगाढ़ और मज़बूत हो जाता है जब वह किसी कठिनाई में फंसते हैं और फंसने के बाद उस से मुक्ति प्राप्त करते हैं। और यह एकेश्वरवाद की तर्कों में से है,और इस के वर्णन का उद्देश्य इबादत को हमेशा अल्लाह के लिए ख़ास और ख़ालिस करने का है।

छयालिसवाँ कारण:यह सत्य है कि सबसे बड़े कार्य जैसे वर्षा नाज़िल करना और अज़ाब को टालना अल्लाह से ख़ालिस विनती के बिना असंभव हैं। अल्लाह तआला का फरमान है:" (हे नबी!) उन से कहो कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप आ जाये अथवा तुम पर प्रलय आ जाये तो क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?

बल्कि तुम उसी को पुकारते हो,तो वह दूर करता है उसको जिस के लिए तुम पुकारते हो,यदि वह चाहे,और तुम उसे भुल जाते हो जिसे साझी बनाते हो "।{सुरह अनआम;40-41},अलबत्ता क़ब्र वालों और उन्हीं के समान अन्य लोगों से प्रार्थना करने से केवल घटिया और तुच्छ चीजें ही प्राप्त होती हैं जिन पर जिन्नात तथा शैतान अधिकार रखते हैं,जो कब्रों के नज़दीक पुकारने वालों की पुकार को सुनते हैं,उस का उत्तर देते हैं और उस से बात करते हैं,ताकि उसे पथभ्रष्ट कर सकें। और इस लिए भी ताकि वह पुकारने वाला यह गुमान करे कि वास्तव में यह क़ब्र वाले ही हैं जो उसकि पुकार का उत्तर दे रहे हैं,या वह अल्लाह तक दुआ पहुंचाने का माध्यम हैं। बल्कि कभी कभी अल्लाह तआला अपने मजबुर और असहाय बंदों की दुआओं का आश्चर्यजनक परिणाम देता है,जैसा कि

हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के लिए हुआ जब उनहोंने अल्लाह से दुआ की कि उनहें बेटा से नवाज़े,हालांकि उस समय उनकी आयु बहुत ज़्यादा थी और उनकी पत्नी भी बाँझ थीं जिन में बच्चा पैदा करने की क्षमता नहीं थी,फिर भी अल्लाह ने उनकी दुआ सुनी।

इमाम बैहक़ी ने " दलाइलुन्नबूव्वत "में हज़रत अनस बिन मालिक से वर्णित किया है कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ • ने एक लश्कर की तैयारी की, और अला बिन हज़रमी को सेना की इस टुकड़ी का सरदार बनाया, जब फ़ौज रास्ते में कहीं पहुंचा तो उनहें सख़्त ठंडी का सामना करना पड़ा, अतः वह भी थक गये और उनकी सवारीयाँ भी।उन लोगों ने पानी की दुआ की,परिणामतः बादल बरस पड़ा,और वह सब सैराब हुए यहाँ तक कि तालाब और घाटियाँ पानी से भर गईं। जब वह अपने शत्रुओं के पास पहुंचे- और उन लोगों ने जज़ीरह की ओर सागर में ख़लीज को पार किया था- अतः वहजज़ीरह पर खड़े हुए, और आवाज़ लगाई: (ऐ महान,ऐ श्रेष्ठ,ऐ सहनशील,ऐ दाता )फिर बोले: (अल्लाह का नाम लेकर घुस जाओ),हज़रत अनस रज़ ने कहा: हम समुन्दर पार कर गये और पानी हमारे मवेशियों के खुर को भी न लगा। हम चुपके से शत्रुओं पर आक्रमण किये,उनहें क़त्ल किये,क़ैदी बनाये और उनके बच्चों और स्त्रियों को हिरासत में ले लिये, फिर ख़लीज पर लोटे। फिर उन्होंने वही शब्द दुहराया, हम ख़लीज पार कर गये और पानी हमारे मवेशियों के खुर को भी न लगा "। { दलाइलुन्नबूव्वत ; 6/53}

उपरोक्त बातों का सारांश यह है कि जितने भी आश्चर्यजनक कार्य,बड़ी सफलता और करामात हैं वह सब अल्लाह ही के एखतयार में हैं ,और वह बिना किसी शिर्कत के उस पर आधिपत्य रखता है, और इन चीजों में से किसी भी चीज़ की प्राप्ति अल्लाह से दुआ के बिना असंभव है।

सैंतालिसवाँ कारण: जो लोग क़ब्र वालों की पुजा करते हैं,उनसे दुआएं करते हैं,बहुत कम ही उन लोगों की दुआएं क़ुबूल की जाती हैं,बल्कि अधिकांशतः रद्द ही कर दी जाती हैं। और यह भी ध्यान रहे कि जो उनकी दुआओं का उत्तर देता है वह अल्लाह ही तआला है,और कभी कभी उनकी दुआओं का उत्तर दे देता है उनहें और पथभ्रष्ट करने के लिए,और उनहें ढील देने के लिए,ताकि गुमराही में और आगे निकल जायें। और यह सज़ा है पहली बार अल्लाह से दुआ करने से कतराने के कारण। और अल्लाह सबसे बेहतरीन हीला और तदबीर करने वाला है। अतः उसका फरमान है:"और वह षडयंत्र रच रहे थे,और अल्लाह अपना उपाय कर रहा था। और अल्लाह का उपाय सबसे उत्तम है "। {सुरह अनफाल;30},और दुसरे स्थान पर फरमाया:"और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटला दिया ,हम उन्हें क्रमशः( विनाश तक) ऐसे ले जायेंगे कि उनहें इस का ज्ञान भी नहीं होगा।और उनहें अवसर देंगे,निश्चय मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है "।{ सुरह आराफ; 181-182}

और जहाँ तक एकेश्वरवादी लोगों की बात है जो केवल अल्लाह ही से मांगते हैं,तो स्पष्ट रहे कि उन की दुआ एक एक करके क़बुल की जाती है। और कोई दुआ असफल नहीं होती है,परन्तु जिस में किसी प्रकार की

कोई रुकावट हो। और यह भी तौहीद की तर्कों में से है,और प्रस्तुत करने का उद्देश्य यह है कि लोग अल्लाह से ही केवल दुआ करें।

अड़तालिसवाँ कारण: और ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करना इस दृष्टि से भी अवैध है कि कुछ काफिर क़ब्रों के पुजारियों को कब्रों के पास दुआ करते हुए और कुछ माँगते हुये देख कर आश्चर्य करते हैं। उनहें क़ब्र वालों के पास हाथ फैलाते देख कर हैरत होती है। शैख़ अबदुर्रहमान बिन क़ासिम ने कहा है:" बहुत सारे यहूदी और ईसाई उन लोगों की निन्दा और तरदीद करते हैं जो इसलाम का दावा करते हैं और कब्रों के पास अवैध कार्य करते हैं, वह कहते हैं: यदि तुम लोगों का संदेष्टा इस का आदेश दिये हैं, तो वह सत्य संदेष्टा नहीं हैं ।और यदि इस से मना किये हैं, तो फिर तुम लोगों ने उनकी नाफरमानी की है, और सामान्य तथा विशेष- बल्कि यहूदी,ईसाई और मिश्रणकारी भी- इस तथ्य को जानते हैं कि मुहम्मद स• को इस संदेश और आदेश के साथ भेजा गया था कि एक अल्लाह की इबादत का आमंत्रण दें। और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा से रोकें और उनकी ख़ुदाई का इनकार करें "।{अस्सैफुल मस्लुल अला आबिदिर्रसुल;11} और अमेरिकी लेखक लोस्रोब स्टुडार्ड जो उन  मूस्तशरिक़ इतिहासकारों में से हैं जिन्हों ने इस्लामी दुनिया के अंदर अठारहवीं शताब्दी में क़ब्र- पुजा और उसकी ओर यात्रा का वर्णन किया है ,इसलामिक दुनिया की सामाजिक स्थिति और राजनैतिक दशा को को बयान करते हुए कहते हैं:" धर्म पर काला परदह पड़ गया ,और जिस एकेश्वरवाद का पाठ अल्लाह के रसूल ने पढ़ाया था उस पर ख़ुराफात और संतवाद की चादर डाल दी गयी, मस्जिदें नमाज़ियों से ख़ाली हो

गयीं, धर्म के अशिक्षित प्रचारकों, और निर्धनों तथा दरवेशों का एक बड़ा समूह पैदा हो गया,जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रस्थान करता रहता है। उनकी गरदनों में तावीज़,जादुई मालाएं तथा तस्बीह के दानें हुआ करती हैं। और ग़लत तथा गुडमुड चीजों के माध्यम से लोगों को भ्रमित करते हैं। और लोगों को औलिया की क़ब्रों की ओर यात्रा का आमंत्रण देते थे,और क़ब्रों में मदफुन मृतकों से अनुशंसा के लिए लोगों को उभारते थे। और सत्य तो यह है कि लोगों के हृदय से क़ुरआन का महत्व निकल चुका था। परिणामस्वरूप वह हर स्थान पर शराब,अफीम और मादक पदार्थों का सेवन करते थे,और बुराइयाँ भी समाज में व्याप्त हो चुकी थीं। और हया की चादर उतार कर और अल्लाह तआला का ख़ौफ दिल से निकाल कर गुनाह का कार्य किया जा रहा था। और सामुहिक रूप से देखा जाय तो मुस्लिम ग़ैरमुस्लिम में परिवर्तित हो गया था। और इतना गिर चुका था कि न वहां सुकून था न संतुष्टि। और यदि संदेशवाहक स• उस समय धरती पर वापिस आते और इसलाम की स्थिति को देखते ,तो बहुत नाराज़ होते और उन लोगों पर लानत भेजते जो लानत-मलामत के योग्य हैं,जैसा कि धर्म से विमुख वयक्तिओं और मुर्तीपुजकों पर भेजते थे "।{ हाजिरुल आलिमिल इस्लामी; 1/259-60 ,संक्षेप के साथ}

और शैख़ अब्दुल्लाह अबाबतीन ने कहा है:" हमने बहुत सारे यहूदियों से सुना है कि वह मुसलमानों की निन्दा करते हैं क़ब्रों और मज़ारों पर अधर्म कार्य करने के कारण। वह कहते हैं: अगर तुम्हारे नबी ने इस बात का आदेश दिया है तो वह नबी नहीं है,और यदि उसने मना किया है, तो

**फिर तुम लोग उस की शिक्षा की अवहेलना कर रहे हो। अल्लाह पवित्र है, कितनी विचित्र बात है!**

**यहूदी लोग शिर्क पे आधारित इन कार्यों की निन्दा करते हैं,और कहते है:" कोई नबी इस तरह की बात लेकर अवतरित नहीं हो सकता है,लेकिन विडंबना यह है कि आज क युग के  बहुत सारे धार्मिक गुरु इस शिर्किया काम की अनुमति देते हैं। और उसके पक्ष में अनुचित तर्क पेश करते हैं,और जो लोग इस बुराई को बयान करते हैं,उनहें बुरा भला कहते हैं "।{** الانتصار لحزب الله والرد على المجادل عن المشركين: ص دار إبن الجوزي- الدمام **पृष्ठ संख्या:40}**

**उनचासवाँ कारण: और ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करना इस दृष्टि से भी अवैध है कि क़ब्रों की पुजा,उसकी प्रतिष्ठा,मान सम्मान और उसके समक्ष शिश नवाने से मुसलमानों पर धरती की आबादी से संबंधित महत्वपूर्ण बातों में बुरा प्रभाव पड़ता है। और इसी बात का आदेश अल्लाह तआला ने अपने फरमान में दिया है:"उसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया,और उसमें तुम को बसा दिया"।{सुरह हूद;61},और दुसरे स्थान पर फरमाया:" वही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को वशवर्ती बनाया,तो चलो फिरो उसके क्षेत्रों में तथा खाओ उसकी प्रदान की हुई जीविका। और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित होकर जाना है "।{ सुरह मुल्क; 15}**

**और इस कारण का विवरण यह है कि कुछ समाज में जहाँ ग़ैरुल्लाह से संबंध स्थापित करने का वातावरण है वहाँ पर उपचार से संबंधित शिक्षा ग्रहण करने की मानसिकता बहुत ही कम है,क्योंकि वह लोग समझते हैं**

कि वास्तविक उपचार मृतकों के हाथ में है,और इसी लिए मृतकों की निकटता प्राप्त करने के लिए वह चीज़ें प्रस्तुत करते हैं जो केवल अल्लाह ही के लिए ख़ास हैं,अतः उन से दुआएं करते हैं,उनके लिए ज़बह करते हैं,और नज़र व न्याज़ पेश करते हैं । और इस विषय में एक शोधकर्ता अली ज़हरानी कहते हैं:" और इसी तरह लोग मुर्दों की सेवा की ओर केन्द्रित हो गये,उन की क़ब्रें बना  करके,और उन पर गुंबद बना कर। और उस में परिश्रम और दौलत ख़ूब खर्च किये। और यह सब कुछ ज़िनदों के शिक्षण-प्रशिक्षण के नाम पर,उनके लिए खुशहाल जीवन के साधन प्रदान करने के नाम पर और उस क़ौम को मज़बूत तथा सुदृढ़ करने के नाम पर हुआ जिस का दुश्मन बाहर उस के लिए घात में बैठा है"।{ अल इनहराफात अल अक़दीया; पृष्ठ संख्या: 310} बल्कि आस्था से संबंधित इस खतरनाक गुमराही और पथभ्रष्ट विचार ने बीते शताब्दी में लोगों को सलीबी युद्ध के हाथों प्राजित करा दिया,क्योंकि शहर वाले अपने शहर की रक्षा हेतु मुर्दों पर विशवास करते थे। अतः अल्लाह ने उनको मुर्दों ही के सुपुर्द कर दिया। और उसका एक उदाहरण यह भी है कि जब अंग्रेजों ने भांप लिया कि सूफ़ीवाद और क़ब्र पुजा का विचार लोगों के दिमाग़ को फेरने ,अंग्रेज़ों के संग युद्ध से रोकने, यहाँ तक कि भरोसा,भविष्य पर विश्वास, दुनिया से दुरी,जीवन की रंगीनियों से पृथकता और दुनिया से बचने के नाम पर अंग्रेज़ों के साथ हस्तक्षेप नहीं करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है,तो क़बुरी विचार को सुदृढ़ करने के लिए उनहोंने यथासंभव प्रयास किया,ताकि मुसलमान धरती पर पस्त पड़ जायें,और अजनबी शासन की दासता से हर्षित तथा प्रसन्न हों ",और

इसी कारण मिस्र इत्यादि क्षेत्रों में ज़बरदस्ती भूमि ग्रहण करने वाले लोगों की यह  इच्छा रही कि तसव्वुफ़ के मार्ग पर चलने वालों को बिल्कुल स्वतंत्र छोड़ दिया जाये,ताकि वह अपनी बुरी आस्था पर अमल करते रहें। और देश के आंतरिक विभाग पर इन ग़ासिबो और ज़ालिमों के आधिपत्य और क़ब्ज़ा ने अधिक योगदान दिया,जो आगे चलकर इन्हें सक्षम बना दिया कि उन मार्गों पर कब्जा जमायें, उन की गतिविधियों की जानकारी रखें,उनके तौर-तरीके को पहचानें और उन सुफीयों को उस दिशा में ले जायें जहाँ इन ज़ालिमों की ज्यादह से ज्यादह सेवा संभव हो। अतः इन अत्याचारियों ने शहरों में सुफी सिद्धान्तों को अपनाया जिस ने इनके शासन को सारी जगहों पर फैला दिया "।{अत्तसव्वुफ बैनल हक़्क़ वल ख़ल्क़;मुहम्मद फह्द शक़्फा: 211}अतः इस तरह उस मुल्क पर शासन करना उन लोगों के लिए सरल हो गया।

और उसका एक उदाहरण फ्रांसीसियों के यहाँ भी मिलता है जिस को मिस्र का नायक मुस्तफा कमाल ने अपनी किताब " अलमस्अलतुश्शरईया "में बयान किया है। उन्होंने एक आश्चर्यजनक कहानी बयान किया है,वह कहते हैं:" ट्यूनीशिया के शहर क़ैरवान पर फ्रांसीसियों के आधिपत्य का एक  प्रसिद्ध वाक़्य है कि एक फ्रांसीसी व्यक्ति इसलाम धर्म को सवीकार किया,और अपना नाम सैयद अहमद हादी रखा,और धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने का यथासम्भव प्रयास किया,यहाँ तक कि उस में निपुणता और महारत हासिल कर ली,और क़ैरवान की किसी बड़ी मस्जिद का इमाम बन गया,जब फ्रांसीसी फ़ौज शहर से क़रीब पहुँची,तो शहर वाले शहर की रक्षा के लिए तैयार हुये,और सैयद अहमद हादी के पास कहने पहुँचे कि

मस्जिद में मदफुन शैख़ से प्रामर्श करें जिन में वह आस्था रखते थे,सैयद अहमद हादी मज़ार के भीतर प्रवेश किये,फिर उनहें भविष्य में पहुंचने वाले कष्ट से डराने लगे,और बोले: बाबा तुम लोगों को आत्मसमर्पण का उपदेश दे रहे हैं,क्योंकि शहर का प्राजित होना अनिवार्य हो गया है। उस भोली जनता ने उसकी बात मान ली, और अपने शहर की रक्षा बिल्कुल नहीं की,परिणामस्वरुप फ्रांसीसी फ़ौज शांतिपूर्वक 26/अक्तूबर,सन् 1888ई,को क़ैरवान में प्रवेश कर गई। {अत्तसव्वुफ बैनल हक़्क़ वल बातिल;211}

और शैख़ अबदुल अज़ीज़ बिन फैसल अर्राजही ने कहा:" बीते शताब्दी में सलीबी ईसाईयों ने इन बुराइयों को फैलाने का यथासम्भव प्रयास किया,और लोगों को उनके धर्म से विमुख करके मुर्ति पुजा की ओर मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई,और मुल्क के बाशिंदों के प्रति उनका जो दायित्व था उस से उनहें गाफ़िल कर दिये,क़ब्रों के पास किये जाने वाले खुराफात को उनकी निगाहों में अच्छा बना कर।यहाँ तक कि जज़ाएर के कुछ लोगों ने मुझे बतलाया कि जब फ्रांसीसी लोग जज़ाएर पर अपना आधिपत्य स्थापित किये तो कुछ क़ब्रों और मज़ारों का सहारा लिया जिन में मदफुन लोगों की नेकी और ईमानदारी चर्चा का विषय बनी हुई थी।अतः वह लोग लोगों को क़ब्रों पर एकत्रित करते थे,फिर उस की ओर तोप का निशाना लगाते थे,यह प्रदर्शित करते हुए कि वह उन मज़ारों को धवस्त करना चाहते हैं ,हालांकि तोप ख़ाली होता था- उद्देश्य केवल धोखा देना था- फिर तोप दाग़ते थे, अतः तोप की आवाज़ गूंजती थी,और लोगों को ऐसा गुमान होता था कि मज़ार पर आक्रमण किया गया

है,हालांकि जब वह  मज़ार की ओर देखते थे तो वह अपने स्थान पर बाक़ी रहता था,इस तरह लोगों का संबंध मज़ार से और सुदृढ़ हो जाता था और उन की आस्था में बृद्धि होती थी।

शैख़ अहमद बिन हसन बाक़ुरी मिस्री अज़हरी (मृत्यु 1405 हिजरी)ने क़ब्रों की सजावट,उस पर गुंबद बनाने,और मस्जिद के निर्माण के हराम होने के विषय में अपने एक फतवा में ज़िक्र किया है कि पूरब के किसी बड़े आदमी ने एशिया में नई बस्तियों के कुछ शैलियों के बारे में बतलाया। अतः उसने वाक्य को व्यक्त करते हुए कहा कि साम्राज्यवादी लोग हिन्दुस्तान से चौड़ी सड़कों के रास्ते बगदाद की ओर आने वाले व्यापारियों को रोक कर एक नये मार्ग पर चलाना चाहते थे,जहाँ उनके उद्देश्य की पूर्ति होती नज़र आती थी,उनका यथासंभव प्रयास होता था कि क़ाफिला पुरानी दिशा के बजाय नई दिशा की ओर अग्रसर हो, लेकिन इस में वह असफल रहते, यहाँ तक कि उन्हें  एक ऐसा बहाना मिल गया जिसने उस क़ाफिले को अपनी दिशा बदल कर एक नई दिशा की ओर चलने पर तैयार कर दिया,और वह यह कि उन साम्राज्यवादी लोगों ने उस नये मार्ग पर जहाँ वह क़ाफिला को मोड़ना चाहते थे,जगह जगह मज़ारों और गुंबदों का निर्माण करवा दिया,फिर यह अफ़वाह फैलाया कि उन मज़ारों में नेक औलिया हैं,और यह कि उनकी ऐसी और ऐसी करामतें देखी गई हैं। फिर यह अफ़वाह चारों ओर फैल गया, हर बस्ती और शहर में यह ख़बर फैल गई, अतः उन मार्गों पर भीड़ लग गई और आबादी क़ायम होगई ।

इस कथा को अल्लामा अल्बानी ने वर्णित किया है और उसे अल्लामा बाक़ुरी से संबंधित किया है,जैसा कि " तहज़ीरुस्साजिद " पृष्ठ संख्या 138-139 में उपस्थित है।

और उन दरवेशों ने उन आक्रमणकारी साम्राज्यवादीयों को ढेर सारे उपहारों से नवाज़ा,अतः यह दरवेश साम्राज्यवादीयों के अस्तित्व का धार्मिक दृष्टि से महत्व बयान करते थे,और मुल्क में उनकी उपस्थित को उचित और लाभदायक बतलाते थे,ताकि लोगों के लिए उन की उपस्थिति का महत्व स्पष्ट हो जाये।बल्कि बात यहाँ तक पहुंच गई थी कि मिस्र के कुछ सुफी जन 1919 ई के इनकलाब में लोगों का हस्ताक्षर कराने लगे जिस में यह अनुरोध किया गया था कि मिस्र में अंग्रेजों को रहने दिया जाए। और उन सन्यासियों में मुहम्मद बिन इब्राहीम जमल भी थे जो सुफीयों के सरदार माने जाते हैं।

उपरोक्त बातों का सारांश यह है कि कब्रों और मज़ारों को मान सम्मान और अनुचित प्रतिष्ठा देना ही सबसे बड़ा कारण था मुसलमानों के शत्रुओं के अधिन आने का,और यही चीज़ कई शताब्दी तक धरती को इस्लाम से ख़ाली होने का कारण बनी रही। बस अल्लाह ही से सहायता की विनती है।

पचासवॉ कारण:

उन लोगों का तर्क और आधार जो ग़ैरुल्लाह की भक्ति,पुजा और इबादत करते हैं पुर्ण रूप से या तो शक व संदेह वाली बातों पर आधारित है,जैसे

झूठी हदीसें और मंघडण्त बातें। या फिर दार्शनिक तुकबंदी और अक़ली शूबहात पर आधारित है,या फिर तुच्छ अनुभवों पर,या फिर क़िस्सों और कहानियों पर,या फिर ख़्वाबों व स्वप्नों पर। और इन तमाम चीजों पर न धर्म के उसुल में न उसके फुरूअ में भरोसा किया जा सकता है। अल्लामा इब्ने तैमिया का कहना है:" यह पथभ्रष्ट लोग ईसाई मुशरिकों के समान हैं,उनका तर्क या तो कमज़ोर हदीसें हैं, या गढ़ी हुई, या फिर ऐसे लोगों से वर्णित की हुई जिन की बातों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। या तो उन लोगों पर झूठ बांधी जाती है,या फिर उनकी ग़लत बातें बयान की जाती हैं। और यह अविश्वसनीय बात है एक ऐसे व्यक्ति की ओर से जिस से झूठ भी संभव है। और यदि वह नबी स• से सिद्ध किसी बात का वर्णन करते हैं तो उसके अर्थ को उसके उचित स्थान से फेर देते हैं,और संदेह वाली बातों को पकड़ लेते हैं,और स्पष्ट बातों को छोड़ देते हैं,जैसा कि ईसाईयों का व्यवहार था। {अल इस्तगासह फिर्रद्दे अलल बिक्री; 2/587}

लेखक का कहना है,अल्लाह उनहें क्षमा प्रदान करे:" नबी स• पर गढ़ी गई हदीसों में यह हदीस भी है:(जब तुम्हारे साथ कोई कठिनाई उतपन्न हो तो क़ब्र वालों से सहायता की प्रार्थना करो), इस हदीस को इब्ने कमाल बाशा ने अपनी किताब " अल अरबईन " में बयान किया है,हदीस संख्या तीन है।

और दुसरे शब्दों में वर्णित है: जब परेशानियां तुम्हें थका दें तो क़ब्र वालों से निकटता बना लो।

और इन शब्दों में भी वर्णित है: क़ब्र वालों से सहायता की गुहार लगओ।

अल्लामा इब्ने तैमिया ने " अत्तवस्सुल वल वसीला " भाग संखया २पृष्ठ संख्या २९७ में कहा है:" यह हदीस नबी स॰ पर गढ़ा गया झूठ है,और हदीस- शिक्षा में पारंगत व्यक्ति इस के झूठ होने पर सहमत हैं। शिक्षित लोगों में से किसी ने भी उसे वर्णित नहीं किया है।और हदीस की किसी भी विश्वसनीय पुस्तक में इस का उल्लेख नहीं है"। अल्लामा इब्ने तैमिया की बात पुरी हुई।

लेखक का कहना है:" और इसी प्रकार यह हदीस:(यदि तुम में से कोई अपना विश्वास पत्थर पर भी बहाल कर ले,तो अल्लाह उस पत्थर के माध्यम से उसे लाभ पहुंचायेगा " बिल्कुल झूठी है, इस की कोई वास्तविकता नहीं है। और " मजमुउल फतावा " भाग २४पृष्ठ संख्या ३३५ में इब्ने तैमिया ने उस पर मौज़ु (गढ़ी हुई) होने का हुक्म लगाया है। और दूसरे स्थान पर कहा है: और वह हदीस जिसे कुछ झुठे लोग बयान करते हैं:( यदि तुम में से कोई अपनी आस्था किसी पत्थर के साथ अच्छी रखे,तो अल्लाह उस पत्थर के माध्यम से उसे लाभ प्रदान करता है),बिल्कुल झूठ है और विद्वान लोग उसके झूठ होने पर सहमत हैं। और वास्तव में यह उन मुर्तीपुजकों की बात है जो पत्थरों और मूर्तियों के साथ अच्छा गुमान रखते हैं। और अल्लाह तआला का फरमान है:" निश्चय तुम सब तथा वह जिन की तुम पुजा करते हो अल्लाह के अतिरिक्त नरक के ईंधन हैं,तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो"।{सुरह अंबिया: 98} और दुसरे स्थान पर फरमाया:"तो तुम उस अग्नी से बचो जिस का

ईंधन मानवता तथा पत्थर होंगे "।{सुरह बक़रह;24},और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा:" जब उसने कहा अपने पिता से: हे मेरे प्रिय पिता! क्युं आप उसे पूजते हैं, जो न सुनता है और न देखता है, और न आप के कुछ काम आता है "।{ सुरह मरयम;43},और अल्लाह तआला ने बछड़ा पूजने वालों के विषय में कहा :" क्या उनहोंने यह नहीं सोचा कि न तो वह उनसे बात करता है और न किसी प्रकार का मार्गदर्शन देता है"। {सुरह आराफ;148},और अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के विषय में कहा है कि उनहोंने अपनी जाति के लोगों से कहा:" यह प्रतिमाएं कैसी हैं जिन की पुजा में तुम लगे हुए हो?{सुरह अंबिया;52} अतः उन मुशरिकों ने पत्थरों पर अपना विश्वास जताया,उनके प्रति अच्छा गुमान रखा, और इस का परिणाम यह है कि वह सदैव के लिए नरक में रहेंगे। और सत्य यह है कि गुलाम अपने पालनहार के साथ अच्छा गुमान रखता है--- सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर रज• से वर्णित है कि नबी स• ने कहा:(तुम में से किसी आदमी की मृत्यु न हो,परंतु उस स्थिति में कि वह अल्लाह से अच्छा गुमान रखता हो){मुस्लिम शरीफ़;2877}अल्लामा इब्ने तैमिया की बात पुरी हुई।{जामिउल मसाइल लि शैखिल इसलाम इब्ने तैमिया; अलमजमुअ तुल खामिसा, पृष्ठ संख्या, 104- 106}

और अल्लामा इब्ने क़ैयिम रह • ने क़ब्रों से उत्पन्न फितनों के कारणों का उल्लेख करते हुए कहा है:" और फितनों के उन कारणों में से एक गढ़ी गई झूठी हदीसें भी हैं जिन्हें क़ब्रों के पुजारियों और उन्ही जैसे लोगों ने नबी स• पर गढ़ा है। यह हदीसें अल्लाह के रसूल और उनकी लाई हुई

शरीयत के विपरीत हैं,जैसे यह हदीस:(जब तुम्हें परेशानियां थका दें तो क़ब्र वालों से सहायता की गुहार लगओ) ,और इसी प्रकार यह हदीस :(यदि तुम में से कोई भी किसी पत्थर के साथ अच्छा गुमान रखता है,तो वह लाभदायक सिद्ध होगा),और इसी प्रकार की अन्य हदीसें जो इसलाम धर्म के विपरीत हैं जिन्हें मुशरिकों ने गढ़ा है। और यह झूठी हदीसें उन्ही जैसे अशिक्षित और अज्ञानियों के बीच फैल गईं। और अल्लाह तआला ने अपने रसूल को उन्हीं लोगों की हत्या के लिए अवतरित किया था जिन्हों ने पत्थरों के साथ आस्था बना रखा था,और अपनी उम्मत को आप स• ने हर प्रकार से क़ब्रों के फितनों से बचाया।{ इग़ासतुल्लहफान; ३८७-३८८}

और इसी प्रकार मौज़ु हदीसों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा:" और हदीस: ( यदि तुम में से कोई किसी पत्थर के साथ अच्छा गुमान रखे,तो वह पत्थर उसे लाभ प्रदान करेगा "),मुशरिक लोगों और कब्रों के पुजारियों की गढ़ी हुई हदीसों में से है"।{नकदुल मनक़ुल वल महकुल मुमैयज़ बैनल मरदुदि वल मक़बूल; पृष्ठ संख्या; १३२}

और इब्ने हजर अस्क़लानी ने कहा है:" इस हदीस की कोई वास्तविकता नहीं है"।{ मुल्ला अली क़ारी ने ( अल असरारुल मरफुआ फिल अख़बारिल मौज़ुआ) में इस का उल्लेख किया है। और यह (अल मौज़ुआतुल कुबरा) से प्रसिद्ध है। पृष्ठ संख्या ३७६ है और मुहम्मद बिन लुतफी सब्बाग की तहकीक है। अल मकतबुल इस्लामी से प्रकाशित है}

और शैख़ अल्बानी ने कहा है:" मौज़ु है"।{अस्सिलसिलतुस्सहीहह ४५०} और इसी प्रकार शैख़ मरआ अल करमी अपनी किताब ( अल फवाइदुल मौज़ुआ फिल अहादीसिल मौज़ुआ,पृष्ठ संख्या,१८८,अबदुल वह्हाब अबदुल लतीफ़ की तहकीक के साथ) में,और फुत्तनी ने अपनी किताब ( तज़किरतुल मौज़ुआ;पृष्ठ संख्या,२८),और इसी प्रकार अज़हरी अपनी किताब ( तहज़ीरुल मुस्लिमिन मिनल अहादीसिल मौज़ुआ अला सैयिदिल मुरसलीन,पृष्ठ संख्या;१२८) में उल्लेख किया है। और इसी प्रकार अल्लामा सख़ावी ने ( अलमक़ासिदुल हसनह, पृष्ठ संख्या; ८८३,मुहम्मद उस्मान अल खिश्त के संशोधन के साथ) में, और मुल्ला अली क़ारी ने अपने ( मौज़ुआत, पृष्ठ संख्या; ३८६),और अजलुनी की ( कशफुल ग़िताअ; पृष्ठ संख्या, २०८७ )में वर्णित किया है।

उपरोक्त बातों का सारांश और परिणाम यह है कि यह हदीस हदीस की किसी भी विश्वसनीय पुस्तक में वर्णित नहीं है,बल्कि उस की कोई सनद भी नहीं है। यह केवल क़ब्र के पुजारियों तथा उनकी संतान और बालकों की ज़बानों पर घूमती रही,और एक नस्ल के पश्चात दुसरी नस्ल तथा एक शताब्दी के पश्चात् दुसरी शताब्दी में चर्चित रही। और वास्तविकता तो यह है कि यह हदीस नबी स• पर गढ़ी गई एक झूठी हदीस है।

फिर यह और इसके अर्थ में उपस्थित अन्य हदीसें धर्म के स्तंभ तथा उसकी वास्तविकता के बिल्कुल विपरीत हैं,क्युंकि दीन के प्रति भली भांति सबको पता है कि उसका असल अल्लाह की इबादत तथा ग़ैरुल्लाह की भक्ति से दुरी पर आधारित है।

और यह भी स्पष्ट रहे  कि उपरोक्त झूठी हदीसों के अतिरिक्त ग़ैरुल्लाह की भक्ति, उस की पुजा तथा उन से प्रार्थना के प्रसंग में अन्य हदीसें भी प्रस्तुत की जाती हैं, लेकिन उन सब के वर्णन का यहाँ स्थान नहीं है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक स्थिति में उन पुज्यों से बचा जाए,कयोंकि हर वह चीज़ जो दीन के किसी भी उसुल का विरोध करती हो वह वास्तव में नबी स• पर गढ़ी गई एक झूठी हदीस है,और सत्य यह है कि अल्लाह के दीन में कोई विरोधाभास नहीं है।

## इक्यावनवाँ और अंतिम कारण:

और ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करना इस दृष्टि से भी अवैध है कि ऐसा करने वाला अल्लाह की ओर केन्द्रित होने से अल्लाह जो प्रसन्न होता है,उस प्रसन्नता से स्वयं को वंचित कर लेता हैअल्लाह की ओर झुकने से जो आनन्द प्राप्त होता है उस आनन्द से स्वयं को दूर कर लेता है,और अल्लाह से प्रार्थना करने से जिस ख़ुशी का आभास होता है उस से खुद को महरुम कर लेता है। और इतनी बड़ी ख़ुशी को अपने ही जैसे मख़लुक की दासता और उसकी भक्ति से बदल लेता है,जिस के पास कोई भी शक्ति तथा लाभ नहीं है,और न वह उसको अल्लाह तआला के क़रीब करने की क्षमता रखते हैं। और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि अल्लाह तआला अपने बंदे से जब वह उसकी ओर केन्द्रित होता है,तो बहुत हर्षित होता है,यद्यपि उसके गुनाह आकाश की चोटी को ही क्युं न छुता हो। अल्लाह तआला ने एक क़ूदसी हदीस में जिस को हज़रत अबु हुरैरह रज़• ने रिवायत किया है, कहता है:" मैं अपने बंदे के पास अपने साथ गुमान के

अनुसार होता हूँ,और मैं उस के साथ होता हूँ जब वह मेरा स्मरण करता है,यदि वह अपने हृदय में याद करता है तो मैं भी उसे हृदय में याद करता हूँ। और यदि वह मुझे सभा में याद करता है तो मैं भी उसे उस से उत्तम सभा में याद करता हूँ। और यदि वह मेरे निकट एक इंच आता है,तो मैं उसके निकट एक हाथ आता हूँ,और यदि वह मुझ से एक हाथ निकट आता है,तो मैं उस से दो हाथ निकट आता हूँ। और यदि वह मेरे पास चलकर आता है, तो मैं उसके पास दौड़ कर आता हूँ"।{बुख़ारी शरीफ़; ७४०५- मुस्लिम शरीफ़; २६७५}

ऊपर वर्णित पुस्तकीय तथा दार्शनिक तर्कों के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि ग़ैरुल्लाह से प्रार्थना करना तथा उनकी पुजा एवं भक्ति करना अवैध है,और सबसे बड़ा शिर्क है जिस के कारण आदमी इसलाम की सीमा से निष्कासित हो जाता है ।और उसका करने वाला यहूदी,ईसाई तथा मुर्तीपुजकों के समान होता है, चाहे वह नमाज़ अदा करे, रोज़ा रखे और कल्पना करे कि वह मुस्लिम है।

अल्लाह की प्रशंसा और उसकी सहायता से यह किताब (ग़ैरुल्लाह से दुआ की त्रुटि पर पचास तर्कें) पूर्ण हुई। अल्लाह तआला इस के माध्यम से इसके लेखक, इसके अध्ययनकर्ता,और इस के प्रकाशक को लाभ प्रदान करे, और अल्लाह ही बड़ा ज्ञानी है। और दरुद हो हमारे संदेष्टा मुहम्मद साहब पर, आप की संतान पर और आपके समस्त साथियों पर, और ढेर सारा सलाम हो। अल्लाह की तौफ़ीक़ से किताब पुरी हुई।

## महत्वपूर्ण पुस्तकें जिन से अध्ययन किया गया:

१- अल किताबुल मुसन्नफ फिल हदीसि वल आसार,अब्दुल्लाह इब्ने अबी शैबा,तहकीक मुहम्मद बिन अब्दुस्सलाम बिन शाहीन,प्रकाशक: मकतबा दारुल बाज़- मक्का

२- अलमुन्तख़ब मिम मुस्नदि अब्द इब्न हुमैद, तहकीक मुस्तफा अदवी, प्रकाशक: दारे बलंसिया- रियाज़

३- दलाइलुन्नबूव्वत, अहमद बिन हुसैन बैहक़ी, तहकीक डॉ॰ अबदुल मूअती अमीन क़लअजी, प्रकाशक: दारुल कुतुबल इल्मिया ,बैरुत, द्वितीय प्रकाशन

४- अस्सहीह अलमुस्नद मिम्मा लैस् फिस्सहीहैन, मुक़बिल बिन हादी अलवादई, प्रकाशक: दारुल आसार- सनआ, सन् १४२६ हिजरी।

५-अर्रद्दु अलल इख़नाई, इब्ने तैमिया, तहकीक अहमद बिन मुसा अंज़ी, प्रकाशक: दारुल ख़राज़- जद्दह

६- अल इस्तग़ासह फिर्रद्दे अलल बिक्री, इब्ने तैमिया, तहक़ीक अब्दुल्लाह अस्सुहैली, प्रकाशक: मदारुल वतन- रियाज़, प्रथम प्रकाशन

७- इग़ासतुल्लहफान मिम्मसाइदिश्शैतान, इब्ने क़ैयिम,तहकीक अली बिन हसन बिन, अब्दुल हमीद प्रकाशक:दार इब्ने जौज़ी- दम्माम

८- अद्दाअ व अद्दवा, इब्ने क़ैयिम,तहक़ीक अली हसन अब्दुल हमीद, प्रकाशक: दारे इब्ने जौज़ी- दम्माम, सन् १४२५ हिजरी

९- मदारिजुस्सालिकीन, इब्ने क़ैयिम,संशोधन, अबदुल अज़ीज़ बिन नासिर अल जलील, प्रकाशक: दारे तैयिबा- रियाज़

१०- अल मजमुउल मुफ़ीद फि नक़्ज़िल क़ुबुरियह व नुसरतित्तौहीद, डॉ॰मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अलख़मीस ,प्रकाशक: दारे अतलस- रियाज़

११- तासीसुत्तक़दीस फि कशफि तल्बिसि दाऊद बिन जरजीस, अब्दुल्लाह अबाबतीन, प्रकाशक: मुअस्ससतुर्रिसालह ,बैरुत

१२- अस्सैफुल मस्लुल अला आबिदिर्रसुल, अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद क़ासिम

१३- सैफुल्लाह अला मन कज़ब अला औलियाइल्लाह, सुनउल्लाह बिन सुनउल्लाह हनफी, संशोधन, अली रज़ा बिन अब्दुल्लाह बिन अली रज़ा, प्रकाशक: मदारुल वतन- रियाज़

१४- दमअतुन् अलत्तौहीद, प्रकाशक: अलमुनतदा अल इस्लामी- लंदन

१५-जुहुदु उलमाइल हनफीयह लिइब्तालि अक़ाइदिल

क़ुबुरियह, शम्सुद्दीन अफग़ानी, प्रकाशक: दारुस्समीई- रियाज़

१६-ज़ियारतुल क़ुबुर इंदल मुस्लिमिन, सालिम बिन क़तवान अल अब्दान, प्रकाशक: दारे ग़ास - कुवैत